यु॰ ओलेशा
तीन मोटे

Юрий Олеша

ТРИ ТОЛСТЯКА

На языке хинди

अनुवादक मदन लाल मधु"

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय वस्तु अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमे बडी प्रसन्नता होगी। कृपया हमे इस पते पर लिखिये

प्रगति प्रकाशन, २१, जूबोव्स्की बुलवार, मास्को, सोवियत सघ।

अनुक्रम

पहला भाग

नट तिबुल

दूसरा भाग

उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया

तीसरा भाग

सूम्रोक

चौथा भाग

हथियारसाज प्रोस्पेरो

पहला भाग

नट तिघुल

पहला अध्याय

डाक्टर गास्पर आर्नेरी दिन भर परेशान रहे

जादूगरो के जमाने लद चुके हैं। सच तो यह है कि जादूगर कभी थे ही नही। उनकी तो केवल कल्पना की गयी थी, बहुत ही छोटे छोटे बालको को सुनाने के लिये उनके बारे मे मनगढन्त कहानिया गढी गयी थी। दर असल कुछ ऐसे मदारी जरूर थे जो ऐसी होशियारी से सभी तरह के तमाशाई लोगो की आखो मे धूल झोक पाते थे कि उन्हे मन्त्र फूकने और टोने करनेवाले तथा जादूगर समझा जाता था।

कभी एक डाक्टर होते थे। उनका नाम था गास्पर आर्नेरी। भोले भाले लोग, मेले ठेले मे घुमक्कडी करनेवाले और अधकचरे विद्यार्थी उन्हे भी जादूगर मान सकते थे। वास्तव मे ये डाक्टर बडे-बडे अद्भुत काम करते थे जो सचमुच अजूबे ही लगते थे। भोले भाले लोगो का उल्लू बनानेवाले मदारियो और जादूगरो जसी उनमे कोई बात नही थी।

डाक्टर गास्पर आर्नेरी वज्ञानिक थे। उन्होने कोई सौ विद्यायें पढी थी। देश भर मे उनसे अधिक समझदार व्यक्ति, उनकी टक्कर का विद्वान नही था।

डाक्टर की विद्वत्ता की सभी में धाक थी—क्या चक्कीवालो क्या फौजियो, क्या महिलाओ और क्या मन्त्रियो में। स्कूल के बालक उनके बारे मे जो गाना गाते थे उसकी स्थायी थी—

उडकर तारो तक जो जाये।
दुम से पकड लोमडी लाये।।
जो पत्थर से भाप बनाये।
बडे करिश्मे कर दिखलाये।।
जिसके गुण का वार न पार।
अद्भुत है डाक्टर गास्पर।।

जून महीने के एक सुहाने दिन डाक्टर गास्पर ने तरह-तरह की घासें और गुबरले जमा करने के लिये लम्बी सर को जाने का इरादा बनाया।

डाक्टर गास्पर जवान न थे और आधी पानी से घबराते थे। घर से रवाना होने के पहले उन्होने गदन पर मोटा गुलूबद लपेट लिया धूल मिट्टी से आखा का बचाव करने के लिये चश्मा चढा लिया और हाथ मे छडी ले ली ताकि कही ठोकर न लग जाये। यो कहना चाहिये कि उन्होने बडी सावधानी से सैर सपाटे के लिये जाने की तयारी की।

दिन बहुत ही प्यारा था। सूरज था कि चमकता ही जा रहा था। घास ऐसी हरी हरी थी कि मुह मे पानी भर भर आता था हवा मे फूलो का पराग उड रहा था, पक्षी चहचहा रहे थे बाल नाच के फूले फूले फ्राक की तरह हल्की हल्की हवा लहरा रही थी।

दिन तो खूब बढिया है डाक्टर ने अपने आप से कहा "फिर भी बरसाती तो साथ ले ही लेनी चाहिये। गर्मी के मौसम का भरोसा ही क्या! जाने कब पानी बरसने लगे।

जरूरी आदेश देकर डाक्टर ने चश्मे को साफ किया सूटकेस से मिलता-जुलता हरे रग का थैला उठाया और चल दिये।

सर-सपाटे के लिये सबसे अच्छी जगह नगर के बाहर थी, तीन मोटो के महल के नजदीक। डाक्टर अक्सर यही जाते थे। तीन मोटो का महल बहुत बडे पार्क के बीचोंबीच था। पाक के गिर्द गहरी-गहरी खाइया थी। खाइयो के ऊपर लोहे के काले पुल बने हुए थे। इन पुलो की रक्षा करते थे महल के सतरी, पीले पखो वाली मोमजामे की काली टोपिया पहने हुए। पार्क के गिद क्षितिज को छूती हुई चरागाहे थी, जिनमे तरह-तरह के फूल खिले थे, वक्षो के झुरमुट थे और ताल-तलया थी। खूब ही जगह थी यह सैर-सपाटे के लिये। यहा तरह-तरह की घासें उगी हुई थी, बहुत ही खूबसूरत गुबरैलो का गुजार सुनाई देता था और बहुत ही प्यारे प्यारे पक्षी चहचहाते थे।

'जगह बहुत दूर है, पदल चलने से थक जाऊगा," डाक्टर ने सोचा। "नगर के छोर तक जाकर घोडा-गाडी ले लूगा और उसमे बठकर महल के पाक तक पहुच जाऊगा।"

आज नगर के छोर पर, हमेशा की तुलना मे कही अधिक लोग दिखाई दिये।

क्या आज इतवार है? डाक्टर सोच मे पड गये, "नही तो! आज तो मगलवार है।'

डाक्टर नज़दीक गये।

चौक मे लोगो की भारी भीड थी। डाक्टर को वहा दिखाई दिये हरे कफो वाली सलेटी ऊनी जाकटे पहने कुछ दस्तकार जहाज़ी, जिनके चेहरो पर मौसम की छाप अकित थी, रगीन वास्कटे डटे धनी व्यापारी, उनकी बीविया गुलाब के पौधो की शक्ल के स्कट पहने और सुराहिया, ट्रे, आइसक्रीम के डिब्बे और अगीठिया लिये हुए विक्रेता एव गलियो बाजारो मे अभिनय करनेवाले दुबले-पतले अभिनेता जो हरी पीली और अन्य रग बिरगी पोशाकें पहने थे और जो चिथडो से सिली हुई रजाइयो जैसे लगते थे। वहा बहुत ही छोटे छोटे बालक भी थे जो लाल रग के खुशमिज़ाज कुत्तो को पूछो से पकडकर घसीट रहे थे।

सभी नगर के फाटको की ओर जा रहे थे। लोहे के बने बडे बडे और मकानों के समान ऊचे फाटक बन्द थे।

फाटक क्यो बन्द ह?' डाक्टर को हैरानी हुई।

लोग शोर मचा रहे थे ऊचे ऊचे बाते कर रहे थे, चीख चिल्ला और भला-बुरा कह रहे थे। मगर किसलिये? यह समझ पाना सम्भव नही था। डाक्टर एक जवान औरत के पास गये जो अपने हाथो मे मोटी-सी भूरी बिल्ली उठाये थी। उन्होने पूछा—

"ज़रा यह बताने की कृपा कीजिये कि यह सब क्या किस्सा है? यहा इतनी भीड क्यो जमा है, लोग इतने उत्तेजित क्यो हैं और नगर के फाटक क्यो बन्द कर दिये गये ह?'

'सनिक नगर के लोगो को बाहर नही जाने देते "

'सो क्यो?"

ताकि वे उनकी मदद न कर सकें जो पहले ही निकलकर तीन मोटो के महल की ओर जा चुके ह।"

श्रीमती जी क्षमा कीजिये, मगर बात मेरी समझ में आई नही "

हे भगवान! क्या आपको यह भी नही मालूम कि आज हथियारसाज़ प्रोस्पेरो और नट तिबुल लोगो को लेकर गये ह कि हल्ला बोलकर तीन मोटो के महल पर कब्ज़ा कर लिया जाये?

'हथियारसाज़ प्रोस्पेरो?"

'हा, हा चारदीवारी तो बहुत ऊची है और फाटक के पीछे बैठे ह निशानेबाज सैनिक। अब कोई भी तो नगर से बाहर नही जा पाता और जो लोग हथियारसाज़ के साथ गये ह, उन्हे महल के सनिक मार डालेगे।'

और सचमुच ही, बहुत दूर से गोलिया दगने की कुछ हल्की-सी आवाज़ें सुनाई दी।

औरत के हाथ से मोटी बिल्ली छूट गई। वह गुधे हुए आटे की तरह नीचे जा गिरी। भीड ज़ोर से चीख उठी।

इसका मतलब यह है कि एक बहुत बडी घटना घट गयी और मुझे उसका पता तक नही लगा डाक्टर ने सोचा। हा म तो महीने भर से अपने कमरे मे ही ब द रहा हू। बाहर निकला ही नही, वही काम करता रहा। मुझे तो दीन दुनिया की खबर ही नही रही '

इसी समय, कुछ और दूरी पर, कई बार तोप की धाय धाय सुनाई दी। तोप का धडाका गद की तरह हवा मे उछला और वातावरण मे झूल-सा गया। न केवल डाक्टर ही काप उठे और कुछ कदम पीछे हट गये, बल्कि भीड मे जमा सभी लोगो के दिल भी दहल उठ और वे इधर उधर बिखर गये। बच्चे रोने लगे, कबूतर ज़ोर ज़ोर से पख फडफडाते हुए उडने लगे और कुत्ते बठकर हूकने लगे।

तोप की धाय धाय ज़ोर पकडती गयी। ऐसा शोर मच गया कि बयान से बाहर। लोगो की भीड फाटक के और नज़दीक जाकर चिल्लाने लगी—

"प्रोस्पेरो! प्रोस्पेरो!'

"तीन मोटे मुर्दाबाद!"

डाक्टर गास्पर के तो होश हवा हो गये। लोगो ने उन्हें पहचान लिया, क्योकि बहुत से उन्हे जानते थे। कुछ लोग तो उनकी ओर भागे मानो डाक्टर उनकी रक्षा कर सकते हो। मगर डाक्टर तो ख ुद जसे-तैसे अपने आसुओ पर काबू पा रहे थे।

जाने वहां क्या हो रहा है? कैसे मालूम किया जाये कि वहा फाटको के पीछ क्या हो रहा है? मुमकिन है कि लोग जीत जायें? मगर यह भी हो सकता है कि उन सबको मौत के घाट उतार दिया गया हो!"

इसी समय कोई दसेक व्यक्ति उस चौक की ओर दौडे, जहा तग-सी तीन गलिया मिलती थी। वहा नुक्कड पर पुराने और ऊचे बुजवाला एक मकान था। औरो के साथ-साथ डाक्टर ने भी बुज पर चढने का इरादा बना लिया। नीचे की मज़िल पर ग़ुसलखाने से मिलती-जुलती लाड्डी थी। वहा तहखाने के समान अधेरा था। ऊपर जाने के लिये चक्कर दार ज़ीना था। छोटी छोटी खिडकियो से रोशनी आ रही थी, मगर बहुत ही कम। सभी लोग बहुत ही धीरे धीरे और मुश्किल से ऊपर चढ़ रहे थे। ऐसा इसलिये भी था कि ज़ीना खस्ताहाल था और रेलिग भी टूटी फूटी थी। इस बात की कल्पना तो की ही जा सकती है कि डाक्टर गास्पर के लिये सबसे ऊपरवाली मज़िल पर पहुचना कितना कठिन था। खैर तो वे अभी बीसवी पैडी पर ही पहुचे थे कि अधेरे मे चीख उठे—

' हाय, मेरा दिल निकला जाता है और मेरे जूते की एक एडी टूट गई!"

डाक्टर अपनी बरसाती तो तोप के दसवी बार गरजने के बाद चौक मे ही खो बठे थे।

बुज के ऊपर पत्थरो की मुडेर से घिरी हुई चौडी-सी छत थी। यहा से कम से कम पचास किलोमीटर तक का दृश्य दिखाई दे रहा था। दृश्य बेशक रमणीक था मगर उसपर मुग्ध होने, उसे सराहने की फुसत ही कहा थी। सभी की नजर उधर लगी हुई थी जहा लडाई हो रही थी।

मेरे पास दूरबीन है। म हमेशा आठ शीशो वाली दूरबीन अपने पास रखता हू। यह लो!' डाक्टर ने कहा और पेटी खोलकर दूरबीन लोगो की ओर बढाई।

सभी लोग एक एक करके दूरबीन मे से देखने लगे।

डाक्टर गास्पर को हरे भरे खुले मदान मे बहुत-से लोग दिखाई दिये। वे नगर की ओर भागे आ रहे थे, सिर पर पर रखकर। दूर से वे रग बिरगे झण्डो जसे प्रतीत हो रहे थे। घुडसवार सैनिक उनका पीछा कर रहे थे।

डाक्टर गास्पर को यह सारा दृश्य मायादीप के एक चित्र जसा प्रतीत हुआ। सूरज खूब चमक रहा था हरियाली चमचमा रही थी। गोले रूई के टुकडो की तरह फटते और घडी भर के लिये उनकी चमक ऐसे कौंधती मानो कोई दपण द्वारा सूय की किरण को प्रतिबिम्बित कर रहा हो। घाडे पिछली टागो पर खडे होते थे और लट्टू की तरह घूमते थे। तीन मोटो का पाक और महल सफेद और पारदर्शी धुए की जाली मे लिपटे हुए थे।

वे भाग रहे ह!'

'वे भागे आ रहे ह लोग हार गये!'

भागे आ रहे लोग नगर के करीब पहुचते जा रहे थे। बहुत से लोग रास्ते में ही गिर पडे थे। ऐसा लगता था मानो घास पर रग बिरगे चिथडे बिखरा दिये गये हो।

एक गोला दनदनाता हुआ चौक के ऊपर से गुजरा।

कोई बुरी तरह डर गया और उसने दूरबीन नीचे गिरा दी।

गोला फटा और छत पर खडे लोग बुर्ज से नीचे भाग चले।

इनमें एक तालासाज भी था। उसका चमडे का पेशबन्द किसी हुक में अटक गया। उसने मुडकर देखा उसे कोई भयानक दृश्य दिखाई दिया और वह गला फाडकर चिल्ला उठा—

भागो! उन्होने हथियारसाज प्रोस्पेरो को पकड लिया! वे अब नगर मे आये कि आये!"

चौक मे खलबली मच गयी।

लोग झटपट फाटको से दूर हट गये और चौक से गलियों की ओर भाग चले। गोलियो की ठा ठा से सभी के कानो के पर्दे फटने लगे।

डाक्टर गास्पर और दो अन्य व्यक्ति बुर्ज की तीसरी मंजिल पर ही रुक गये। वे मोटी दीवार में बनी हुई छोटी-सी खिड़की में से झांकने लगे।

खिड़की इतनी छोटी थी कि केवल एक व्यक्ति ही ढंग से बाहर देख सकता था। बाकियों को तो ज़रा-सी झलक ही मिल सकती थी।

डाक्टर भी झलक ही पा रहे थे। मगर वह झलक भी काफी भयानक थी।

लोहे के बड़े-बड़े फाटक पूरी तरह खोल दिये गये थे। लगभग तीन सौ व्यक्ति इन फाटकों से एकदम बाहर आये। ये हरे कफों वाली सलेटी ऊनी जाकटें पहने हुए दस्तकार थे। खून से लथ पथ ये लोग जमीन पर गिरते जा रहे थे।

सैनिकों के घोड़े इनके सिरों पर चढ़े आ रहे थे। सैनिक तलवारों से वार कर रहे थे, गोलियां दाग रहे थे। उनकी मोमजामे की चमकती हुई काली टोपियों में लगे पीले पंख लहरा रहे थे। घोड़े अपने लाल लाल मुंह खोलते थे जिनमें से झाग निकल रहा था और वे अपने दीदे इधर-उधर घुमा रहे थे।

'वह देखिये! उधर देखिये! वह रहा प्रोस्पेरो!" डाक्टर चिल्लाये।

हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को रस्से से बांधकर घसीटा जा रहा था। वह कुछ कदम चलता गिर पड़ता और फिर उठता। उसके लाल बाल उलझे उलझाये

हुए थे चेहरा खून से लथपथ था और उसके गले में मोटे रस्से का फदा पडा हुआ था।

प्रोस्पेरो! बदी बना लिया गया! डाक्टर चिल्लाये।

इसी समय एक गोला लाट्री पर आकर गिरा। बुज झुका, झूल सा गया, घडी भर के लिये टेढे रुख सम्भला रहा और फिर धडाम से नीचे जा गिरा।

डाक्टर भी कलाबाजिया खाते हुए नीचे जा पहुचे और अपने बूट की दूसरी एडी, छडी थैले और चश्मे से हाथ धो बठे।

दूसरा अध्याय

जल्लादो के दस तख्ते

डाक्टर नीचे तो जा गिरे कलाबाजिया खाते हुए मगर कुशल ही रही। उनका सिर भी नही फटा और टागें भी सही-सलामत रही। मगर इससे क्या! बेशक हड्डी-पसली सलामत रही, फिर भी गिरते हुए बुज के साथ नीचे जा गिरने मे तो कोई मजा नहीं हो सकता, खास तौर पर डाक्टर जैसे व्यक्ति के लिये, जो जवानी की मजिल लाघकर बुढापे में कदम रख चुका हो। डर से ही डाक्टर बेहोश हो गये।

जब उन्हे होश आया तो शाम हो चुकी थी। डाक्टर ने अपने इदगिद नजर डाली—

ओह, क्या मुसीबत है! जाहिर है कि ऐनक तो चूरचूर हो गयी। ऐनक के बिना मुझे सम्भवत ऐसा ही नजर आता है जैसा कि अच्छी नजरवाले व्यक्ति को उस समय जब वह ऐनक चढ़ा लेता है। यह तो बहुत बुरी बात है।"

इसके बाद वह टूटी हुई एडियो के बारे मे बडबडाते रहे—

"मेरा तो वसे ही कद छोटा है और अब एक इच और छोटा हो जाऊगा। या शायद दो इच, क्योकि दोनो एडिया टूट गयी ह। नही, नही, केवल एक इच ही "

वह मलबे के ढेर पर पडा हुआ था। लगभग पूरे का पूरा बुज गिर गया था। दीवार का लम्बा-लम्बा और पतला पतला टुकडा हड्डी की तरह बाहर को निकला हुआ था। कही बहुत दूर से सगीत की स्वरलहरी सुनाई दे रही थी। वाल्ज की दिलकश धुन हवा के पखो पर उडती हुई आती, खो जाती और फिर से सुनाई न देती। डाक्टर ने ऊपर की ओर नजर डाली। ऊपर विभिन्न दशाओ मे काली टूटी हुई कडिया लटकी हुई थी। शाम के हरे-से आकाश मे तारे झिलमिला रहे थे।

"जाने यह वाल्ज की धुन कहा से सुनाई दे रही है!" डाक्टर आश्चयचकित हुए।

बरसाती के बिना ठड महसूस होने लगी। चौक में एकदम सन्नाटा था। कराहते हुए डाक्टर पत्थरों के ढेर पर से उठे और उन्होंने किसी के बडे से बूट से ठोकर खाई। तालासाज़ एक कडी के आर पार पडा हुआ आकाश को ताक रहा था। डाक्टर ने उसे हिलाया-डुलाया। मगर तालासाज़ नही उठा। वह मर चुका था।

डाक्टर ने मृत व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करने को टोप उतारने के लिये हाथ बढाया—

ओह टोप भी गया! तो अब म क्या करू?'

डाक्टर चौक से चल दिये। सडक पर लोग पड थे। डाक्टर ने झुककर हरेक को निकट से देखा। उनकी खुली हुई फली फैली आखो मे सितारे प्रतिबिम्बित हो रहे थे। उन्होने उनके माथे छुए जो बहुत ठण्डे और रक्त से भीगे हुए थे जो रात के समय काला-काला दिखाई दे रहा था।

तो यह हुआ! यह हुआ!' डाक्टर फुसफुसाये। 'इसका मतलब है कि लोग हार गये तो अब क्या होगा?'

आधे घण्टे बाद वे वहा पहुचे जहा लोग दिखाई दिये। वे बहुत थक चुके थे, बेहद भूखे प्यासे थे। शहर के इस हिस्से मे हर दिन का सा दश्य था।

डाक्टर चौराहे पर खड थे काफी देर तक चलते रहने के बाद थोडा दम लेते हुए सोच रहे थे—

'कसी अजीब बात है! यहा रग बिरगी बत्तिया जल रही ह घोडा-गाडिया आ जा रही ह शीशों के दरवाज़े खुल और बन्द हो रहे ह। अध-गोलाकार खिडकियों मे से सुनहरी रोशनी छन रही है। वहा स्तम्भो के करीब जोडे नाच रहे ह। लोग नाच रग में डूबे हुए ह। काले-काले पानी के ऊपर रग बिरगी चीनी हाडिया घूम रही है। लोग उसी तरह से अपनी रास रग की दुनिया मे मस्त ह, जसे एक दिन पहले थे। क्या वे यह नही जानते कि आज सुबह क्या काण्ड हुआ है? क्या उन्होने गोलियो की ठाय-ठाय और लोगो की आहें कराहे नहीं सुनी? क्या उन्हे यह मालूम नही कि जन नेता हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को गिरफ्तार कर लिया गया है? हो सकता है कि ऐसा कुछ भी न हुआ हो? शायद मैंने कोई भयानक सपना देखा हो?'

सडक के नुक्कड पर एक लम्प जल रहा था और पटरी के साथ घोडा-गाडिया कतार बाधे खडी थी। मालिनें गुलाब बेच रही थी और कोचवान उनसे बाते कर रहे थे।

'उसके गले में फदा डालकर नगर भर मे से घसीटा गया। आह, बेचारा!"

अब उसे लोहे के पिजरे मे बन्द कर दिया गया है। पिजरा तीन मोटो के महल

मे रखा हुआ है,' एक मोटे कोचवान ने कहा जो हल्के नीले रग का फीतेवाला ऊचा टाप पहने था।

इसी समय एक महिला अपनी छोटी-सी बेटी के साथ मालिनो के पास फूल खरीदने के लिये आई।

किसे बन्द कर दिया गया पिजरे मे? महिला ने दिलचस्पी ली।

'हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को। सैनिको ने उसे बन्दी बना लिया है।

शुक्र है भगवान का!" महिला ने कहा।

उसकी बेटी रोने लगी।

'अरी बुद्धू, तू किसलिये रोती है? महिला को हैरानी हुई। तू हथियारसाज़ प्रोस्पेरो के लिये दुखी होती है? उसके लिये दुखी होने की जरूरत नही। वह हमारा बुरा करना चाहता था देख तो कितने सुन्दर गुलाब के फूल ह "

गुलाब के बड बडे फूल खारे से पानी और पत्तो से भरी रकाबियो मे राजहसो की भाति धीरे धीरे तैर रहे थे।

ये ल तीन गुलाब। रोने की कोई बात नहा। वे लोग विद्रोही ह। अगर उन्हे लोहे क पिजरा मे बन्द नही किया गया तो ये हमार घर बार, कपडो लत्तो और गुलाबो पर कब्जा कर लेगे और हमारे टुकडे टुकडे कर डालेगे।

इसी वक्त एक छोकरा दौडता हुआ पास स गुजरा। पहले तो उसने महिला के सितारो जड लबादे को खीचा और फिर लडकी की चोटी खीची।

अरी श्रो महारानी! लडका चिल्लाया। 'अगर हथियारसाज प्रोस्पेरो पिजरे मे बन्द है तो क्या हुआ, नट तिबुल तो आजाद है!'

ओह शतान!'

महिला ने पर पटके और उसका पम नीचे गिर गया। मालिनें ठठाकर हस पडी। मोट कोचवान ने इस शोर शराबे से फायदा उठाया और महिला से घोडा-गाडी मे बठकर चल देने का प्रस्ताव किया।

महिला और लडकी घोडा-गाडी मे बठकर चली गयी।

'अरे, जरा सुन तो कूद फाद करनवाल! एक मालिन ने लडके को पुकारा। इधर तो आ! तुझे जो कुछ मालूम है वह जरा हमे भी तो सुना

दो कोचवान अपनी ऊची सीटो से नाचे उतरे और बडे-बडे पाच कालरो वाले अपने चागो से उलझते हुए मालिनों के पास आय।

यह हुआ न चाबुक! बढ़िया चाबुक! उस लम्बे चाबुक की ओर देखते हुए लडके ने सोचा जिसे कोचवान सटकारता था। लडके का मन ऐसा चाबुक पाने के लिय ललक उठा मगर अनेक कारणवश उसके लिए ऐसा चाबुक पाना सम्भव नही था।

हा तो क्या कहा तू ने? कोचवान न भारी भरकम आवाज मे पूछा। नट तिबुल आजाद है?

ऐसा सुनने मे आया है। मं बन्दरगाह पर गया था वही ऐसा सुना '

क्या सनिको ने उसकी हत्या नही कर डाली? दूसरे कोचवान की आवाज़ भी भारी भरकम थी।

नही, बडे मिया अरी सुदरी मुझे एक गुलाब दे दे!

'ठहर रे उल्लू! पहले तू सारा किस्सा तो सुना '

'हा। तो किस्सा यह है कि शुरू मे सभी ने यह समझा कि नट तिबुल मारा गया। बाद मे जब मुर्दों मे उसे तलाश किया गया तो वह नही मिला।"

'क्या यह नही हो सकता कि उसे नहर मे फेंक दिया गया हो? कोचवान ने पूछा।

एक भिखमगा भी बातचीत मे शामिल हो गया।

किसे फेंक दिया गया हो नहर मे? उसने पूछा। 'नट तिबुल कोई बिल्ली का बच्चा थोडे ही है। उसे डुबो देना खाला जी का घर नही है। नट तिबुल जिन्दा है। बचकर भाग निकला!

'तुम झूठ बक रहे हो घनचक्कर! कोचवान ने कहा।

"नट तिबुल जिन्दा है! मालिनें खुशी से चिल्ला उठी।

छोकरे ने एक गुलाब झपटा और सिर पर पर रखकर भाग चला। गीले फूल से पानी के छीटे डाक्टर पर जा गिरे। डाक्टर ने चेहरे से आसुओ की तरह खारे छीटे पोछे और भिखमगे की वाते सुनने के लिये करीब जाकर खडे हो गये।
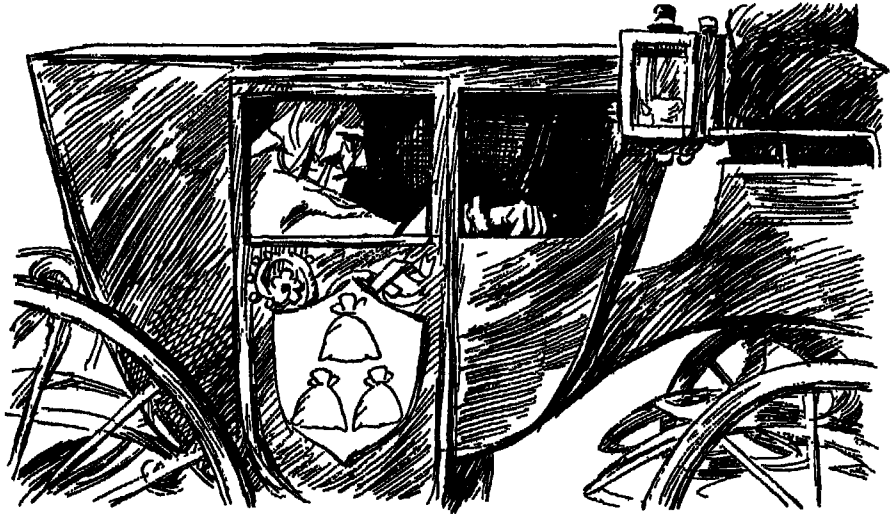
मगर इसी समय कुछ परिस्थितियो ने बातचीत मे खलल डाल दिया। सडक पर एक विचित्र सा जुलूस प्रकट हुआ। आगे आगे दो घुडसवार थे मशालें लिये हुए। मशाले दहकती हुई दाढ़ियो की तरह लहरा रही थी। उनके पीछे पीछे राज्यचिह्न वाली काली घोडा-गाडी धीरे धीरे आ रही थी।

घोडा-गाडी के पीछ पीछे चले आ रहे थे बढई। कोई एक सौ।

बढई अपनी आस्तीने ऊपर चढाये हुए, काम मे जुट जाने के लिये बिल्कुल तयार थे। वे पेशबद बाधे थे, आरे और रदे उठाये हुए तथा बगल मे औजारो के बक्से दबाये हुए थे। जुलूस के दोनों ओर सनिक थे। उनके घोड तेजी से दौडने को उतावले थे और वे उनकी लगामे खीचकर उन्हे काबू मे रख रहे थे।

यह कसा जुलूस है? यह क्या मामला है? राहगीरो ने उत्तजित होते हुए एक दूसरे से पूछा।

राज्यचिह्न वाली घोडा-गाडी मे तीन मोटो की परिषद का एक कमचारी बठा था। मालिनें डर गयी। वे गालो पर हथेलिया रखे हुए उसके सिर को ताक रही थी। उसका सिर शीशे के दरवाजे मे से नजर आ रहा था। सडक जगमग कर रही थी। काले विगवाला सिर ऐसे हिल रहा था मानो वह निर्जीव हो। ऐसा प्रतीत होता था मानो घोडा-गाडी मे आदमी नही, कोई पक्षी बैठा हो।

रास्ते से हट जाओ! सनिक चिल्लाये।

'बढई कहा जा रहे हैं? नाटी-सी मालिन ने सनिको के सरदार से पूछा।

सैनिकों का सरदार उसके चेहरे के निकट मुह करके इतने जोर से चीखा कि मालिन के बाल मानो हवा के झोके से लहरा उठे—

बढ़ई जल्लादो के तख्ते बनाने जा रहे ह। समझी? बढ़ई ऐसे दस तख्ते बनायेंगे! आ!"

मालिन के हाथ से रकाबी छूट गयी। गुलाब के फूल बिखर गये।

वे जल्लादो के तख्ते बनाने जा रहे हैं!" डाक्टर गास्पर ने भयभीत होते हुए दोहराया।

हा तख्ते!" सनिक ने घूमते और मूछो के बीच से, जो बडे-बडे जूतों जसी लगती थी, दात दिखाते हुए कहा। सभी विद्रोहियो के लिए तख्ते बनाये जायेंगे! सभी के सिर धड से अलग किये जायेंग! उन सभी के जो तीन मोटो की सत्ता के विरुद्ध सिर उठायेंगे!

डाक्टर का सिर चकराने लगा। उन्हे प्रतीत हुआ कि वे बेहोश हो जायेंगे।

आज मुझे बहुत-सी परेशानियो का मुह देखना पडा है,' उन्होने अपने आप से कहा। इसके अलावा मेरे पेट मे चूहे कूद रहे ह और म बुरी तरह थक टूट भी गया हू। जल्दी से घर जाना चाहिए।"

वास्तव मे ही डाक्टर को अब आराम करने की बडी जरूरत थी। वे उस दिन घटी घटनाओ देखी और सुनी चीजो से इतने अधिक उत्तजित थे कि बुज के साथ नीचे जा गिरने, टोप, बरसाती छडी और एडिया खो देने का भी उनके लिए कोई महत्त्व नही रह गया था। जाहिर है कि सबसे बुरी बात तो यह थी कि ऐनक से हाथ धो बठे थे। सो वे एक बग्घी मे बठकर घर की ओर चल दिये।

तीसरा अध्याय

सितारे का चौक

डाक्टर अपने घर लौट रहे थे। बग्घी चौडी-चौडी पक्की सडको पर से जा रही थी। सडके दीवानखानो से भी ज्यादा जगमगा रही थी। बहुत ऊचाई पर लम्पो की शृखला फली हुई थी। लम्प शीशे के ऐसे गोलो जसे थे जिनमे मानो सफेद उबला हुआ दूध भरा हो। लम्पो के गिद ढेरो ढेर पतगे उड रहे थे, हल्की-सी सरसराहट का गीत गुनगुनाते हुए जल रहे थे। बग्घी नदी के किनारेवाली सडक पर जा रही थी, पथरीली दीवार के साथ साथ। वहा कासे के बबर पजो मे ढाले लिये लम्बी लम्बी जबानें निकाले हुए थे। नीचे गाढा गाढा पानी धीरे धीरे बह रहा था राल की तरह काला-काला और चमकदार। पानी मे नगर उल्टा प्रतिबिम्बित हो रहा था, वह मानो तरना चाहता था, मगर नही तर पाता था और कोमल सुनहरे धब्बो मे ही घुलकर रह जाता था। डाक्टर की बग्घी मेहराब की तरह खमदार पुलो के ऊपर से गुजरी। नीचे से अथवा दूसरे किनारे से वे उन बिल्लियो जसे लग रहे थे जो झपटने से पहले अपनी लोहे की पीठो मे खम डाल रही हो। यहा हर पुल के शुरू मे सन्तरी नजर आते थे। वे ढोलो पर बठे हुए पाइपो से कश लगा रहे थे ताश खेल रहे थे और तारो को ताकते हुए जम्हाइया ले रहे थे। डाक्टर बग्घी मे जा रहे थे इधर उधर देख रहे थे और आवाजो पर कान लगाए हुए थे।

गलियो मकानो और शराबखानो की खुली खिडकियो और मनोरजन पार्कों से किसी गीत की बिखरी बिखरायी पक्तिया सुनाई दे रही थी—

कद किया प्रोस्पेरो को अब
बदी उसे बनाया।
बैठा लोहे के पिजरे मे
अब वह काबू आया।।

-

नशे मे धुत्त एक बाका छला भी इन्ही पक्तियो को दोहरा रहा था। इस बाके छले की मौसी चल बसी थी। मौसी के पास ढेरो रुपया था और उससे भी ज्यादा झाइया थी। नजदीकी रिश्तेदार उसका एक भी नही था। सो मौसी का सारा धन बाके को विरासत में मिल गया। इसीलिए अब वह इस बात पर झुझला रहा था कि जनता ने धनियो की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का झडा ऊपर उठाया था।

चिडियाघर मे बढिया तमाशा हो रहा था। लकडी के मच पर तीन मोटे मोटे और झबरीले बन्दर तीन मोटो के रूप मे प्रस्तुत थे। एक कुत्ता मैंडोलीन पर धुन बजा रहा था।

सुख पोशाक पहने पीठ पर सुनहरा सूरज और पेट पर सुनहरा सितारा लगाये हुए एक मसखरा वाद्ययन्त्रो की सगत में इस कविता का पाठ कर रहा था–

गेहू के बोरो से मोटे
तीनो लुढके जायें।
काम न कोई इन्हे और तो
केवल तोद फुलायें।।
इनकी अरे समझ पथराई।
घडी आखिरी आई।।

"घडी आखिरी आई!" सभी ओर से दाढियो वाले तोते चीख उठे।

भयानक शोर मच गया। पिजरो मे बन्द तरह-तरह के जानवर भौंकने, हूकने किकियाने और सीटिया बजाने लगे।

बदर मच पर इधर उधर कूद फाद रहे थे। उनकी टागें कौन-सी ह और हाथ कौन से यह समझ पाना कठिन था। वे दशको के बीच कूद गये और इधर उधर भागने लगे। दशक भी चीख चिल्ला रहे थे। जो मोटे थे वे तो खास तौर पर खूब शोर मचा रहे थे। वे गुस्से से लाल पीले होते और कापते हुए मसखरे पर टोपिया और दूरबीने फेंक रहे थे। एक मोटी महिला ने मसखरे पर अपना छाता ताना, मगर पास बैठी हुई एक अन्य मोटी महिला की टोपी उसके साथ अटक कर सिर से उतर गयी।

ऊई मा! –दूसरी मोटी महिला जोर से चिल्लाई, क्योकि टोपी के साथ साथ उसके बनावटी बाल भी उतर गये थे।

भागते हुए एक बन्दर ने इस महिला की चाद हथेली से थपथपा दी। वह तो वही बेहोश हो गयी।

'हा हा-हा ।"

'हा हा हा । अन्य दशक जो दुबले पतल थे और कुछ घटिया कपडे पहने थे जोरो के ठहाके लगा रहे थे। 'शाबाश । शाबाश । इनकी ऐसी की तसी । तीन मोटे मुर्दाबाद । प्रोस्पेरा जिन्दाबाद । तिबुल जिन्दाबाद । जनता जिन्दाबाद । '

इसी समय किसी ने बहुत जोर से चीखकर कहा—

"आग लग गई । शहर जला जा रहा है "

सभी लोग बाहर भाग चले धक्कम पेल करते, बेंचो को उलटते पलटते। चिडियाघर के चौकीदार इधर उधर भागते हुए बन्दरा का पकडने लगे।

कोचवान ने चाबुक से सामने की आर इशारा करते हुए डाक्टर से कहा—

' सैनिक मजदूरो के मुहल्ला का आग लगा रहे ह। वे नट तिबुल को पकडता चाहते ह "

नगर के ऊपर, काले-काले मकानो के ढेर के ऊपर आग की लाल लाल लपटें दिखाई दे रही थी।

जब यह बग्घी जिसमे डाक्टर घर जा रहे थे नगर के मुख्य चौक – सिनारे के चौक – मे पहुची तो उसके लिए आगे जाना असम्भव हो गया। वहा ढेरो घोडा गाडिया और कोचें थी घुडसवारो और पदल चलनेवालो की भारी भीड जमा थी।

यहा क्या किस्सा है ? डाक्टर ने पूछा।

मगर किसी ने भी इस सवाल का जवाब नही दिया – सभी लोग चौक म घट रही घटना को देखने मे इतने अधिक खोये हुए थे। कोचवान भी अपनी सीट पर खडा होकर उधर ही देखने लगा।

इस चौक का नाम सितारे का चौक क्यो पडा इसकी भी कहानी है। इस चौक के सभी ओर बहुत बडे बडे समान ऊचाई और बनावट वाले मकान थे जो ऊपर स शीशे के गुम्बज से ढके हुए थे। इस तरह यह चौक सरकस के एक विराटकाय मडप जसा प्रतीत होता था। गुम्बज के बीच मे बहुत ही अधिक ऊचाई पर दुनिया का सबसे बडा लम्प जलता रहता था। यह आश्चयजनक बड आकार का शीशे का गोला था। इसके चारो आर लोहे का चक्र था। वह बहुत ही मजबूत तारो के सहारे लटका हुआ था और शनिग्रह जसा प्रतीत होता था। पथ्वी पर इसके समान दूसरी रोशनी नही थी। इसीलिए लोगो ने इस लम्प को ' सितारे ' की सज्ञा दे दी थी। इस तरह इस सारे चौक का यही नाम पडा गया।

चौक मकानो और आसपास की गलियो को और रोशनी की ज़रूरत नही पडती थी। यह सितारा पत्थर की ऊची दीवार की तरह खड मकानो की सभी गलियों सभी कोना और सभी कोठरियो मे रोशनी पहुचाता था। यहा लोगो का लैम्पो और मोमबत्तियो के बिना काम चल जाता था।

कोचवान घोडा-गाडियो, कोचो और कोचवानो के ऊचे टोपो जो दवाखाना की शीशियो के सिरो जैसे थे के ऊपर से नजर दौडा रहा था।

आपको क्या दिखाई दे रहा है ? वहा क्या हो रहा है ?' कोचवान के पीछ से झाकते और उत्तेजित होते हुए डाक्टर ने पूछा। नाट कद के डाक्टर को कुछ भी नज़र नही आ रहा था। उनकी नज़र भी कमजोर थी।

कोचवान ने जो कुछ देखा था, सब कह सुनाया। यह कुछ देखा था उसन।

चौक मे बहुत हलचल थी। विराट गोलाकार विस्तार मे लोग इधर उधर दौड धूप कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो चौक का घेरा हिडोले की तरह घूम रहा था। जो कुछ ऊपर हो रहा था उसे अधिक अच्छी तरह देख पाने के लिए लोग लगातार इधर उधर भाग दौड रहे थे।

ऊचाई पर लटका हुआ लम्प सूरज की तरह आखो को चकाचौध कर रहा था। ऊपर को मुह उठाये हुए लोग हथेलियो से आखा पर ओट किये थे।

वह रहा ! वह रहा !" लोग चीख उठे।

वह देखिये। वहा।
'कहा? कहा है?
वहा, काफी ऊंचाई पर।"
' तिबुल। तिबुल।'

सैकडो उगलिया न बाइ ओर सकेत किया। वहा साधारण मकान था। मगर छहो मजिलो की सभी खिडकिया चौपट खुली हुई थी। हर खिडकी में से सिर बाहर निकले हुए थे। वे एक दूसरे से भिन नजर आ रहे थे। कुछ सिरो पर फुदने वाले रात्रिकालीन टोपे थे, कुछ नारिया अपने सिरो पर गुलाबी बानेट टोपी पहने थी जिनम से भूरे घुघराले बाल बाहर

निकले हुए थे, कुछ रूमाल बाधे थी कुछ ऊपरवाले कमरो मे जहा युवा गरीब कवि चित्र कार और अभिनेता रहते थे, सिगरेट के धुए के बादलो मे खोये हुए सफाचट दाढी मूछवाले खुशमिज़ाज चेहरे और नारियो के सिर भी दिखायी दे रहे थे। उनके सुनहरे चमकदार बाल इस तरह फले हुए थे मानो उनके कधो पर पख लगे हुए हो। यह घर, जिसकी सलाखो वाली खिडकिया खुली हुई थी और जिनसे रग बिरगे सिर बाहर झाक रहे थे, एक बडे पिजरे जसा प्रतीत हो रहा था जिसमे पपीहे भरे हुए हो। इन सिरो के स्वामी छत पर घटनेवाली किसी बहुत ही महत्त्वपूण घटना को देखने की कोशिश कर रहे थे। यह उतना ही असम्भव था जितना कि दपण के बिना अपने कान देख पाना। अपने मकान की छत देखने को उत्सुक लोगो के लिए चौक मे जमा उन्मत्त भीड दपण का काम दे रही थी। चौक में जमा भीड सभी कुछ देख रही थी, शोर मचा रही थी और हाथ हिला रही थी। कुछ लोगो की खुशी का कोई ठिकाना न था, दूसरे गुस्से से आग बबूला हुए जा रहे थे।

छत पर एक छोटी-सी आकृति हिलती डुलती नज़र आ रही थी। वह धीरे धीरे साव धानी और विश्वास के साथ मकान के तिकोने ढालू शिखर से नीचे की ओर आ रही थी। उसके परो के नीचे टीन बज रहा था।

यह आकृति अपना सन्तुलन बनाये रखने के लिए लबादे को इधर उधर हिला रही थी ठीक उसी तरह जैसे सरकस मे रस्से पर चलनेवाला कलाकार सन्तुलन के लिए पीली चीनी छतरी का उपयोग करता है।

यह था नट तिबुल।

लोग चिल्ला उठे –

'शाबाश तिबुल! शाबाश तिबुल!

' सम्भलकर बढते जाओ! याद कर लो कि कसे तुम मेले मे रस्से पर चला करते थे '

'अरे, वह गिरनेवाला आदमी नही! वह हमारे देश का चोटी का नट है

उसके लिए यह कोई नई चीज़ नही है। हम अपनी आखो से देख चुके हैं कि वह रस्से पर चलने की कला मे कितना अधिक माहिर है '

'शाबाश तिबुल!

'भाग जाओ! बच निकलो! प्रोस्पेरो को आज़ाद कराओ!

कुछ दूसरे लोग लाल-पीले हो रहे थे। वे घूसे दिखाते हुए चिल्ला रहे थे –

अब तू बचकर कही नही भाग सकेगा उल्लू मसखरे!"

शैतान का चर्खा!

' बागी! तुझे खरगोश की तरह गोली का निशाना बनाया जायेगा '

कान खोलकर सुन ले! हम तुझे छत से जल्लाद के तख्ते पर खीच ले जायेंगे। कल दस तख्ते तयार हो रहे है!"

तिबुल खतरनाक फासला तय करता गया।

'अरे यह यहा आ कसे गया' लाग पूछ रहे थे। वह इस चौक मे कसे आ धमका? छत पर कसे जा चढ़ा?"

वह सनिको के हाथो से बच निकला दूसरो ने जवाब दिया। 'वह भागा ओझल हो गया और फिर नगर के विभिन्न स्थानो पर दिखाई दिया एक छत से दूसरा पर कूदता गया। वह तो बिल्ली की तरह फुर्तीला है। उसका हुनर आज उसके दाये आ गया। ऐसे ही तो देश भर मे उसकी ख्याति नही हो गयी!'

चौक मे सनिक आ गये। लोग आस पास की गलियो मे भाग गये। तिबुल रेलिग लाघकर छत क किनारे पर जा खडा हुआ। उसने अपना हाथ फला दिया जिसके गिद लबादा लिपटा हुआ था। हरा लबादा झडे की भाति लहरा उठा।

मेले ठले के खेल तमाशो और रविवारीय सर सपाटो के समय लोग तिबुल को इसी लबादे और पील तथा काले तिकोने टुकडा स सिली बिरजस पहने हुए देखने के आदी थे। अब ऊचाई पर शीशे के गुम्बज के नीचे छोटा सा दुबला पतला और धारीदार तिबुल भिड जैसा लग रहा था जो मकान की सफेद दीवार पर रेंग रही हो। जब लबादा हवा म फडफडाता तो ऐसे लगता कि भिड ने अपन चमकदार हरे पख फला दिये हो।

'अभी तू नीचे आ गिरेगा, जहन्नुमा कीडे! अभी तुझे गोली का निशाना बना लिया जायेगा!' झाइया वाली मौसी से बहुत सा धन विरासत मे पा जानेवाले और नश मे धुत्त बाके छले ने चिल्लाकर कहा।

सनिको न अपने मोर्चे साध लिये। उनका अफसर गुस्से से भुनभुनाता हुआ इधर उधर भाग दौड कर रहा था। उसके हाथ मे पिस्तौल थी। उसकी एडिया स्लेज की पटरियो की तरह लम्बी थी।

एकदम गहरा सन्नाटा छा गया। डाक्टर न अपना दिल थाम लिया जो उबलत हुए पानी मे अड की तरह उछल रहा था।

तिबुल क्षण भर के लिए छत के सिर पर रुका रहा। उसे सामनेवाली दिशा मे पहुचना था। तब वह सितारे के चौक से मजदूरा क मुहल्ला मे भाग सकता था।

अफसर पील और नीले फूलो की क्यारी के बीचोबीच खडा था। उसकी बगल म तालाब था और पत्थर के गोल प्याले स फव्वारा छूट रहा था।

जरा रुको!' अफसर ने सनिका स कहा। म खुद इस पर गोली चलाऊगा। म अपनी रेजिमेन्ट का सबसे अच्छा निशानबाज हू। जरा गौर से देखना कि कैसे गोली चलाई जाती है!

चौक के गिद बने नौ मकानो स गुम्बज के मध्य मे यानी सितारे की ओर
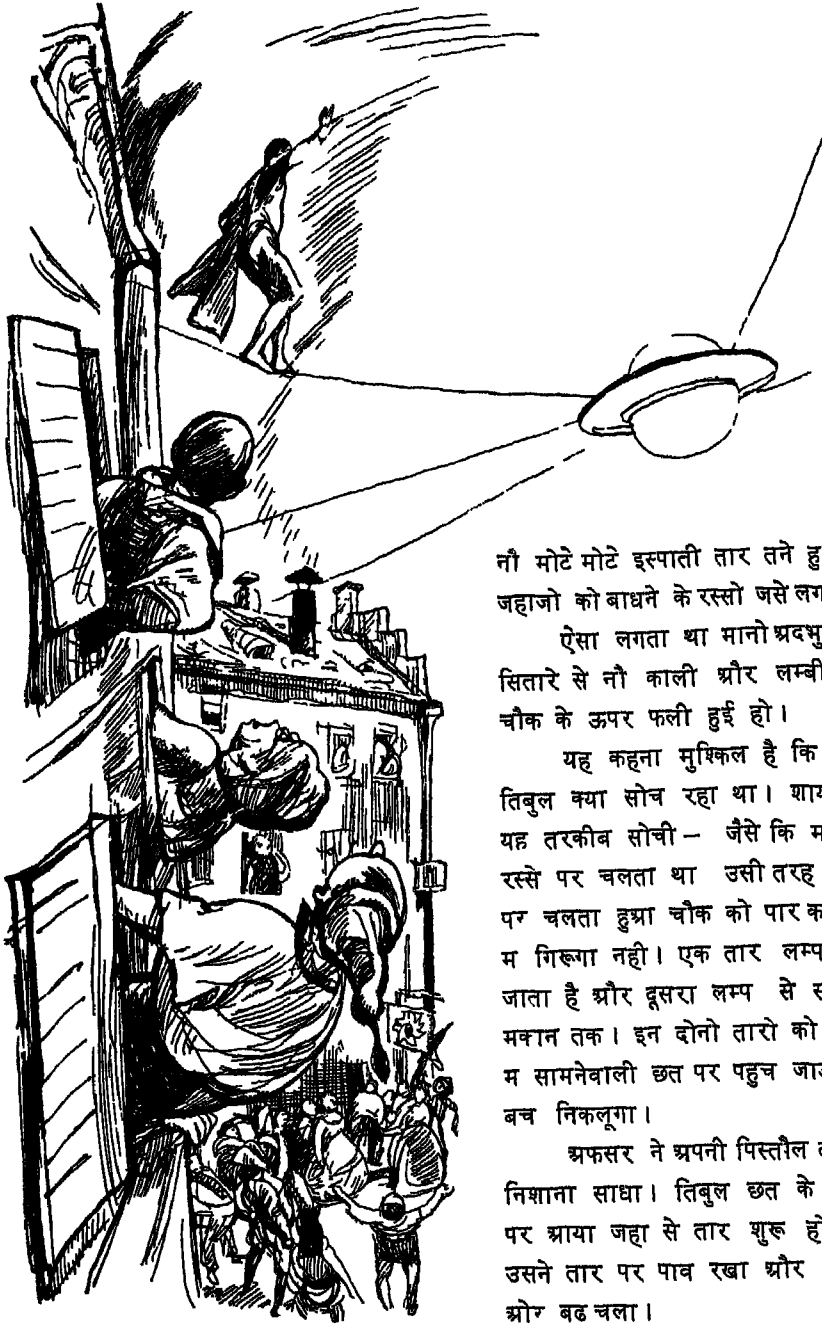
नौ मोटे मोटे इस्पाती तार तने हुए थ जो जहाजो को बाधने के रस्सो जसे लग रहे थे।

ऐसा लगता था मानो अदभुत रहकते सितारे से नौ काली और लम्बी किरणें चौक के ऊपर फली हुई हो।

यह कहना मुश्किल है कि उस क्षण तिबुल क्या सोच रहा था। शायद उसने यह तरकीब सोची – जैसे कि म मले मे रस्से पर चलता था उसी तरह इस तार पर चलता हुआ चौक को पार कर दूगा। म गिरूगा नही। एक तार लम्प तक ले जाता है और दूसरा लम्प से सामनवाले मकान तक। इन दोनो तारो को लाघकर म सामनेवाली छत पर पहुच जाऊगा और बच निकलूगा।

अफसर ने अपनी पिस्तौल ताना और निशाना साधा। तिबुल छत के उस सिरे पर आया जहा से तार शुरू होता था। उसने तार पर पाव रखा और लम्प की ओर बढ चला।

लोगो ने दम साध लिया।

वह कभी तो बहुत धीरे धीरे कदम बढाता कभी बहुत तेज़ी स लगभग भागते हुए। वह अपने हाथ फैलाकर खुद को सतुलित करता। हर घडी ऐसे लगता कि वह गिरा कि गिरा। अब उसकी छाया दीवार पर झलकने लगी। वह लम्प के जितना अधिक निकट होता जाता था उसकी परछाइ दीवार पर नीची बडी और पीली होती जाती थी।

चौक नीचे बहुत दूरी पर था।

लैम्प की दूरी जब आधी रह गयी, तो गहरी खामोशी मे अफसर की आवाज़ गूज उठी–

म अब गोली चलाता हू। वह सीधा तालाब मे जा गिरेगा। एक दो तीन!

गोली चलने की आवाज़ गूज उठी।

तिबुल आगे बढता रहा मगर न जाने क्यो अफसर धडाम से तालाब मे जा गिरा। उसे गोली मार दी गयी थी।

एक सैनिक के हाथ मे पिस्तौल थी जिससे नीला धुआ निकल रहा था। उसी ने अफसर को गोली मारी थी।

'कुत्ते का पिल्ला! सनिक ने कहा। तू जनता के हमदद को मारना चाहता था। मने तेरा इरादा नाकाम बना दिया। जनता जि दाबाद!'

ज़नता जिन्दाबाद! दूसरे सनिको ने उसका समथन किया।

तीन मोटे जिन्दाबाद!' उनके विरोधी चिल्लाये।

वे सभी दिशाओ मे फल गये और तार पर चले जा रहे तिबुल पर गोलिया बरसाने लगे।

तिबुल अब लम्प से दो कदमो की दूरी पर था। वह अपना लबादा हिलाकर लम्प की जगमगाहट से आखो को बचा रहा था। गोलिया उसके आस पास से गुज़र रही थी। लोग खुशी से चिल्ला रहे थे।

ठाय! ठाय!

निशाने चूक रहे हैं!

हुर्रा! निशाने चूक रहे ह!'

तिबुल ने लैम्प के गिद लगे हुए लोहे के चक्र पर पाव रखा।

खैर, कोई बात नही! विरोधी दल के सनिको ने धमकी दी। वह उधर सामन की ओर जायेगा वह दूसरे तार पर से गुज़रेगा। हम वहा से उसे नीचे मार गिरायेंगे!

इसी क्षण एक ऐसी बात हुई जिसकी किसी ने भी आशा नही की थी। धारीदार आकृति जो लम्प के निकट होने पर काली नज़र आने लगी थी लोहे के चक्र के सिरे पर बठ गयी

उसने कोई पुर्जा घुमाया सू-सू और फिर फक का आवाज़ हुई और लम्प आन की आन मे बझ गया। किसी के मुह से एक बोल तक न फूट पाया। स दूक के भीतर पायी जानेवाली भयानक खामोशी और भयानक अधरे का मा वातावरण हो गया।

अगले क्षण वहुत ऊचाई पर कुछ ठक-ठक और टन टन हुई। अ धकारपूण गुम्बज मे हल्की रोशनी का एक ध बा सा दिखाइ दिया। सभी को थोडा सा आकाश और उसमें दो सितारे नज़र आये। इसके बाद इस गगनचुम्बी सूराख मे से एक काली आकृति रगकर बाहर निकली। फिर शीशे के गुम्बज पर किसी के तेज़ी से भागने की आवाज सुनाई दी।

नट तिबुल इस सूराख में से बच निकला था।

गोलिया चलने और अचानक अधेरा हो जाने से घोडे डर गये थे।

डाक्टर की बग्घी तो उल्टते उल्टते बची। कोचवान ने लगामे कसकर घोडा को काबू मे किया और घुमावदार रास्ते से डाक्टर को घर ले चला।

इस तरह एक गैरमामूली दिन और गरमामूली रात बिताकर आखिर डाक्टर गास्पर आर्नेरी घर लौटे। उनकी नौकरानी मौसी गानीमेड ओसारे मे ही उससे मिली। वह बहुत परेशान नज़र आ रही थी। डाक्टर इतनी देर नक घर नही लौटे थे! मौसी गानीमेड ने हाथ नचाये गहरी सास ली और सिर हिलाते हुए कहा—

आपका चश्मा कहा गया? टूट गया? आह डाक्टर, प्यारे डाक्टर! आपकी बरसाती कहा गयी? खो गयी? ओह ओह!

मौसी गानीमेड इतना ही नहीं मरी नाना एडिया भी टूट गयी ह

ओह यह तो बहुत बुरा हुआ!

आज तो इस से भी ज्यादा बुरी वान हुइ है मौसी गानीमेड हथियारसाज़ प्रास्पेरो बदी वना लिया गया। उसे लोहे के पिजरे म बन्द कर दिया गया।'

मौसी गानीमेड को कुछ भी मालूम नही था कि दिन को क्या कुछ हुआ था। हा उसन तोपो की गरज सुनी थी मकाना क ऊपर लाल लपटें देखी थी। पडोसिन न उसे बताया था कि बढई अदालत चौक मे विद्राहिया के सिर काटने के लिए जल्लादो के तख्ते बना रहे ह।

मुझे बहुत डर महसूस हुआ। मने खिडकिया बन्द कर ली और साच लिया कि बाहर नही जाऊगी। हर घडी मैं आपके आने की उम्मीद करती रही। बहुत ही परेशान रही दोपहर का खाना ठडा हो गया शाम के खाने का भी वक्त गुज़र गया, मगर आप नही लौटे उसने कहा।

रात वीत चुकी थी। डाक्टर सोन की नयारी करने लगे।

डाक्टर ने जो सौ विद्यायें पढ़ी थी उनमे इतिहास भी शामिल था। उनके पास चमड़े की जिल्दवाली एक बडी कापी थी। इस कापी मे वे महत्त्वपूर्ण घटनाओ के बारे मे अपनी राय लिखा करते थे।

आदमी को हर चीज वक्त पर करनी चाहिए,' डाक्टर ने उगली ऊपर उठाते हुए कहा।

थकान की परवाह न करते हुए डाक्टर ने चमडे की जिल्दवाली कापी उठाई मेज पर जा बैठे और लिखने लगे।

कारीगरो खान मजदूरो और जहाजियो —यानी नगर के सभी गरीब लोगो ने तीन मोटो की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया है। सनिको की जीत हुई। हथियारसाज प्रोस्पेरो को कैद कर लिया गया और नट तिबुल भाग गया। अभी, कुछ ही समय पहले सितारे के चौक मे एक सैनिक ने अपने अफसर को गोली से उडा दिया। इसका मतलब यह है कि जल्द ही सभी सनिक जनता के विरुद्ध लडने और तीन मोटो की रक्षा करने से इन्कार कर देगे। मुझे केवल तिबुल के बारे मे चिन्ता हो रही है

इसी क्षण डाक्टर को अपने पीछे सरसराहट-सी सुनाई दी। उन्होने घूमकर देखा। उस ओर अगीठी थी। अगीठी मे से हरा लबादा पहने हुए एक लम्बा-तडगा व्यक्ति बाहर आया। यह था नट तिबुल।
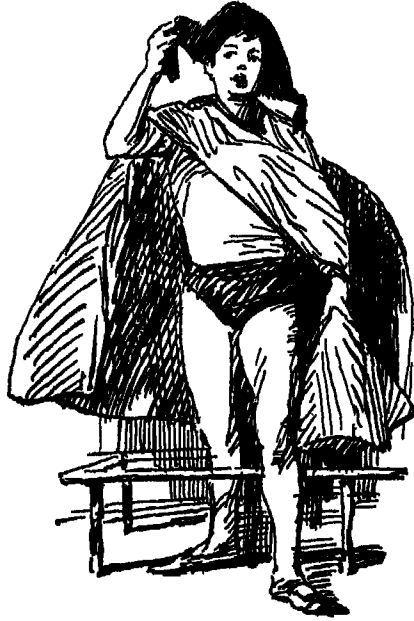
दूसरा भाग

चौथा अध्याय

गुब्बारेवाले के साथ क्या कुछ बीती

अगले दिन अदालत चौक मे ज़ोरो स काम हो रहा था। वहा जल्लादो के दस तख्ते बनाये जा रहे थे। सनिक काम की निगरानी कर रहे थे। बढई मन मारकर काम कर रहे थे।

हम कारीगरो और खान मजदूरो के सिर काटने के लिए तख्ते नही बनाना चाहते !' उन्होने गुस्से से कहा।

वे हमारे भाई ह !'

उन्होने इसलिए अपनी जान की वाजी लगाई कि सभी मेहनतकशो का आज़ादी मिल सके !"

चुप रहो ! सनिको का सरदार ऐसे जोर से चिल्लाया कि दीवार के सहारे खडे किये हुए तयार तख्ते नीचे जा गिरे। चुप रहा वरना म तुम्हे कोडे लगवाऊगा !

सुबह से ही विभिन्न दिशाओ से लोग भारी सख्या मे अदालत चौक की ओर आने लगे थे।

तेज हवा चल रही थी, धूल के वादल उड रहे थे दूकानो के साइनबोड हिल-डुल और खटखटा रहे थे सिरो से टोपिया उडकर घोडा-गाडियो के पहियो के नीचे लुढक रही थी।

एक जगह पर तो हवा के कारण वहुत ही अनहोनी बात हो गयी—गुब्बारे एक गुब्बारे बेचनेवाले को ले उडे।

हुर्रा ! हुर्रा ! इस अनोखी उडान को देखते हुए बालक चिल्ला उठे।

बालको ने खुश होते हुए खूब जोर से तालिया बजायी। बात यह है कि यह दृश्य तो वसे ही बहुत दिलचस्प था और फिर गुब्बारे बेचनेवाले को ऐसी अटपटी स्थिति मे देखकर बालको को वसे भी बहुत खुशी हुई। वह इसलिये कि बालको को हमेशा इस गुब्बारे बेचनेवाले से ईर्ष्या होती थी। ईर्ष्या करना बुरी बात है। मगर किया भी क्या जाय ! लाल नीले और पीले गुब्बारे तो बरबस बालका का मनमोह लेते। हर बालक चाहता कि उसके पास भी एक ऐसा गुब्बारा हो। गुब्बारे बेचनेवाले के पास तो ढेरो गुब्बारे होते थे। मगर करिश्मे

तो कभी नही होते! बहुत ही आज्ञाकारी लडके और बहुत ही दयालु लडकी को भी उमन अपने जीवन मे कभी एक बार भी लाल नीला या पीला गुब्बारा भेंट नही किया था।

अब उसे एसा सगदिल होने की सजा मिली थी। वह गुब्बारो वाली रस्सी के साथ लटका हुआ शहर के ऊपर उड रहा था। चमकते और ऊचे नीलाकाश मे उडते हुए गुब्बारे जादुई अगूरो के रग बिरग गुच्छे जसे प्रतीत हो रहे थे।

बचाओ! ग बारे बेचनेवाला चिल्ला रहा था। मगर उसे मदद मिलने की कोइ आशा नही थी और वह अपनी टागो को जोरो से इधर उधर झटक रहा था।

गुब्बारे बेचनेवाला अपने पैरो मे घास फूस के और माप से बडे जूते पहन हुए था। जब तक वह जमीन पर था सब ठीक-ठाक था। इसलिये कि जूते पर से निकल न जाये वह पटरियो पर चलता हुआ आलसी व्यक्ति की तरह पैरो को घसीटता रहता था। मगर अब जब वह हवा मे उड रहा था, ता यह तिकडम उसके काम न आ सकती थी।

ओह बेडा गर्क!"

उडते हुए और एक दूसरे से रगड खाते हुए गुब्बारे हवा में कभी एक तग्फ को हा जाते थे कभी दूसरी तरफ को।

आखिर एक जूता उसके पर से उतरकर नीचे गिर ही गया।

अरे वह देखो! मूगफली! मूगफली!' नीचे भागते हुए बालक चिल्लाये।

वास्तव मे ही नीचे गिरता हुआ जूता मूगफली की याद दिलाता था।

इसी समय सडक पर नृत्य का शिक्षक चला जा रहा था। बहुत ही बाका सजीला था वह। लम्बा कद छोटा-सा गोल मटोल सिर और पतली-पतली टागें वायलिन या टि्ड्डे से मिलता-जुलता। उसके कोमल कान बासुरी की दर्दीली तान और नतको के नाजुक श से मिलता-जुलता। सुनने के आदी थे। बालको की खुशी भरी किलकारिया और हो हल्ला वह कसे सहन करता!

चीखना चि लाना ब द करो! उसने बिगडते हुए बालको से कहा। एसे भी कहीं शोर मचाया जाता है! खुशी को खूबसूरत और मधुर वाक्यो मे व्यक्त करना चाहिये मिसाल के तौर पर

उसने मुद्रा बनाई, मगर मिसाल पश करन की नौबत न आ पायी। नृत्य के सभी अध्यापका की तरह उसे भी परो की आर ही देखने की आदत पडी हुई थी। हाय अफसोस! ऊपर क्या हो रहा था इसकी तरफ उसका ध्यान नही गया।

गुब्बारे बेचनेवाले का जूता उसके सिर पर आ पडा। उसका सिर छोटा सा था इसलिय घास फूस का बडा सा जूता उसके सिर पर टोप की तरह आकर टिक गया।

अब यह नत्य का सजीला अध्यापक गाय की तरह रम्भाने लगा। जूते से उसका आधा चेहरा ढक गया।

वालक तो हसी के मारे लोट-पोट हाने लगे—
हा हा हा! हा हा हा!

नाच का शिक्षक एक दो तीन
चलता नज़र झुकाये।
नाक बडी लम्बी सी उसकी
चूहे सा किकियाये।।
सिर पर टिका फूस का जूता
शोभा कही न जाये।

बाड पर बठे हुए लडको ने सुर मिलाकर उक्त पक्तिया गायी। वे किसी भी क्षण बाड क दूसरी ओर कूदने और नौ दो ग्यारह हो जाने का तयार थे।

आह! नत्य के शिक्षक ने आह भरी। आह, कितने दुख की बात है! बाल नाच का जूता होता तब भी कोई बात थी! मेरी क्स्मत मे घास फूस का ऐसा ग दा ही जूता रह गया था!

आखिर हुआ यह कि नत्य के शिक्षक को गिरफ्तार कर लिया गया।

ए हज़रत उसे डाटा गया कसी भयानक सूरत बनाये फिर रहे हो। तुम समाज की शान्ति भग कर रहे हो। ऐसी हरकत तो वसे ही कभी नही करनी चाहिये और आजकल के खतरनाक वक्त मे तो भूलकर भी नही।'

नत्य के शिक्षक ने हाथ मले।

कसा सफेद झूठ है यह! उसने रोते आर दुहाई देते हुए कहा। उफ कसी गलतफहमी हो गयी है! वाल्ज़ नृत्यो और मुस्कानो की दुनिया मे रहनेवाला मेरे जसा सजीला छबीला यक्ति—क्या वह भी समाज की शाति भग कर सकता है? हाय! हाय!

नत्य के शिक्षक के साथ आगे क्या बीती यह हमे मालूम नही। फिर हमे इसम खास दिलचस्पी भी नही है। हमारे लिये तो यह जानना कही अधिक महत्त्वपूण है कि हवा मे उडते हुए गुब्बारे बेचनेवाले का क्या हुआ।

वह कुकरौंधा फूल की पखुडी की तरह उड रहा था।

यह तो सरासर बदतमीजी है! गु बारे बचनेवाला चिल्ला रहा था। म बिल्कुल उडना नही चाहता! मुझे तो उडना ही नही आता

मगर उसकी चीख-पुकार बेसूद रही। हवा और भी तेज़ हो गयी। गुब्बारो का गुच्छा अधिकाधिक ऊचा होता गया। हवा उसे नगर के वाहर, तीन मोटो के महल की ओर उडाये लिये जा रही थी।

गुब्बारे बचनेवाले को कभी-कभी नीचे की भी झलक मिल जाती। नीचे उसे छत नाखूना की तरह ग दी म दी टाइलें, साथ साथ सटे हुए मकान नीले पानी की सकरी पट्टी खिलौनो-से लोग और बाग बगीचो के हरे हरे ध बे नज़र आते। नगर उसे मानो बकसुए में टगा हुआ घूमता सा लगता था।

हालत ने और भी खतरनाक रुख अपनाया।

कुछ देर अगर और इसी तरफ उडता गया, तो म तीन मोटो के पाक मे जा गिरूगा। गुब्बारे बेचनेवाला यह सोचकर कांप उठा।

अगले ही क्षण उसने अपने को धीरे धीरे बडी अदा और खूबसूरती से पाक के ऊपर उडते पाया। वह अधिकाधिक नीचे आता जाता था। हवा का जोर कम हो गया था।

'मैं अब जमीन पर पहुचा कि पहुचा। मुझ पकड लिया जायेगा। पहले तो वे

कसकर मरी पिटाइ करेग श्रार फिर जेल में ब~ कर दग। यह भी हो सकता है कि सभा तरह क झझट से बचने के लिय फौरन सिर हा कलम कर द।'

किसी ने उसे नही देखा। हा, एक वक्ष पर बठ हुए पक्षी अवश्य डरकर सभा दिशाश्रा म उड गये। उडते हुए रग बिरगे गुब्बारा की हल्की सी परछाईं पड रही थी बादला की परछाइ जसी। प्यारे-प्यार इन्द्रधनुष जसे रगा की यह परछाइ बजरी बिछे माग फूला की क्यारा हस के ऊपर बठ हुए एक लडक की मूत्ति श्रौर ड्यूटी पर खडे सतरी के ऊप स नरता हुई गुजरी। इस रग बिरगी छाया से सन्तरी के चेहरे पर कमाल के परिवत्तन हुए। उसकी नाक मुर्दे की नाक की तरह नाली मदारी की नाक की तरह हरी श्रौ फिर शराबी की नाक की तरह लाल हुइ। कालदस्कोप मे शीशे के रग बिरगे टुकडे भा इसी तरह रग बदलते ह।

खनरनाक घडी नजदीक आती जा रहा थी। हवा गुबारे बेचनेवाले को महल की खला हुई खिडकियो की तरफ उडा ल चली। उसे तनिक भी सन्देह नही था कि वह क्षण भर मे रुई के गाले की तरह किसी खिडकी म स अन्दर जा गिरेगा।

ऐसा ही हुश्रा भी।

गुबारे बेचनेवाला एक खिडकी मे से अन्दर जा गिरा। यह महल के रसोइघर की खिडकी थी। यहा मिठाइया बनाई जा रही था।

उस दिन तीन मोटो के महल मे इस बात का खुशी मे शानदार दावत हो रही थी कि एक दिन पहले हुई बगावत को कामयाबी से कुचल दिया गया था। दावत के बाद तीनो मोटे राज्य परिषद के सभी सदस्य दरबारी श्रौर सम्मानित मेहमान श्रदालत चौक में जानेवाल थ।

प्यारे पाठको महल के मिठाईघर मे जा पहुचने की तो कल्पना करते ही मुह म बरबस पानी भर आता है। यह तो मोटे ही बता सकते थे कि वहा कसी कैसी चटखारवाला चीजें बनती थी। फिर आज तो खास दिन था। शानदार दावत का दिन! आप कल्पना कर सकते ह कि रसोइये श्रौर हलवाई क्या क्या कमाल दिखा रहे होगे।

मिठाईघर मे जाकर गिरते हुए गुब्बारे बेचनेवाले को जहा डर लगा वहा खुशी भा हुई। शायद भिड को डर श्रौर खुशी की ऐसी ही अनुभूति उस समय होती है जब वह किसा लापरवाह गृहिणी द्वारा खिडकी मे रख दिये केक के ऊपर मडराती है।

वह बहुत तेजी से उडता हुश्रा भातर आया श्रौर इसलिये ढग से अपने इर्दगिद नजर न डाल सका। शुरू मे तो उसे ऐसे लगा कि वह एसी जगह पर आ गिरा है जहा उष्ण देशा क अदभुत, रग बिरगे श्रौर दुलभ परिन्दे बन्द ह, व फदकते ह चहचहाते ह, चीचा करन श्रौर सीटिया बजाते ह। मगर दूसरे ही क्षण उसे लगा कि यह पक्षीघर नही, फला का दूकान है जहा तरह तरह के उष्णदेशीय फल रखे हुए ह, पके हुए श्रौर रसीले।

मिर चकरानेवाली मीठी मीठी सुगध उसकी नाक म घुस गयी। गर्मी और घुटन से उसका दम घुटन लगा।

मगर इसी क्षण सब कुछ गडबड हो गया — अदभुत पक्षीघर भी और फलो की दूकान भी।

गुब्बारे बचनेवाला पूरे का पूरा किसी नम-गम चीज पर जा बैठा। गुब्बार उसने हाथ स नही छोडे कसकर पकडे रहा। वे उसके सिर के ऊपर निश्चल खडे हो गये।

उसने खूब जोर से आखें भीच ली। यह सोच लिया कि किसी भी कीमत पर आखें नहा खालेगा।

अब म सब कुछ समझ गया ' उसने सोचा। ' यह न तो पक्षीघर है और न फलो का दूकान। यह तो मिठाईघर है और मैं केक के ऊपर बठा हू '

सचमुच एसा ही था भी।

वह चाकलेट, माल्टो अनारो क्रीमो पिसी हुई चीनी और मुरब्बो के साम्राज्य म बठा था रग बिरगे और प्यारी प्यारी सुगधवाले साम्राज्य के सिहासन पर। उसका सिहासन था केक।

वह आखें बन्द किये हुए था। वह समझता था कि अब उसकी खूब लानत मलामत हागी उसे मारा पीटा जायेगा और वह इस सब के लिये पूरी तरह तयार था। मगर हुआ वह जिसकी उसने कल्पना तक न की थी।

केक का तो सत्यानाश हो गया छोटे हलवाई ने दुखी होते हुए कहा।

इसक बाद खामोशी छा गयी। सिफ उबलते चाकलेट मे से फटते हुए बुलबुला की आवाज आती रही।

जाने अब क्या होगा? गुब्बारे बेचनेवाले ने डर के मारे गहरी सास लते और अपनी आखो को और अधिक कमकर भीचते हुए फुसफुसाकर कहा।

उसका दिल ऐसे उछल रहा था जसे मनीबग मे पसा।

खर, कोई बात नही! बडे हलवाई ने भी कडाई से कहा हाल मे वे लोग दूसरा राउड खत्म कर चुके ह। बीस मिनट बाद केक पहुचना चाहिय। रग बिरगे गुब्बारे और इस उडनेवाले उल्लू का बहूदा सा चेहरा बढिया दावत के केक की सजावट के लिये बहुत ठीक रहेगा। बडे हलवाई ने इतना कहा और हुक्म दिया— क्रीम लाओ!

और सचमुच क्रीम लाई गई।

बस अब तो गजब ही हो गया!

तीन हलवाई और बीस रसोइये छोकरे गुब्बारे बेचनेवाल पर टूट पडे। अगर तीनो मोटो म से सबसे मोटा इस दृश्य का देखता तो वह भी वाह वाह कर उठता। एक मिनट मे ही उसे सभी तरफ से क्रीम स ढक दिया गया। गुब्बारे बेचनवाला आखें बन्द किये बठा था कुछ भी नहा देखता था। मगर नजारा था देखने लायक। उसे क्रीम से तर ब-तर कर दिया गया। हा उसका सिर बेल बूटो वाली केतली से मिलता-जुलता उसका तोबडा बाहर निकला हुआ था। बाकी सारा शरीर हल्की गुलाबी झलकवाली सफेद क्रीम से लथ पथ कर दिया गया था। गुब्बारे बेचनेवाला और तो कुछ भी हो सकता था मगर अब गुब्बारे बेचनेवाला नही रहा था। जसे उसका घास फूस का जूता गायब हो गया था, वसे ही अब वह खुद भी।

कोई कवि उसे बफ की तरह सफेद राजहस समझ सकता था किसी माली को वह मगमरमर का बुत-सा लग सकता था कोई धोबिन उसे ढरो ढर साबून का फन मान सकती थी और काई बालक बफ का पुतला।
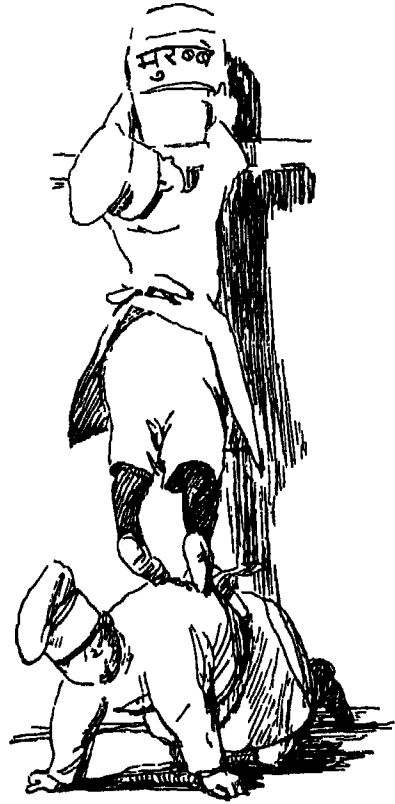
सबसे ऊपर गु बारे लटके हुए थे। ऐसी सजावट था ता गरमामला मगर कुल मिलाकर खासी जच रही थी।

'हु!" अपने चित्र को मुग्ध दृष्टि से निहारनवाल चित्रकार क अदाज मे बडे हलवाई ने कहा। इसके बाद उसकी आवाज पहल की भाति ही भयानक हा उठी और उसन चीखकर हुक्म दिया— मुरब्बे लाओ!

मरब्बे आ गये। वे सभी किस्मो सभी शक्लो और सभी आकारो के थे। उनमे खट्टे भी थे मीठे भी, तिकोनी शक्ल के सितारो जसे गोल दूज के चाद जसे और गुलाब की शक्ल के भी। रसोइये छोकरे खूब मन लगाकर अपना काम कर रहे थे। बडे हलवाई के तीन तालिया बजाते तक क्रीम का टीला—सारे का सारा केक—तरह-तरह के मुरब्बो से सज गया।

'बस काफी है! बडे हलवाई ने कहा। "अब इसे थोडी देर के लिये ओवन म रख देना चाहिये ताकि वह जरा जरा गुलाबी हो जाये।

ओवन मे? गुब्बारे बेचनेवाले का दम निकल गया। 'यह क्या सुना मने? किस ओवन मे? मुझे ओवन मे?!'

इसी समय एक बरा दौडता हुआ मिठाईघर मे आया।

"केक लाओ! केक! वह चिल्लाया। "फौरन केक लाओ! हाल म केक का इतजार हो रहा है।"

तयार है!" बडे हलवाई ने जवाब दिया।

शुक्र है भगवान का! गुब्बारे बेचनेवाले न कहा। अब उसने जरा जरा आख खोली।

नीली वर्दी पहने हुए छ बरो ने इस बडी सी प्लट को उठाया जिसम वह बठा हुआ था। वे उसे ले चले। वह मिठाईघर से बाहर आ चुका था जब उसे रसोइया के ठहाके सुनाइ दिये थे।

बरे उसे लिये हुए चौडी सीढ़िया चढकर ऊपर हाल मे पहुच। गुब्बारे बेचनेवाले न घडी भर के लिये फिर आखें बन्द कर ली। हाल मे खूब शोर मच रहा था, हसी-खुशा का वातावरण था। बहुत से लोगो की आवाजें एकसाथ सुनाई दे रही थी ठहाके गूज रहे थे तालिया बजाई जा रही थी। हर बात इस चीज की गवाही देता थी कि दावन खूब काम याब रही थी।

गुब्बारे बेचनेवाले को नही केक को लाकर मेज पर रख दिया गया।

अब गुबारे बेचनेवाले ने आखें खोली।

उसने तीन मोटो को देखा।

वे इतने मोटे थे कि हैरत से उसका मुह खुला रह गया।

फौरन मुझे मुह बन्द कर लेना चाहिये, उसने झटपट अपने आप से कहा। "वतमान परिस्थिति मे मेरे लिये अपने को जीता जागता व्यक्ति न प्रकट करना ही बेहतर होगा।"

मगर अफसोस मुह बन्द न हुआ। दो मिनट तक ऐसी ही हालन रही। कुछ देर बाद गुब्बारे बेचनेवाले का आश्चय कुछ कम हुआ। उसने जोर लगाकर मुह बन्द कर ही लिया। मगर तभी उसकी आखें हैरत से फल गयी। वह बडी कोशिश से कभी अपना मुह तो कभी आख बन्द करता और आखिर उसने अपनी हैरत पर काबू पा ही लिया।

तीनो मोटे हॉल मे उपस्थित अय लोगो की तुलना मे ऊचे मच पर, आदर के स्थान पर बठे थे।

वे तीनो ही सबसे ज्यादा खा रहे थे। उनमे से एक तो नेप्किन ही चबाने लगा था।

'आप नेप्किन चबा रहे ह "

'सच? मुझे ध्यान ही नहीं रहा

उसने नेप्किन रख दिया और उसी क्षण तीसरे मोट का कान चबाने लगा। यहा यह बता देना भी ठीक होगा कि तीसरे मोटे का कान गुलगुले जैसा लग रहा था।

मब हसी के मारे लोट-पोट होने लगे।

'अच्छा, अब मजाक छोडें ' दूसरे मोटे ने काटा उठात हुए कहा। मामला अब सजीदा रुख ले रहा है। वे केक ले आये है।

"हुर्रा!"

हाल मे खुशी की लहर दौड गयी।

'जाने अब क्या होगा? गुब्बारे बेचनवाला मन ही मन परेशान हा रहा था। "जाने अब क्या होगा? ये तो मुझे खा जायेंगे!'

इसी समय घडी ने दो बजाये।

एक घटे बाद अदालत चौक मे सजाय दी जाने लगेंगी " पहले माटे ने कहा।

"सबसे पहले तो हथियारसाज प्रोस्पेरो का ही सिर अलग किया जायेगा न?" प्रतिष्ठित मेहमानो मे से किसी ने पूछा।

'उसे आज सज़ा नही दी जायेगी " सरकारी सलाहकार ने उत्तर दिया।

'क्यो? ऐसा क्यो?'

'फिलहाल हम उसे जिन्दा रखेंगे। हम उससे बागियो के मसूबा और उनके कर्त्ता धर्त्ताओ के नाम जानना चाहते हैं।"

"इस वक्त वह कहा है?"

सभी लोगो ने इस बातचीत में गहरी दिलचस्पी जाहिर की। उन्हे तो केक का भी ध्यान न रहा।

वह पहले का तरह लोह के पिजरे म ब द है। पिजरा यही महल मे उत्तराधिकारी ट्टी के चिडियाघर मे रखा हुआ है।

'उसे यहा बुलवाइये

उसे यहा ले आओ ! —पहले मोट ने कहा। हमारे मेहमान उस दरिंदे को अधिक नज़दीक से देख पायेंगे। म तो आप सब का चिडियाघर मे ही चलने का सुझाव देता मगर वहां तो बहुत शोर चीख चिघाड और बदबू है जामो की खनक और फलो की महक से इसका क्या मुकाबला

वह तो है ही ! सो तो है ही ! चिडियाघर जाने मे कोई तुक नही

प्रोस्पेरो का यही बुलवाइये ! हम केक खाते हुए उस राक्षस को देखेंगे।

फिर केक ! गब्बारे बचनेवाला सहम उठा। कम्बख्त हाथ धोकर कक के ही पीछे पडे हुए ह पेटू न हा ता !

प्रोस्पेरो का यहा लाया जाये पहल माट ने कहा।

सरकारी सलाहकार बाहर निकला। दा कतारो मे खडे हुए बरो ने एक दूसरे म दूर टते हुए सिर झुका लिय। य कतारे नीची हो गयी।

पेटू खामोश हा गये।

वह बहुत खतरनाक आदमी है ' दूसर माटे ने कहा। सबसे ज्यादा ताकतवर है। बबरशर से भी बढकर। उसकी आखा से नफरत की चिगारिया निकलती ह। उससे आखें मिलाने की तो हिम्मत ही नही हो सकती।

उसका सिर भा भयानक है राज्य परिषद के सेक्रेटी न कहा। यह बडा साग ! स्तम्भ के सिरे जसा। बाल उसके लाल ह। एसा लगता है मानो उसके सिर से आग की लपटें निकल रहा हा।

अब जब हथियारसाज प्रास्पेरो की बात चल पडी तो पेटुआ की हालत ही बदल गयी। उ होने खाना पीना मजाक करना और शोर मचाना ब द कर दिया, पेट सिकोड लिय और कुछक के तो चेहरा का रग भी उड गया। बहुता का तो इस बात का अफसास भी हान लगा था कि क्यो उ हान उसे दखने की इच्छा जाहिर की।

तीनो मोटे सजीदा सूरत बनाये बठे थ और मानो कुछ कुछ दुबला भी गये थे।

अचानक सभी चप हो गये। गहरा स नाटा छा गया। हर मोटा कुछ इस तरह से हिला डुला मानो दूसरे क पीछे छिपना चाहता हा।

हथियारसाज प्रोस्परा को हाल मे लाया गया।

आगे आगे सरकारी मलाहकार था। दाय बाय सनिक थे। वे मोमजाम की काली टोपिया पहने हुए ही और नगी तलवारे हाथ म लिय हाल मे आये। जजीरा की खनखनाहट

सुना‍ ‍ी। ह्थियारसाज के हाथा मे हथकडिया पडी हुइ थी। उस मज के पास लाया गया। वह माटा स कुछ कदमा का दूरी पर रुक गया। वह खडा था सिर झकाये हुए। कदी क चेहरे का रग पीला था। उमक माथे कनपटियो और अस्तव्यस्त लाल वाला क नीचे खून जमा हुआ था।

प्रोस्पेरा न सिर उठाकर मोटो की आर देखा। पास बठे हुए सभी लोग झटके के साथ पीछे हट गये।

"किस लिये इसे यहा ले आये? एक महमान न चीखकर पूछा। यह देश का सबसे धनी मिल मालिक था। मुझे इससे दहशत होती है!

मिल मालिक इतना कहकर बेहोश हा गया आर उसकी नाक फलो की जली मे जा धसी। कुछ महमान ता दरवाजो की तरफ भाग चल। कक की अब किसी को सुध न रही।

क्या चाहते ह आप लोग मुझसे? हथियार साज ने पूछा।

पहले माटे न हिम्मत से काम लेते हुए कहा—

हम जरा यह देखना चाहते थे कि तुम लगते कसे हो। तुम अब जिनकी मुट्ठी म बन्द हा क्या तुम्हारे लिय भी उन लोगो को देखना दिलचस्प नही है?

मुझे उबकाई आती है आपका दखकर।

घबराओ नही जल्द ही हम तुम्हारा सिर धड से अलग कर देगे। इस तरह हम तुम्हें हमारी आर देखने की जहमत से निजात दिला दग।

'बडी परवाह पडी है मुझे सिर की। मरा तो एक सिर है मगर जनता के सिर ह लाखा। आप उन सभी को तो काटने से रहे!

'आज अदालत चौक मे सजा दी जायगी। वहा जल्लाद तुम्हार साथियो से निपटेंगे।"

पेटुओ ने चटखारा भरा। मिल मालिक होश मे आ गया। इतना ही नही उसने अपन गालों से गुलाबी जेली भी चाटी।

'आप लोगो के दिमागो पर चरबी चढी हुई है' प्रोस्पेरा न कहा। आपको अपनी तोंदो के सिवा किसी चीज का होश नही है!

ज़रा गौर फरमाइय न ! दूसरे माट न बिगडते हुए कहा। किस चीज़ का होश होना चाहिये हम?'

अपने मन्त्रिया स पूछिय। वे जानते ह कि देश मे क्या कुछ हो रहा है।

सरकारी सलाहकार ने अटपटा सा हुकारा भरा। मन्त्रिया ने उगलिया से प्लटा पर ताल देनी शुरू की।

इनसे पूछिये,' प्रोस्पेरो कहता गया 'ये बतायेंगे आपको

वह चुप हो गया। सभी बेचनी से उसका मुह ताकन लगे।

ये आपको बतायेंगे कि कमर दोहरा करक उगाया गया जिन किसाना का अनाज आप लोग छीन लेते ह व ज़मीदारो के खिलाफ विद्रोह कर रहे ह। वे उनके महलो को आग लगा रहे है उन्हें अपनी ज़मीना से निकाल रहे ह। खान मज़दूर अब इसलिये खानो से कायला नही निकालना चाहते कि वह सब आप हथिया ल । आप लोगा की और अधिक तिजारिया भरने के लिये मज़दूर काम करने को तयार नही ह। वे मशीना को तोड फोड रहे ह। जहाजी आपके माल को सागर म फेंक रहे ह। सनिक आपके लिये काम करना नहा चाहते। विद्वान कमचारी न्यायाधीश और अभिनेता, जनता की आर होते जा रहे ह। वे सभी, जा पहले आपके लिये खटते थ और बदले मे कोडिया पान थे जबकि आप लोग और ज्यादा मालामाल होते जाते थे, व सभी बदकिस्मत, सभी अभाग सभी भूखे खस्ताहाल, यतीम लुज पुज और भिखमग अब आपके मोटी तादवाला और धनियो के खिलाफ जिनक सीने मे दिल की जगह पत्थर है मार्चा लेन को डट गये ह

'मेरे ख्याल म तो यह बेकार बक वक कर रहा है   सरकारी सलाहकार न टाकते हुए कहा।

मगर प्रोस्पेरा न अपनी बात जारी रखा—

पन्द्रह साला म म जनता को आपसे आर आपकी सत्ता से घृणा करना सिखा रहा हू। ओह, कितने अर्से स हम शक्ति बटोर रह ह ! अब आप लोगो की आखिरी घडी आ गयी है '

बन्द करा यह अपनी बकवास ! तीसरा मोटा चीख उठा।

इसे वापिस पिंजरे म भेज दना चाहिये ' दूसरे माटे ने सुझाव दिया।

पहले मोटे न कहा—

"जब तक नट तिबुल को कैद नही कर लिया जाता, तब तक तुम अपने पिंजरे मे ही पडे सडते रहोगे। हम तुम दोना को एकसाथ ही जहन्नुम का चलता करगे। लोग तुम्हारी लाशें देखेंगे तो एक ज़माने तक उन्हें हम से उलझने का ख्याल तक नही आयेगा।"

प्रोस्पेरो चुप हो गया। उसने फिर से सिर झुका लिया।

पहला मोटा कहता गया—

'तुम्हें होश भी है कि किससे भिडने की सोच रहे हो। हम तीनो मोटे बहुत सशक्त ह साधनसम्पन्न हं। हमी तो हर चीज के मालिक ह। म, पहला मोटा हमारे देश मे पैदा होनेवाले सारे अनाज का मालिक हू। सारे कोयले का स्वामी है दूसरा मोटा और तीसरे मोटे ने सारा लोहा खरीद लिया है। हमी सबसे बढ़ चढ़कर अमीर हैं! देश का सबसे अधिक धनी व्यक्ति हमारे मुकाबले मे सौगुना गरीब है। हम अपने सोने से जो भी चाहें वही खरीद सकते ह!

अब बाकी पेटुओ को भी जोश आया। मोटे के शब्दो ने उन्हें दिलेर बना दिया।

इसे पिजरे मे भिजवाइये! पिजरे मे!" वे चिल्लाने लगे।

वापिस चिडियाघर मे!

'पिजरे मे!"

विद्रोही!"

'पिजरे मे!'

सनिक प्रोस्पेरो को ले गये।

"अब हम केक खायेंगे' पहले मोटे ने कहा।

हाय, अब जान गई!' गुब्बारे बेचनेवाले ने सोचा।

सभी की नजरे उसपर टिकी हुई थी। उसने आखें बन्द कर ली। पेटू रग-तरग मे आ गये—

हो-हो-हो!'

हा-हा-हा! क्या गज़ब का केक है! जरा गुब्बारो पर तो नजर डालिये!"

वे तो कमाल ही किये दे रहे ह।"

और यह तोबडा!

इसके क्या कहने हैं!

सभी लोग केक की ओर सरक गये।

इस तोबडे को देखकर बरबस हसी आती है। जाने इसके अन्दर क्या कुछ भरा हुआ है?" किसी ने पूछा और गुब्बारे बेचनेवाले के माथे पर जोर से चपत जमाया।

मिठाइया होगी।'

'या शेम्पेन "

'बहुत खूब! बहुत ही खूब!

लाइये पहले इसका सिर काटकर यह देखें कि इसके अन्दर से क्या निकलता है "

ऊई मा!"

गु बारे बेचनेवाला अपन पर काबू न रख पाया। वह साफ तौर पर चीख उठा — ऊई मा! और उसने आखें खोल दी। जिज्ञासु झटके के साथ पीछे हट गये। इसी समय बरामदे मे किसी बालक की ऊची आवाज गूज उठी —
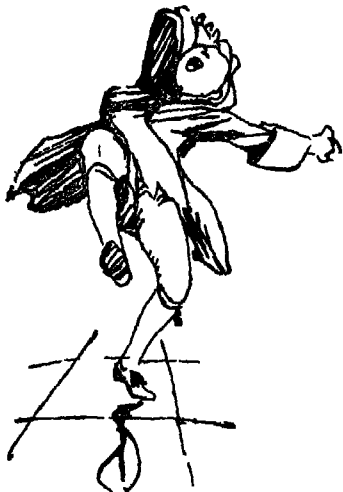
गुडिया! मरी गुडिया!

सभी कान लगाकर सुनने लगे। तीन मोट और सरकारी सलाहकार तो खास तौर पर परेशान हो उठे।

बालक का चीखना रोने मे वदल गया। गुस्स मे आया हुआ बालक बरामदे मे आकर बहुत जोर से रो पडा।

यह क्या मामला है? पहले मोटे ने पूछा। यह तो उत्तराधिकारी टूट्टी रो रहा है!'

यह तो उत्तराधिकारी टूट्टी रो रहा है'' दूसरे और तीसरे मोटे ने एकसाथ दोहराया।

उन तीनो के चेहरों पर हवाइया उडने लगी। वे बुरी तरह सहम गये थे।

सरकारी सलाहकार कुछ मन्त्री और नौकर चाकर बरामदे मे खुलनवाल एक दरवाजे की ओर भागे।

क्या हुआ? क्या हुआ?' हॉल मे सभी ओर ऐसी फुसफुसाहट सुनाई दी।

लडका भागकर हाल मे आया, मन्त्रियो और नौकरो चाकरो को इधर-उधर हटाता हुआ। उसके बाल इधर उधर झूल रहे थे और वह चमकते हुए बढिया जूते पहने था। वह मोटो की ओर भाग गया। वह सिसकिया लेता हुआ कुछ असम्बद्ध श द कह रहा था जो किसी की समझ नही आ रहे थे।

इस लडके की अब मुझ पर नज़र पडी कि पडी, गुब्बारे बेचनवाला घबरा उठा। यह कम्बख्त क्रीम जो मुझे सास लेने या उगली तक भी हिलाना डुलाने नही देती, यकीनन इसे अपनी ओर खीचगी। ज़ाहिर है कि उसे चुप कराने के लिये वे केक का टुकडा काट कर देंगे और उसके साथ-साथ मेरी एडी भी अलग हो जायेगी।'

मगर लडके ने केक की ओर नज़र उठाकर भी न देखा। इतना ही नही, गुब्बार बेचनेवाले के गोल सिर के ऊपर लटक रहे शानदार गुब्बारो की ओर भी उसका ध्यान न गया।

वह फूट फूटकर रो रहा था।

क्या बात है?' पहले मोटे ने पूछा।

उत्तराधिकारी टूट्टी क्यो रो रहा है?" दूसरे मोट ने जानना चाहा।

तीसरे मोटे ने गाल फुला लिये।

उत्तराधिकारी टूट्टी बारह वष का था। तीन मोटो के महल मे उसका पालन शिक्षण हो रहा था। वह तो मानो छोटा सा राजकुमार था। मोटे उत्तराधिकारी चाहते थे। उनका अपना कोई बच्चा नही था। तीन मोटो की सारी दौलत और देश की बागडोर टूट्टी को ही विरासत मे मिलनेवाली थी।

उत्तराधिकारी टूट्टी के आसुओ ने मोटो के दिलो को हथियारसाज़ प्रोस्पेरो के शब्दो से भी अधिक दहला दिया।

लडका गुस्से से मुट्ठिया भीच रहा था, हाथ झटक रहा था, पाव पटक रहा था।

उसके गुस्से और झुझलाहट की कोई हद नही थी।

कारण किसी को मालूम नही था।

लडके के शिक्षक स्तम्भो की ओट से झाक रहे थे हाल मे प्रवेश करते हुए घबराते थे। काली पोशाकें पहने और काले विग लगाये हुए वे धुए से काली हुई लैम्प की चिमनियो के समान लग रहे थे।

आखिर कुछ शान्त होने पर लडके ने बताया कि क्या किस्सा हुआ था।

'मेरी गुडिया मेरी अद्भुत गुडिया टूट गयी है! उन्होने मेरी गुडिया का बुरा हाल कर दिया है। सनिको ने उसमे तलवारे घुसेडी ह   '

वह फिर फूट फूटकर रोने लगा। अपनी छोटी छोटी मुट्ठियो से आसू पोछते हुए वह उन्हे अपने गालो पर फैलाता जा रहा था।

क्या ?! ' मोटे चिल्ला उठे।

क्या ?!

सैनिको ने ?

'गुडिया मे तलवारे घुसेडी ?

' उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया मे ?

और हाल मे उपस्थित सभी लोगो ने मानो गहरी सास लेते हुए धीरे से कहा –

यह नही हो सकता !

सरकारी सलाहकार ने सिर थाम लिया। वही कमजोर दिल का मिल मालिक फिर बेहोश हो गया मगर मोटे के जोर से चीखने चिल्लाने के फलस्वरूप फौरन होश मे आ गया –

दावत खत्म की जाये ! सब काम-काज छोड दिये जाये ! परिषद् के सदस्य बुलाये जायें ! सभी कमचारियो सभी न्यायाधीशो सभी मन्त्रियो सभी जल्लादो को बुलाया जाये ! आज सजाये देने का काम स्थगित किया जाये ! महल मे गद्दार हैं !"

भारी हलचल मच गयी। कुछ ही क्षण बाद महल के दूत सभी दिशाओ मे सरपट घोडे दौडाते नजर आये। पाच मिनट बाद सभी दिशाओ से न्यायाधीश सलाहकार और जल्लाद घोडे दौडाते हुए महल की ओर आने लगे। अदालत चौक मे बागियो को सजा पाते हुए देखने के लिये जमा हुई भीड को वापिस जाना पडा। डोडी पीटनेवालो ने चबूतरे पर खडे हो भीड़ को यह सूचना दी कि एक बहुत जरूरी कारण से बागियो को दण्ड देने का काम अगले दिन के लिये स्थगित कर दिया गया है।

गुब्बारे बेचनेवाले को केक के साथ-साथ ही हाल से बाहर लाया गया। आन की आन में पेटुओ का नशा उतर गया था। उन सब ने उत्तराधिकारी टूट्टी को घेर लिया और उसकी कहानी सुनने लगे।

'म पाक मे घास पर बठा था और गुडिया भी मेरे पास ही बठी थी। हम सूयग्रहण के शरू होने का इन्तजार कर रहे थे। यह बहुत दिलचस्प चीज है। कल मने किताब मे पढा था जब सूयग्रहण होता है तो दिन मे सितारे नजर आते ह

बहुत जोर से सिसकिया लेता हुआ उत्तराधिकारी अपनी बात जारी नही रख पा रहा था। उसकी जगह उसके एक शिक्षक ने सारा किस्सा सुनाया। शिक्षक भी मुश्किल से ही अपनी बात कह पाया, क्योकि वह डर से काप रहा था।

उत्तराधिकारी टूट्टी और उसकी गुडिया के निकट ही म नाक ऊपर को किये हुए धूप मे बठा था। मेरी नाक पर फुसी है और मने सोचा कि सूरज की किरणे मुझे इस भोडी फुसी से निजात दिला देंगी। अचानक वहा कुछ सनिक सामने आ खडे हुए। कोई बारह रहे होगे। वे किसी बात को लेकर आपस मे गर्मागर्म बहस कर रहे थे। हमारे निकट आकर वे रुक गये। उनकी सूरत देखकर दहशत होती थी। उनमे से एक ने उत्तराधिकारी टूट्टी की ओर इशारा करते हुए कहा—'यह बठा है भडिये का बच्चा। तीन मोटे सुअरो के यहा भडिये का बच्चा पाला जा रहा है! ओह! म तो इन शब्दो का अथ समझता था।

ये तीन मोटे सुअर कौन हुए? पहले मोटे ने पूछा।

बाकी दोनों मोटे लाल हो गये। तब पहले मोटे के चेहरे पर भी सुर्खी दौड गयी। अब इन तीनो ने इतने जोर से नाक का इजन चलाना शुरू किया कि बरामदे का शीशे का दरवाजा खुलने और बन्द होने लगा।

'वे उत्तराधिकारी टूट्टी के गिद आकर खडे हो गये। शिक्षक ने बात जारी रखी। 'उन्होने कहा—'तीन सुअरो के यहा लोहे का भेडिये का बच्चा पाला जा रहा है। उत्तराधिकारी टूट्टी, तेरे कौनसें पहलू मे दिल है? उन्होने पूछा उसका दिल निकाल दिया गया है। वे इसे बेहद गुस्सल, शतान सगदिल और जनता से नफरत करनेवाला बनाना चाहते ह जब तीन सुअरो का दम निकल जायेगा तो यह क्रोधी भेडिया उनकी गद्दी सम्भाल लेगा।

आपने उन्हे ऐसी बकवास बन्द करने के लिये क्यो नही कहा ? शिक्षक का कधा हिलाते हुए सरकारी सलाहकार चीख उठा। क्या आप इतना भी न भाप सके कि वे गद्दार थे जो जनता के साथ जा मिले थे ?

शिक्षक की घिग्घी बध गयी। उसने मरे मरे शब्दो मे कहा –

यह तो म समझ रहा था मगर मुझ उनसे दहशत होती थी। वे बहुत गुस्से मे थे। मेरे पास तो सिफ फुसी थी कोई हथियार तो था नही उनके हाथ तलवारो की मूठो पर थे वे कुछ भी कर गुजरने को तयार थे। उनमे से एक ने कहा – यह देखिये यह रही पुतली गुडिया। यह भेडिये का बच्चा गुडिया से खलता है। इसे जीते जागते बालको से दूर रखा जाता है। स्प्रिगवाली गुडिया इसकी दोस्त है। तब एक दूसरा सनिक चीख उठा – मेरी पत्नी और बेटा गाव मे ह ! एक दिन मेरा बेटा तीर-कमान से खल रहा था। उसके तीर से ज़मीदार के बगीचे मे एक नाशपाती बिध गयी। ज़मीदार ने अमीरो की सत्ता का मुह चिढाने के लिये लडके को कोडे लगवाये और उसके नौकरो चाकरो ने मेरी बीवी की खुले आम बेइज्ज़ती की। सनिक शोर मचाने लगे और उत्तराधिकारी टूट्टी के और करीब आ गये। इसी वक्त अपने बेटे का किस्सा सुनानेवाले ने तलवार निकाली और गुडिया मे घुसेड दी। बाकियो ने भी ऐसा ही किया

अब उत्तराधिकारी टूट्टी बहुत ही जोर से रो पडा।

ले तू तो मजा चख ले, भेडिये के बच्चे !' उन्होने कहा। 'बाद को तेरे मोटे सुअरो से भी निपटेंगे !''

कहा ह ये गद्दार ? मोटे चीख उठ।

वे गुडिया फेंक कर पाक मे जा घुसे। उन्होने नारे लगाये – हथियारसाज़ प्रोस्पेरो जिन्दाबाद ! नट तिबुल जिन्दाबाद ! तीन मोटे मुर्दाबाद ! "

सन्तरियो ने उनपर गोलिया क्यो नही चलाइ ? हाल मे उपस्थित सभी लोगो ने जानना चाहा।

अब शिक्षक ने बहुत ही खतरनाक खबर सुनाई –

'सन्तरियो ने अपने टोप हिलाकर उनके लिये शुभकामना की। मने बाड के पीछे से सन्तरियो को उनसे विदा लेते देखा था। उन्होने कहा था – साथियो ! जनता से जाकर कहना कि जल्द ही सारी सेना उनकी ओर हो जायेगी '"

तो यह कुछ हुआ था पाक मे। खतरे की सूचना दी जाने लगी। विश्वसनीय फौजी दस्तो को महल की चौकियो पाक के आने जाने के दरवाज़ो, पुलो और नगर के फाटक पर तनात किया गया।

राज्यीय परिषद की बैठक शुरू हुई। मेहमान घरों को चले गये। महल के बडे डाक्टर

ने तीनो मोटो का वज़न किया। मगर अत्यधिक उत्तजना के बावजूद तीनो मे से किसी की रत्ती भर चर्बी कम नही हुई थी। बडे डाक्टर को गिरफ्तार कर लिया गया और फरमान जारी किया गया कि उसे रोटी और पानी के सिवा कुछ भी न दिया जाये।

उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया पाक मे घास पर पडी मिल गयी। वह सूयग्रहण न देख पाई। बहुत बुरी तरह उसका हुलिया बिगाड दिया गया था।

उत्तराधिकारी टूट्टी किसी भी तरह शान्त नही हो पा रहा था। वह टूटी हुई गुडिया का आलिगन करता हुआ ज़ार-ज़ार आसू बहा रहा था। गुडिया लडकी जसी लगती थी। उसका कद टूट्टी के बराबर था। वह बहुत ही महगी और बडे कलात्मक ढग से बनायी गयी गुडिया थी और बिल्कुल जीती जागती लडकी जसी लगती थी।

अब उसका फ्राक चिथडो मे बदल चुका था और तलवारो के वारो से उसके वक्ष पर काले काले सूराख हो गये थे। एक घटा पहले तक वह बैठ सकती थी खडी हो सकती थी मुस्करा और नाच सकती थी। अब वह महज़ पुतली थी चिथडा के सिवा कुछ न थी। अब गुलाबी रेशमी कपडे के नीचे उसके गले और छाती का टूटा हुआ स्प्रिग ऐसे खरखरा रहा था जसे घटे बजाने के पहले पुरानी दीवालघडी खरखराती है।

वह मर गयी। उत्तराधिकारी टूट्टी ने शोकातुर होते हुए कहा। 'हाय! कितने दुख की बात है! वह मर गयी!'

बालक टूट्टी भेडिये का बच्चा नही था।

इस गुडिया को ठीक करना होगा, सरकारी सलाहकार ने राज्यीय परिषद की बठक मे कहा। उत्तराधिकारी टूट्टी के दुख का पारावार नही। हर कीमत पर इस गुडिया को ठीक करना होगा!

दूसरी खरीद ली जाये मन्त्रियो ने सुझाव दिया।

उत्तराधिकारी टूट्टी दूसरी गुडिया नही चाहता। वह चाहता है कि इसी को जिन्दा किया जाये।

'मगर कौन यह कर सकता है?

म जानता हू उसे सावजनिक शिक्षा के मन्त्री ने कहा।

कौन है वह?

'श्रीमानो, हम भूल गये कि हमारे नगर मे डाक्टर गास्पर आर्नेरी रहता है। यह व्यक्ति तो सभी कुछ कर सकता है। वह उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया को ठीक कर सकता है।

परिषद के सभी सदस्य ख़ुशी से चिल्ला उठे—

'हुर्रा! हुर्रा!'

डाक्टर गास्पर की याद आने पर परिषद के सभी सदस्य एकसाथ गा उठे—

उडकर तारो तक जो जाये।
दुम से पकड लोमडी लाये।।
जो पत्थर से भाप बनाये।
बडे करिश्मे कर दिखलाये।।
जिसके गुण का वार न पार।
अद्भुत है डाक्टर गास्पर।।

उसी समय डाक्टर गास्पर के नाम फरमान जारी किया गया—

श्री डाक्टर गास्पर आर्नेरी

इस पत्र के साथ उत्तराधिकारी टूट्टी की टूटी हुई गुडिया भेजी जा रही है। तीन मोटो की सरकार की राज्यीय परिषद आपको आदेश देती है कि आप कल तक इस गुडिया को ठीक कर दें। अगर यह गुडिया पहले की तरह भली चगी और जीती जागती सी हो जायेगी तो आपको मुह मागा इनाम दिया जायेगा। अगर यह आदेश पूरा नही किया गया तो आपको कडी सजा दी जायेगी।

सरकारी सलाहकार
राज्यीय परिषद् का अध्यक्ष

सरकारी सलाहकार ने हस्ताक्षर किये। वही राज्य की बडी-सी मुहर लगा दी गयी। मुहर गोल थी और उसके बीच मे ठसाठस भरी हुई थैली बनी हुई थी।

महल के सन्तरिया का कप्तान काउट बोनावेन्तूरा दो सन्तरियो को साथ लेकर नगर की ओर रवाना हो गया ताकि डाक्टर गास्पर आर्नेरी को ढूढकर उसे राज्यीय परिषद् का आदेश-पत्र पहुचा दे।

ये लोग घाडो पर सवार थे और उनके पीछ-पीछे घोडा गाडी थी। उसमे एक दरबारी बैठा था। उसकी गोद मे गुडिया थी। गुडिया का घुघराले पटोवाला सिर उसके कधे से टिका हुआ था और बहुत ही करुणाजनक लग रहा था।

उत्तराधिकारी टूट्टी ने रोना बन्द कर दिया। उसे यकीन हो गया कि अगले दिन उसकी गुडिया भली चगी और जिन्दा होकर लौट आयेगी।

इस तरह महल मे वह दिन बहुत चिन्ता और परेशानी मे बीता।

गब्बारे बेचनेवाले का क्या हुआ?

बरे उसे हाल से बाहर ले आये थे यह तो हम जानते है।

वह फिर से मिठाईघर मे पहुच गया।
वहा यह दुघटना हो गयी।
केक लेकर जानेवाले नौकरो मे से एक का पर सन्तरे के छिलके पर जा पडा।
सम्भलना! बाकी नौकर चिल्लाये।
हाय मं गिरा! गुब्बारे बेचनेवाले ने जब अपने सिहासन को डोलते पाया, तो वह चीख उठा।

मगर नौकर अपने को सम्भाल न पाया। वह टाइलो के मजबूत फश पर गिर पडा। वह अपनी लम्बी टागो को पटकते हुए चिल्लाने लगा।

'हुर्रा! रसोइये छोकरे ख़ुश होकर शोर मचाने लगे।

"शतान न हो तो! नौकर और प्लेट के साथ ही फर्श पर गिरते हुए गुब्बारे बेचनेवाले ने हताश और दुखी होते हुए कहा।
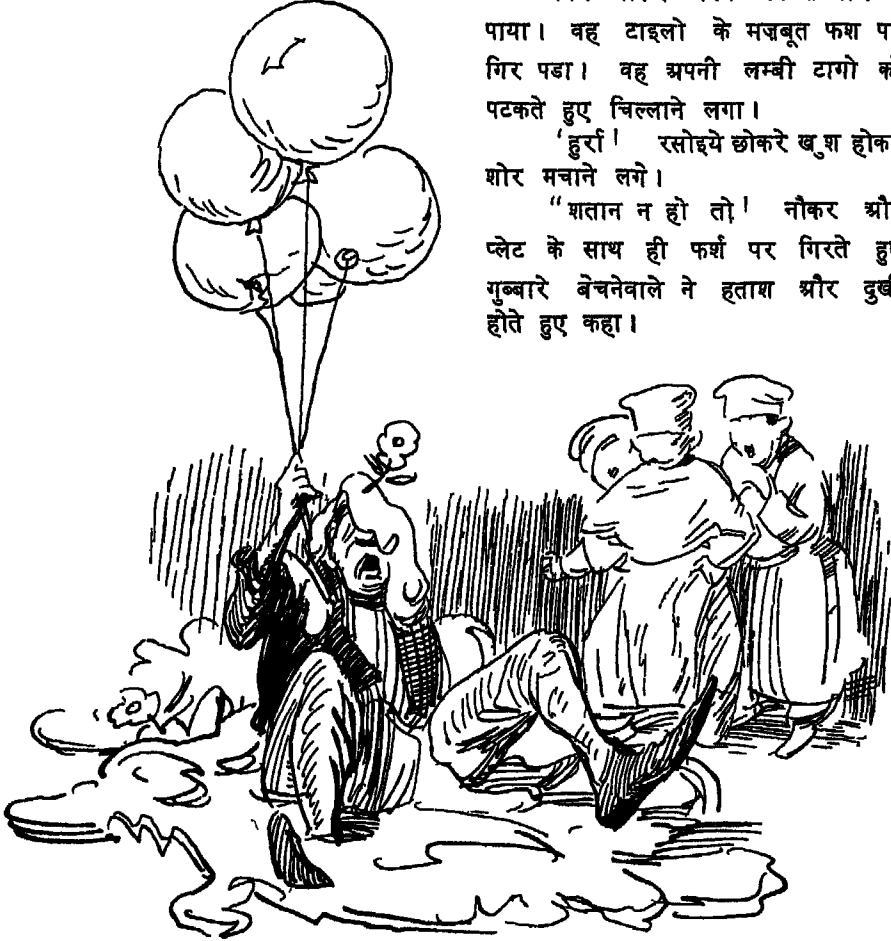
बडी सारी प्लेट के टकडे टुकड हो गये। फेंटी हुई फूली फूली क्रीम के गोले सभी दिशाओ मे बिखर गये। नौकर उछलकर खडा हुआ और भाग गया।

रसोइये छोकरे उछलने कूदने नाचने और शोर मचाने लगे।

गुब्बारे बेचनेवाला प्लेट के टुकडा, रसभरी के शरबत के डबरे और खूब फेंटी हुई बढिया क्रीम के बादलो से घिरा हुआ बठा था। क्रीम के ये बादल खराब हुए केक पर अब पिघलते जा रहे थे।

गुब्बारे बेचनेवाले न यह देखकर राहत की सास ली कि मिठाईघर मे सिफ रसोइये छोकरे ही थे तीनो बड हलवाइ नहा थे।

रसोइये छोकरा से म अपना काम निकाल लूगा। वे मुझे भागने मे मदद देंगे। मेरे ग बारे मुझें मुसीबत से उबार लग। उसने सोचा।

वह गुब्बारा वाली रस्सी का कसकर पकड रहा।

छोकरो ने उसे सभी आर मे घर लिया। उनकी ललचायी नजरे बता रही थी कि गुब्बारे उनके लिये सबसे बडी दौलत ह। उनमे से प्रत्येक केवल एक गु बारा पा जाने का सपना देखता है वह इसे अपनी बहुन वडी खुशकिस्मती समझगा।

इसलिये उसने कहा—

'म इन जान जोखिम के कारनामा से तग आ गया हू। म न तो छोटा लडका हू और न ही कोई सूरमा। हवा मे उडत फिरना मुझ पस द नही। तीन मोटो से मेरी जान कापती है। दावती केक की खूबसूरती बढाने का हुनर मुझे नही आता। म तो जी जान से बस यही चाहता हू कि जल्दी से जल्दी इम महल से निकल जाऊ।

रसोइये छोकरे ने हसना ब द कर दिया।

गुब्बारे हिल डुल रहे थे हवा म लहरा रहे थे। हिलते डुलते गुब्बारो पर पडती हुई सूरज की किरणो से उनके अ दर कभा नीला कभी पीला और कभी लाल शोला सा भडक उठता। बहुत ही गजब के थे ये गु बारे।

तुम लोग यहा से भाग निकलन म मेरी मदद कर सकते हो? रस्सी को झटके के साथ खीचते हुए गुब्बारे बचनेवाले ने कहा।

'हा कर सकते ह " एक छाकरे ने धीरे स कहा और साथ ही यह भी जोड दिया— अपने गब्बारे हमे दे दीजिय।'

गब्बारे बचनेवाला यही ता चाहता था।

अच्छा एसा ही सही उसने अपनी खुशी छिपाते हुए भरी सी आवाज मे उत्तर दिया। म तयार हू। बेशक गु बारे बहुत महगे हं। मझे इनकी सख्त जरूरत है फिर भी

म राजी हू। तुम लोग मुझ बहुत पसन्द हो। तुम बड खशमिजाज हो तुम्हारे चेहरो पर निश्छलता है तुम खुलकर हसते हो।"

तुम सब पर शतान की मार! ' साथ ही उसने मन ही मन यह भी कहा।

'बडा हलवाई इस समय रसदखाने मे है,' छोकरे ने कहा। 'वह शाम की चाय के लिये बिस्कुट बनाने की सामग्री तोल रहा है। हमे उसके लौटने से पहले पहले यह काम करना चाहिये।

'यह तुम ठीक कहते हो, गुब्बारे बचनेवाले ने सहमति प्रकट की। देर करने मे कोई तुक नही।'

सुनिये तो! म एक राज जाताता हू।"

इतना कहकर यह छोकरा ताबे के बड से देग के पास गया जो टाइलो के स्टड पर रखा हुआ था। उसने देग का ढक्कन उठाकर अधिकारपूण ढग से कहा—

लाइये गुब्बारे।'

'तेरा दिमाग चल गया है क्या!" गुब्बारे बेचनेवाला झल्ला उठा। "देग से मुझे क्या लेना देना है? म भागना चाहता हू। तुम उल्टे क्या यह चाहते हो कि म देग मे जा बठू?"

'हा, यही तो।'

'देग मे?'

'हा, देग मे।'

और उसके बाद?'

"नसके बाद आप खुद ही देख लेगे कि क्या कमाल होता है। चलिये घुसिये देग मे। भागने क गही सबसे बढिया उपाय है।

देग इतना बडा था कि दुबले पतले गुब्बारे बचनेवाले की तो बात ही क्या तीनो मोटो मे से सबसे ज्यादा मोटा भी उसमे समा सकता था।

अगर वक्त रहते मुसीबत से पिड छुडाना चाहते है, तो जल्दी से इसमे घुस जाइये।

गुब्बारे बेचनेवाले ने देग मे झाककर देखा। उसे उसका तल नजर न आया। उसने कुए की भाति उसमे गहरा काला गढा देखा।

"तो ऐसा ही सही,' गुब्बारे बेचनेवाले ने गहरी सास ली। अगर देग मे ही घुसना जरूरी है, तो यही सही। हवाई उडान और क्रीम के स्नान से तो यह कुछ बुरा नही। अच्छा तो नमस्कार, छोटे छोटे शतानो! यह लो मेरी आजादी की कीमत।

इतना कहकर उसने गाठ खोली और छोकरो मे गुब्बारे बाट दिये। हरेक को गुब्बारे मिल गये अलग अलग धागे से बध हुए।

इसके बाद वह टागें अन्दर घुसेडते हुए अपने खास भद्दे ढग से देग मे घुसा। छोकरे ने ढक्कन बन्द कर दिया।

गुब्बारे! गुब्बारे!" छोकरे खशी से शोर मचाने लगे।

वे मिठाईघर की खिडकियो के नीचे पार्क मे आ खडे हुए।

यहा खुली हवा मे गुब्बारो के साथ खेलना कही अधिक दिलचस्प था।

अचानक मिठाईघर की तीनो खिडकियो मे से तीना हलवाइयो ने बाहर झाका।

यह क्या हो रहा है?! वे तीनो चीख उठे। यह कसी बदतमीजी है? फौरन वापिस चलो!

हलवाइयो की डाट से इन छोकरो की तो जान ही निकल गयी। डर के मारे गुब्बारो के धागे उनके हाथ से छूट गये।

उनकी खुशी हवा मे उड गयी।

बीस के बीस गुबारे बडी तेजी से चमकते हुए निमल नीलाकाश मे ऊचे चढते गये। रसोइये छोकरे फूलो के बीच मुह खोले हुए घास पर खडे थे। सफेद टोपियो वाले अपने सिरो को पीछे की ओर फेंके हुए वे उन्हे ताक रहे थे।

पाचवां अध्याय

नीग्रो और पत्तागोभी का कल्ला

आपको यह तो याद होगा कि डाक्टर गास्पर की हगामो और खतरो की रात का कैसे अन्त हुआ था? यही कि उसके कमरे की अगीठी मे से नट तिबुल निकलकर सामने आ खडा हुआ था।

सुबह होने पर उन दोनों ने वहा क्या किया, यह कोई नही जानता। मौसी गानी मेड दिन भर की उत्तेजना और डाक्टर गास्पर की प्रतीक्षा से बहुत थक गयी थी और अब गहरी नीद सो रही थी। उसे सपने मे मुर्गी दिखाई दी।

अगले दिन यानी उस दिन जब गुबारो वाला उडता हुआ तीन मोटो के महल में जा पहुचा और सनिको ने उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया मे तलवारे घुसेडी, मौसी गानीमेड को एक बडी परेशानी का सामना करना पडा। हुआ यह कि चूहेदानी मे बन्द चूहा निकल भागा। पिछली रात यही चूहा आध सेर मुरब्बा चट कर गया था। इस से पहलेवाली रात को उसने कारनेशन फूलो वाला गिलास गिरा दिया था। गिलास चूरचूर हो गया था और फूलो से न

जाने क्या दवाई की सी ग‍ध आने लगी थी। उस भयानक रात को चूहा पिजरे मे आ फसा था।

सुबह उठते ही मौमी गानीमेड ने चूहेदानी को हाथ मे उठा लिया। चूहा ऐसे निश्चिन्त भाव से बठा था मानो कह रहा हो कि पहली बार थोडे ही पिजरे मे आया हू। बहुत ही शतान चूहा था वह।

जो तेरे लिए न हो अब तू वह मिठाई कभी न खाना! मौसी गानीमेड ने चूहेदानी ऐसी जगह पर रखते हुए कहा जहा से वह दिखाई दे सके।

मौसी गानीमेड न कपडे पहने और डाक्टर गास्पर की प्रयोगशाला की ओर चल दी। वह डाक्टर का यह खुशखबरी सुनाना चाहती थी। पिछली सुबह को जब उसने डाक्टर को यह बुरी खबर सुनाई थी कि चूहा मुरब्बा चट कर गया है तो डाक्टर ने हमदर्दी जाहिर की थी और कहा था—

चूहे को मुरब्बा इसलिये अच्छा लगता है कि उसमे बहुत से तेजाब होते ह।'

यह सुनकर मासी गानीमेड शान्त हो गई थी।

चूहे को मेरे तेजाव अच्छ लगते ह अब देखेंगे कि उसे मेरी चूहेदानी भी अच्छी लगती या नही।

मौसी गानीमेड डाक्टर की प्रयोगशाला के दरवाज पर पहुची। उसके हाथ मे चूहेदानी थी।

अभी बहुत ही सवरा था। खुली खिडकी मे से हरियाली झलक दिखा रही थी। वह तेज हवा जो गुब्बारे बचनवाले को ल उडी थी बाद मे चली।

दरवाजे के पीछे से कुछ आहट मिल रही थी।

ओह, बचारे डाक्टर! मौसी गानीमेड ने साचा। लगता है रात भर बिल्कुल सोये ही नही!

उसने दरवाज पर दस्तक दी।

डाक्टर ने अन्दर से कुछ कहा मगर वह मौसी का सुनाई नही दिया।

दरवाजा खुला।

डाक्टर गास्पर दहलीज के पास खड थ। प्रयोगशाला म से जले हुए काक की सी गन्ध आ रही थी। कोने म स्पिरिट लम्प का छोटा सा लाल शोला झलमला रहा था। जाहिर था कि बची बचायी रात के समय डाक्टर कोई वज्ञानिक काय करते रहे थे।

नमस्ते! डाक्टर ने खुशी से कहा।

मौसी गानीमेड ने डाक्टर को दिखाने के लिए चूहदानी ऊपर को उठाई। चूहा अपना नाक सिकोडते हुए कमरे की गन्ध को सूघ रहा था।

मने चूहा पकड लिया!

'सच! डाक्टर बहुत खुश हुए। दिखाइये तो!

मौसी गानीमेड खिडकी की तरफ लपकी।

'यह रहा!

मौसी ने चूहेदानी डाक्टर की ओर बढाई। अचानक उसे वहा एक नीग्रो दिखाई दिया। खिडकी के पास रखी हुई जिस पेटी पर सावधानी से!" लिखा हुआ था, उसी पर एक सुन्दर नीग्रो बठा था।

नीग्रो लाल बिरजस के सिवा कुछ भी न पहने था।

नीग्रो का रग काला, बैंगनी, बादामी था। उसका बदन चमक रहा था।

वह पाइप के कश लगा रहा था।

मौसी गानीमेड इतने जोर से ऊई मा! कहकर चीख उठी कि बस दो टुकडे होते होते बची। वह लट्टू की तरह घूमी और उसने कनकौवे की तरह हाथ झटके। यह सब करते हुए उसस कुछ ऐसी असावधानी हुई कि चूहेदानी का मुह खुल गया और चूहा निकलकर न जाने कहा गायब हो गया।

इतनी अधिक डर गयी थी मौसी गानीमेड!

नीग्रो ठठाकर जोर से हस दिया। उसकी लम्बी टागें फली हुई थी और उसके लाल जूते बडी-बडी सूखी हुई लाल मिर्चों जसे प्रतीत हो रहे थे।

नीग्रो के दातो के बीच पाइप तूफान मे झूलती हुई टहनी की भाति हिल डुल रही थी।

डाक्टर भी हस रहा था और उसकी नाक पर टिका हुआ नया चश्मा ऊपर-नीचे हो रहा था।

मौसी गानीमेड तीर की तरह कमरे से बाहर निकल गयी।

'चूहा!' वह चिल्लाई। चूहा! मिठाई! नीग्रो!"

डाक्टर गास्पर उसकी ओर लपके।

मौसी गानीमेड ' उसे दिलासा देते हुए डाक्टर ने कहा। 'आप बेकार ही परेशान न हो। म आपसे अपने नये तजरबे की चर्चा करना भूल गया मगर आप ऐसी आशा तो कर हो सकती हैं मैं तो ठहरा वज्ञानिक, विभिन्न विज्ञानो का विशेषज्ञ तरह-तरह की अनूठी चीजो का माहिर। म तो सभी तरह के तजरबे करता रहता हू। मेरी प्रयोगशाला मे नीग्रो ही नही हाथी भी नजर आ सकता है। मौसी गानीमेड मौसी गानीमेड नीग्रो की बात नीग्रो के साथ रही आमलेट की आमलेट के साथ हम नाशते का इन्तजार कर रहे हैं। मेरे नीग्रो दोस्त को बहुत-से अडो का आमलेट पसन्द है "

'चूहे को तेजाब पसन्द ह सहमी हुई मौसी गानीमेड फुसफुसायी 'और नीग्रो को आमलेट पसन्द है "

हा ऐसा ही है। आमलेट ता अभी ले आइये और चूहे की चिन्ता कीजियेगा रात को। रात को वह काबू मे आ जायेगा मौसी गानीमेड। आज़ाद रहकर वह करेगा भी क्या? मिठाई तो वह चट कर ही चुका है।'

मौसी गानीमेड रोई और उसने नमक की जगह अडो मे अपन आसू मिला दिये। उन में ऐसी तलखी थी कि उन्होने मिर्चों का काम पूरा किया।

अच्छा किया कि काफी मिर्चे डाल दी। बहुत जायकदार वना है। आमलेट को चट करते हुए नीग्रो ने कहा।

मौसी गानीमेड ने दिल मज़बूत करनवाली दवाइ का कुछ बूद पी जिनम से अब न जाने क्यो कारनेशन फूलो की गध आ रही थी। शायद आसुआ के कारण।

बाद को उसने डाक्टर गास्पर को गली मे जात दखा। नया गुलूबन्द लगाये नयी छडी लिये और नये जूते पहने (बेशक वास्तव मे पुरान जूता को नयी लाल एडिया लगी हुई थी) वे खूब जच रहे थे।

उनके साथ-साथ नीग्रो चल रहा था।

मौसी गानीमेड ने कसकर आख मूद ली और फश पर बठ गया। वास्तव मे फश पर नही बिल्ली के ऊपर जो डरकर जोर ज़ोर से म्याऊ म्याऊ कर उठी। मौसी गानीमेड आप से बाहर हो गयी और उसने बिल्ली की पिटाई कर डाली। एक तो इसलिए कि वह हर समय रास्ते मे आती रहती थी और दूसरे इसलिये कि वह चूहे को भी नही पकड पायी थी।

इसी बीच चूहा डाक्टर गास्पर की प्रयोगशाला से भागकर मौसी गानीमेड की दराज़दार अलमारी मे जा घुसा था और मिठाई की प्यारी प्यारी याद करता हुआ बादामो के बिस्कुट हडपता जा रहा था।

डाक्टर गास्पर आर्नेरी छाया की गली मे रहता था। बायी ओर मुडकर साधवी लिज़वेता के कूचे मे पहुचा जा सकता था। वहा से आगे वह गली आती थी जो बिजली गिरने के कारण नष्ट हुए बलूत के लिये मशहूर थी। इस गली से पाच मिनट तक और चलने पर व्यक्ति चौदहवें बाज़ार मे पहुच जाता था।

डाक्टर गास्पर और नीग्रो उधर ही चल दिये। हवा तेज़ हो गयी थी। जला हुआ बलूत हवा के झोको मे झूले की तरह झूल-झूल जाता था। एक इश्तिहार चिपकानवाले को अपना काम करने मे बडी कठिनाई का सामना करना पड रहा था। बडा सा इश्तिहार उसके काबू से बाहर होता हुआ उसके मुह पर फडफडा रहा था। दूर से ऐसा लगता था मानो कोई व्यक्ति सफेद नेप्किन से मुह पोछ रहा हो।

आखिर उसने बाड पर इश्तिहार चिपका ही दिया।

डाक्टर गास्पर ने इश्तिहार पढा जिसमे लिखा था—

आइये!

आइये!

आइये!

आज तमाशा देखने आइये!

तीन मोटो की सरकार ने लोगों के लिए
खेल तमाशे की व्यवस्था की है!

जल्दी कीजिये!

जल्दी कीजिये!

जल्दी कीजिये!

चौदहवे बाजार मे पहुचिये!

अब सारी बात समझ मे आ गयी डाक्टर गास्पर ने कहा। आज अदालत चौक मे बागियो को सजा दी जानेवाली है। तीन मोटो की सरकार के जल्लाद उन लोगो के सिर कलम करेगे जिन्होने अमीरो और पेटुओ की सत्ता के खिलाफ आवाज़ उठाई थी। तीन मोटे जनता की आखो मे धूल झोकना चाहते ह। उन्हे इस बात का डर है कि अदालत चौक मे जमा होनेवाले लोग कही जल्लादो के तख्ते न तोड डालें, जल्लादो की हत्या न कर दें और अपने उन भाइयो को आज़ाद न करा लें जिन्हे मौत की सजा देने की घोषणा की जा चुकी है। इसीलिये उन्होने लोगो के मनोरजन की व्यवस्था की है। वे चाहते ह कि लोग आज दी जानेवाली सजाओ के बारे मे बिल्कुल भूल ही जायें।

डाक्टर गास्पर और उनका नीग्रो साथी बाज़ार चौक मे पहुचे। मडपो के गिद लोगो की भारी रेलपेल थी। मगर वहा डाक्टर गास्पर को न तो कोई बाका छला नजर आया, न कोई बनी ठनी महिला जो सुनहरी मछलियो और अगूरो की आभावाली बढिया पोशाक पहने हो। वहा कोई जाना माना बुजुग भी नही था जो स्वणमढी पालकी मे बठकर आया हो न कोई एसा सौदागर ही था जिसकी बगल मे चमड की बडी-सी थली लटक रही हो।

यहा नगर के बाहर गन्दे मन्दे घरो मे रहनेवाले गरीब लोग—कारीगर मिस्त्री जौ की रोटिया बेचनेवाले रोजनदारिनें कुली बूढी औरते भिखमगे और लुज पुज ही दिखाई दे रहे थे। पुराने और जीर्ण शीर्ण भूरे कपडो मे कही-कही केवल हरे कफ, रग बिरगे लबादे या रग बिरग रिबन नजर आ जाते थे।

बूढी औरतो के पके हुए बाल नमदे की तरह तेज हवा मे उड रहे थे, आखो मे पानी आ रहा था। भिखमगो के बादामी रग के चिथड फडफडा रहे थे।

सभी के चेहरो पर तनाव था मभी यह समझ रह थे कि कोई न कोई अनहोनी बात होनेवाली है।

"अदालत चौक मे सजाय दी जायेगी लोग कह रह थे वहा हमारे साथियो के सिर कलम किये जायेंग और यहा वे मसखरे उछल-कूद मचायेंग जिनकी तीन मोटो ने खूब मुट्ठी गम की है।

आओ, अदालत चौक म चलें! लोग चिल्लाये।

हमारे पास तो हथियार नही ह। हमारे पास पिस्तौल और तलवार नही ह। मगर अदालत चौक के गिद सनिका का तिहरा पहरा है।

सनिक अभी तो उनका साथ द रहे ह। उन्हाने हम पर गोलिया चलाइ। पर खर कोई बात नही! आज नही तो कल अपन मालिका को छोडकर हमारा साथ देंगे।

अभी पिछली रात ही एक सनिक न सितारे के चौक मे अपन अफ्सर को गोली का निशाना बना दिया। इस तरह उसने नट तिबुल की जान बचाई।

तिबुल कहा है? वह बचकर भाग गया या नही?

मालूम नही। सनिक सारी रात और पौ फटने तक मजदूरो के घरो को आग की नजर करते रहे। वे तिबुल को ढूढ लेना चाहते थे।

डाक्टर गास्पर और नीग्रो मडपो के करीब पहुचे। तमाशा अभी शुरू नही हुआ था। फूलो के छापेवाले पर्दों और तख्तो के पीछे से लोगो की आवाजें घटियो की टनटनाहट बासुरियो की गूज और कुछ सरसराने, किकियाने और चीखने चिल्लाने की आवाजें सुनाई दे रही थी। वहा अभिनेता खेल-तमाशे के लिए तयार हो रहे थे।

पर्दा हटा और एक चेहरा दिखाई दिया। यह एक स्पेनी था जिसे पिस्तौल की निशानेबाजी मे कमाल हासिल था। उसके बडे-बडे गलमुच्छे थे और एक आख की पुतली हिल-डुल रही थी।

'ओह, नीग्रो को देखकर उसने कहा। 'तुम भी इस तमाशे मे हिस्सा ले रहे हो? कितनी रकम मिली है?"

नीग्रो चुप रहा।

'मुझे तो दस स्वण मुद्रायें मिली हूं!" स्पेनी ने डीग हाकते हुए कहा। उसने नीग्रो को भी अभिनेता ही समझा। "इधर आओ,' उसने रहस्यपूर्ण मुद्रा बनाते हुए फुसफुसाकर कहा।

नीग्रो मच पर चढ गया। स्पेनी ने उसे राज बताया। राज यह था कि तीन मोटो ने सौ अभिनेताओ की जेब गर्म करके उन्हें बाजारो मे तरह-तरह के खेल-तमाशे दिखाने और साथ ही अमीरो तथा पेटुओ की सत्ता की बडाई और विद्रोहियो, हथियारसाज प्रोस्पेरो और नट तिबुल की बुराई करने का काम सौंपा था।

'उन्होने मदारियो, जानवर सधानेवालों, मसखरो, विचित्र आवाजें निकालनेवालो और नतको का बडा सा दल इस काम मे जुटाया है सभी की मुट्ठिया गर्म की गयी हैं।'

"क्या सभी अभिनेता तीन मोटो की तारीफ करने को राजी हो गये हैं?' डाक्टर गास्पर ने पूछा।

स्पेनी ने आवाज और धीमी कर ली—

"शी!" उसने होठो पर उगली रखते हुए कहा। "यह बहुत धीमे से कहने की बात है। बहुतो ने इन्कार कर दिया। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।'

नीग्रो का खून खौलने लगा।

इसी समय सगीत गूज उठा। कुछ मडपो मे तमाशा शुरू हो गया। भीड इधर-उधर हिलने-डुलने लगी।

'दशकगण!" लकडी के ऊचे चबूतरे पर खडे हुए एक मसखरे ने चीखते हुए कहा। 'दर्शकगण! म आपको बधाई देता हू "

वह लोगो के चुप हो जाने की प्रतीक्षा करता हुआ खामोश हो गया। उसके चेहरे से आटा झड झडकर गिर रहा था।

'दर्शकगण म आपको आज के विशेष खुशी के अवसर पर बधाई देता हू। आज हमारे प्यारे, लाल लाल गालो वाले तीन मोटों के जल्लाद दुष्ट विद्रोहियो के सिर कलम करेंगे

वह अपनी बात पूरी न कर पाया। इसी समय किसी कारीगर ने बची हुई रोटी उसकी ओर फेंकी। वह उसके मुह मे जा गिरी।

'ग-ग-ग-ग-ग '

मसखरे ने जोर लगाते हुए अपनी बात पूरी करने की कोशिश की, मगर बेसूद। अधपकी रोटी उसके मुह मे चिपक गयी। उसने हाथ झटके और अटपटे से मुह बनाये।

शाबाश! यह इसी लायक था!" लोग चिल्ला उठे।

मसखरा भागकर लकडी की दीवार के पीछे गायब हो गया।

'कमीना कही का! तीन मोटो का नमक हलाल करना चाहता था! मुट्ठी गम कर दी गयी इसलिये उन लोगों पर कीचड उछालना चाहता था जिन्होने हमारी आज़ादी के लिये मौत को गले लगाया!"

सगीत बहुत ऊचा हो गया। अन्य कई आरकेस्ट्रा भी शामिल हो गये—नौ बासुरिया तीन बिगुल, तीन ढोल और एक वायलिन जिसके स्वरो से दात मे दद की अनुभूति-सी होने लगती थी, एकसाथ बज रहे थ।

मडपो के प्रबधको ने भीड के शोर को इस सगीत मे डुबो देना चाहा।

'शायद हमारे अभिनेता इन रोटियो से डर जायेंगे ' उनमे से एक ने कहा। ' हमे तो ऐसे ज़ाहिर करना चाहिए मानो कुछ हुआ ही न हो।"

'आइये! इधर आइये! खेल शुरू होता है

एक दूसरे मडप का नाम था 'ल्रोजन का घोडा'।

पर्दे के पीछे से मनेजर सामने आया। वह हरे रग का ऊचा ऊनी टोप पहने था और उसके कोट पर ताबे के गोल-गोल बटन लगे हुए थे। उसके गालो पर बहुत-सा रग मला गया था और वे बिल्कुल लाल-लाल दिखाई दे रहे थे।

'ज़रा चुप हो जाइये उसने ऐसे कहा मानो जर्मन मे बोल रहा था।' ज़रा चुप हो जाइये! हमारा तमाशा देखने लायक है!"

कुछ लोग चुप हो गये।

आज के पव के विशेष अवसर पर हमने पहलवान लापीतूप को निमन्त्रित किया है!"

"ता-ती-तू-ता!' बिगुल ने मानो नाम दोहराया।

बताशो ने मानो तालिया बजायी।

पहलवान लापीतूप आपको अपनी ताकत क कमाल दिखायेगा "

आरकेस्ट्रा जोर से गूज उठा। पर्दा हटा। लापीतूप मच पर आया। गुलाबी बिरजस पहने हुए यह देव दानव वास्तव मे ही बहुत शक्ति शाली प्रतीत हुआ।

वह फू फा कर रहा था और साड की तरह सिर झुकाये था। त्वचा के नीचे उसकी पेशिया अजगर द्वारा निगने हुए खरगोशा की भाति ऊपर नीचे हिल डुल रही था।

सहायका न वडे-बड वाट लाकर मच पर फेंक दिये। तख्ते तो टूटते टूटते ही बचे। धल का बादल ऊपर उठा। बाजार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लोगो की धीमी सी फुसफुसाहट सुनाई दी।

पहलवान ने अपना कमाल दिखाना शुरू किया। उसने दोनो हाथो मे एक एक बाट उठाया, उ हें गेंद की तरह उछाला साधा और फिर इतने जोर से आपस मे टकराया कि चिनगारिया चमक उठीं।

'देखा आपने!' उसने कहा। "एसे ही तीन मोटे हथियारसाज प्रोस्पेरो और नट तिबुल की खोपडिया टकराकर उनका कचूमर निकाल देंगे।'

यह पहलवान भी तीन मोटो की स्वण मुद्राओ के बदले में अपनी आत्मा बेच चुका था।

"हा-हा-हा!" अपने मजाक से ख़ुश होते हुए वह ठठाकर हस दिया।

वह जानता था कि उस पर रोटी फेंकने की हिम्मत किसी को नही होगी। सभी तो उसकी ताकत को देख रहे थे।

गहरी खामोशी छा गयी थी। उस खामोशी मे नीग्रो की आवाज साफ तौर पर गूज उठी। सभी के सिर उसकी ओर घूम गये।

क्या कहा था तुमने?" मच की पैडी पर पाव रखते हुए नीग्रो ने पूछा।

'मने कहा था कि तीन मोटे हथियारसाज़ प्रोस्पेरो और नट तिबुल की खोपडिया टकराकर उनका कचूमर निकाल देंगे।'

'ज़बान को लगाम दो!"

नीग्रो ने इत्मीनान और कडाई से, मगर धीरे से कहा।

'तुम कौन हो रे, काले-कलूटे? पहलवान बिगडा।

उसने बाट फेंककर कूल्हो पर हाथ रख लिये।

नीग्रो मच पर जा चढा।

तुम बहुत ताकतवर हो मगर कमीने भी कुछ कम नही। बहतर है तुम यह बताओ कि तुम हो कौन? जनता पर फ ब्तया कसने का हक तुम्हे किसने दिया? म तुम्हे जानता हू। तुम लुहार के बेटे हो। तुम्हारा बाप अभी तक कारखाने मे काम करता है। तुम्हारी बहन का नाम एली है। वह धोबिन है। वह अमीरो के कपड धोती है। बहुत मुमकिन है कि सनिको ने कल उसे गोली का निशाना बना दिया हो और तुम गद्दार हो!

पहलवान स्तम्भित रह गया। नीग्रो ने तो सचमुच हर बात सही कही थी। पहलवान की तो अक्ल चकरा गयी थी।

'चलते बनो यहा से!' नीग्रो चिल्लाया।

पहलवान अब सम्भला। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा। उसने घूसे तान लिये।

'तुम्हे मुझे हुक्म देने का कोई हक नही है! वह मुश्किल से इतना ही कह पाया। "म तुम्हे नही जानता। तुम शतान हो!"

"चलते बनो यहा से! म तीन तक गिनता हू। एक!'

भीड सकते मे आ गयी। नीग्रो पहलवान से कद मे छोटा और शरीर मे एक तिहाई था। मगर फिर भी किसी को इस बात मे रत्ती भर स देह नही था कि अगर हाथापाई की नौबत आ गयी तो नीग्रो ही बाज़ी मार जायेगा। वह इतना फैसलाकुन और सजीदा नज़र आ रहा था इतना भरोसा था उसे अपनी ताकत पर।

दो!'

पहलवान ने गदन तान ली।

"शतान!" वह फुसफुसाया।

'तीन!"

पहलवान ग़ायब हो गया। बहुत-से लोगो ने तो कसकर आखें मूद लीं। उ हे तो उम्मीद थी कि पहलवान ज़ोर का वार करेगा। मगर जब उ होने आखें खोली तो पहलवान को ग़ायब पाया। वह पलक झपकते मे दीवार के पीछे जाकर ओझल हो गया था।

इस तरह से लोग तीन मोटो को चलता कर देंगे! नीग्रो ने हाथ ऊचे कर हसते हुए कहा।

लोगो की खुशी का पारावार न रहा। उन्होने तालिया बजायी और हवा में टोपिया उछाली।

'जय जनता!

शाबाश! शाबाश!

केवल डाक्टर गास्पर ही असन्तोष ज़ाहिर करते हुए सिर हिला रहे थे। वे किस बात से नाखुश थे, यह स्पष्ट नही था।

यह कौन है? कौन है यह? यह नीग्रो?" दशको ने जानना चाहा।

क्या यह भी अभिनेता है? '

हमने तो इसे पहले कभी नही देखा!'

"कौन हो तुम?'

क्यो तुम ने जनता की हिमायत की?"

ज़रा रास्ता दीजिये! रास्ता दीजिये!

चिथडे पहने हुए एक व्यक्ति भीड को चीरकर आगे बढा रहा था। यह वही भिखमगा था जो पिछली शाम को मालिनो और कोचवानो से बातचीत करता रहा था। डाक्टर गास्पर ने उसे पहचान लिया।

"ज़रा मेरी बात सुनिये," भिखमगे ने चिल्लाकर कहा। 'क्या आप लोग इतना भी नही समझ रहे हैं कि हमारी आखो मे धूल झोंकी जा रही है? यह नीग्रो भी पहलवान लापीतूप की तरह ही अभिनेता है। ये एक ही थली के चट्टे-बट्टे ह। इसने भी तीन मोटो का माल खाया है!

नीग्रो ने मुट्ठिया भीच लीं।

भीड की खुशी गुस्से मे बदल गयी।

बिल्कुल ऐसा ही है! एक बदमाश ने दूसरे बदमाश को भगा दिया है।"

'उसे डर था कि हम उसके साथी की पिटाई कर देंगे, इसलिए उसने हम लोगो का उल्लू बनाया है।

"दफा हो जाओ यहा से!"

'नीच!"

गद्दार!'

डाक्टर गास्पर कुछ कहना, भीड़ को शान्त करना चाहते थे मगर देर हो चुकी थी। कोई बारह व्यक्तियो ने मच पर आकर नीग्रो को घेर लिया।

'इसकी खूब पिटाई करो!' कोई बुढ़िया चिल्लाई।

नीग्रो ने हाथ बढाया। वह शान्त था।

ज़रा इत्मीनान कीजिये!'

लोगो का शोर चीख चिल्लाहट और सीटिया नीग्रो की आवाज़ मे दब गयी। खामोशी छा गयी और उस खामोशी में नीग्रो ने शान्त भाव से साफ-साफ कहा—

"मं नट तिबुल हू।"

लोग हक्के-बक्के रह गये।

जिन लोगो ने तिबुल को घेर रखा था वे पीछे हट गये।

"आह!" भीड ने गहरी सास ली।

सकडो लोग आश्चर्य से सिहरे और स्तम्भित होकर रह गये।

केवल एक ही व्यक्ति ने बदहवासी मे पूछा—

"तो तुम काले क्यो हो?"

"यह डाक्टर गास्पर आर्नेरी से पूछिये! उसने मुस्कराकर डाक्टर की ओर सकेत किया।

"निस्सन्देह यह तिबुल ही हैं।

तिबुल!"

"हुर्रा! तिबुल सही-सलामत है! तिबुल जि़न्दा है! तिबुल हमारे बीच है!"

"तिबुल जिंदाबाद!"

मगर खुशी से नारे लगाते हुए लोग अचानक ही चुप हो गये। अप्रत्याशित कोई बुरी बात हो गयी थी। पीछे खडे लोगो में घबराहट फल गयी। लोग सभी दिशाओं मे तितर बितर होने लगे।

'खामोश! खामोश हो जाओ!

'तिबुल भागो अपनी जान बचाओ!'

चौक मे तीन घुडसवार आये और उनके पीछे एक घोडा-गाडी नमूदार हुई।

ये घुडसवार थे—महल के सनिको का कप्तान काउट बोनावेन्तूरा और उसके दो सनिक। घोडा-गाडी मे महल का एक कमचारी उत्तराधिकारी टुट्टी की टूटी हुई गुडिया लिये बैठा था। घुघराले कटे हुए बालो वाला गुडिया का सिर करुणाजनक ढग से कमचारी के कधे के साथ सटा हुआ था।

ये लोग डाक्टर गास्पर की तलाश कर रहे थे।

'सनिक!' कोई गला फाडकर चीख उठा।

बहुत-से लोग पास की बाड फाद गये।

काली घोडा-गाडी रुक गयी। घोड सिर झटक रहे थे। उनके साज़ो की घटिया टनटना रही थी साज लौ दे रहे थे। हवा घोडो के सिरो पर लगे हुए नीले पखो के गुच्छो से खिलवाड कर रही थी।

घुडसवार घोडा-गाडी के गिद खडे हो गये।

कप्तान बोनावे तूरा की आवाज़ बडी भयानक थी। अगर वायलिन की आवाज़ से दात मे दद सा अनुभव होता था तो कप्तान की आवाज से ऐसा लगता था मानो किसी ने दात तोड डाला हो।

कप्तान ने रकाबो मे उठकर पूछा—

डाक्टर गास्पर आर्नेरी का घर कहा है?

वह लगामा को कसे हुए था। वह हाथो मे चौडे चौडे कफो वाले चमडे के खुरदरे से दस्ताने पहने था।

उसके प्रश्न की मानो एक बुढिया पर बिजली-सी गिरी। वह बुरी तरह सहम उठी और किसी एक दिशा मे उसने अपना हाथ हिला दिया।

"कहा है? कप्तान ने प्रश्न दोहराया।

अब उसकी आवाज़ से एसी अनुभूति हुई मानो एक दात नही बत्तीसी ही तोड डाली गयी हो।

'म यहा हू। कौन मुझे पूछ रहा है?'

लोग इधर उधर बिखर गये। डाक्टर गास्पर सधे हुए क़दम रखते घोडा गाडी के करीब आये।

आप ह डाक्टर गास्पर आर्नेरी?

हा म ही हू।

घोडा-गाडी का पट खुला।

"फौरन घोडा-गाडी मे बठ जाइये। अभी आपको आपके घर ले जायेंगे और वहा आपको सारी बात का पता चल जायेगा।"

एक अरदली घोडा गाडी के पीछे से कूदकर आगे आया और उसने डाक्टर गास्पर को सहारा देकर घोडा गाडी मे चढाया। पट बन्द कर दिया गया।

धूल का बादल उडाता हुआ जुलूस रवाना हो गया। घडी भर बाद सभी लोग मोड मुडकर ओझल हो गये।

न तो कप्तान बोनावे तूरा और न सैनिको का ध्यान ही भीड के पीछे खडे हुए तिबुल की ओर गया। वसे भी नीग्रो को देखकर वे उस व्यक्ति को न पहचान पाते जिसे ढूढ़ने के लिए पिछली रात वे बेहद दौड धूप करते रहे थे।

ऐसा प्रतीत हुआ मानो खतरा टल गया था। मगर अचानक किसी की ग़ुस्से से भरी आवाज़ सुनाई दी।

पहलवान लापीतूप मोमजामे से ढके लकडी के घेरे पर चढ़ता हुआ चिल्ला रहा था—

जरा ठहरो जरा ठहरो तो, अब तुम्हे मजा चखाऊगा मेरे दोस्त! म अभी सनिको को जाकर बताता हू कि तुम यहा हो!"

इतना कहकर वह लकडी के घेरे पर चढ गया।

लकडी का घेरा मोटे का वजन बर्दाश्त न कर पाया। वह ज़ोर से चरमराकर टुकडे-टुकडे हो गया।

पहलवान की टाग सेंध में फस गई। उसने उसे बाहर निकाला और लोगो की भीड को चीरता हुआ तेज़ी से घोडा-गाडी के पीछे भाग चला।

रुक जाइये!" वह भागता हुआ अपने नगे और गोल मटोल हाथो को हिलाता ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता जा रहा था। 'रुक जाइये! नट तिबुल का पता चल गया! नट तिबुल यहा है! मेरी मुट्ठी मे बन्द है!"

मामले ने खतरनाक रुख ले लिया। घूमती हुई आख की पुतली और पेटी के साथ टगी हुई पिस्तौल वाला स्पेनी भी सामने आ गया। दूसरी पिस्तौल उसके हाथ मे थी। उसने हो हल्ला मचा दिया। वह मच पर उछलता कूदता हुआ शोर मचा रहा था—

'उपस्थितगण! हमे तिबुल को सौंप देना चाहिए, वरना हमारी शामत आ जायेगी! हमें तीन मोटो से नही उलझना चाहिए!"

मडप का वह मैनेजर भी उसके साथ आ मिला जिसके पहलवान को तिबुल ने मच से भगा दिया था। वह चिल्लाया—

"इसने मेरा तमाशा चौपट कर दिया! इसने पहलवान लापीतूप को मच से भगा दिया! म इसके लिए तीन मोटो के ग़ुस्से का शिकार नही होना चाहता!"

लोगो की भीड ने तिबुल को अपनी ओट में कर लिया।

पहलवान घुडसवारो तक नही पहुच पाया। वह फिर से चौक में लौट आया। वह तेज़ी से तिबुल की ओर बढ़ा जा रहा था। स्पेनी कूदकर मच से नीचे उतर गया और उसने दूसरी पिस्तौल भी बाहर निकाल ली। मडप का मनेजर न जाने कहा से सफेद काग़ज़ का एक चक्र उठा लाया। सरकस मे सधे हुए कुत्ते ऐसे ही चक्रों के बीच से कूदते ह्। वह इसी चक्र को घुमाता हुआ स्पेनी के पीछे-पीछे मच से नीचे कूद गया।

स्पेनी ने पिस्तौल का घोडा चढा लिया।

तिबुल ने समझ लिया कि अब उसे भाग जाना चाहिए। भीड ने रास्ता दे दिया। पलक झपकते मे वह चौक से ग़ायब हो गया। वह बाड फादकर सब्ज़ी के खेत में जा

पहुचा। उसने सेध मे से झाककर देखा। पहलवान स्पेनी और मनेजर खेत की ओर भागे आ रहे थे। नजारा एसा था कि बरबस हसी आ जाये। तिबुल हस पडा।

पहलवान उमत्त हाथी की तरह भागा आ रहा था, स्पेनी पिछली टागो पर उछलने वाले चूहे जैसा लग रहा था और मनेजर घायल टाग वाले कौए की तरह कूद रहा था।

हम तुम्हे जिन्दा पकड लेंगे!' वे चिल्लाये। 'अपने को हमारे हवाले कर दो!

स्पेनी पिस्तौल के घोडे को खटखटा रहा था दात किटकिटा रहा था। मनेजर कागज का चक्र घुमा रहा था।

तिबुल हमला होने का इन्तजार करने लगा। वह भुरभुरी काली मिट्टी पर खडा था। उसके चारो ओर क्यारिया थी। उन मे पत्तागोभी के कल्ले थे, चुकदर थे, हरे हरे सिर बाहर निकले हुए थे डठल हिल रहे थे और चौडे चौडे पत्ते पडे हुए थे।

हवा मे सभी कुछ हिल डुल रहा था। निमल नीलाकाश खूब चमक रहा था।

लडाई शुरू हुई।

तीनो यक्ति बाड के करीब पहुचे।

'तुम यहा हो? पहलवान ने पूछा।

कोई उत्तर नही मिला।

तब स्पेनी ने कहा—

अपने को हमारे हवाले कर दो! मेरे दोनो हाथो मे पिस्तौलें ह। ये पिस्तौल दुनिया की सबसे अच्छी फम ठग और बेटा की बनी हुई ह। मैं देश का सबसे बढिया निशानेबाज हू समझे?"

तिबुल को पिस्तौल चलाने की कला में कमाल हासिल नही था। उसके पास तो पिस्तौल थी भी नहीं। मगर उसके हाथ के पास या शायद यह कहना अधिक ठीक होगा कि उसके पर के पास पत्तागोभी के बहुत से कल्ले जरूर पडे हुए थे। वह झुका, उसने एक गोल और भारी-सा कल्ला तोडा और बाड के दूसरी ओर दे मारा। कल्ला मनेजर के पेट पर जाकर लगा। इसके बाद उसने दूसरा और तीसरा कल्ला फेंका वे लगभग बम की तरह फटे।

दुश्मनो के होश हवा हो गये।

तिबुल चौथा कल्ला उठाने के लिए झुका। उसने उसे दोनो हाथो मे भर लिया उखाडने के लिए जोर लगाया, मगर नही उसे कामयाबी नही मिली। इतना ही नही उसने तो इन्सान की तरह बात भी करनी शुरू कर दी!

"यह गोभी का कल्ला नहीं, मेरा सिर है। म गुब्बारे बेचनेवाला हू। म एक भूमिगत माग द्वारा तीन मोटो के महल से भाग आया हू। इस माग का आरम्भ होता है

एक देग से और अन्त होता है यहा। वह माग जमीन के नीचे लम्बी आत की तरह फला हुआ है "

तिबुल को अपने कानो पर विश्वास नही हुआ। पत्तागोभी का कल्ला इन्सान का सिर बन गया था!

तिबुल तब झुका और उसने ध्यान से इस करिश्मे की ओर देखा। उसे अपनी आखो पर विश्वास करना ही पडा। वह व्यक्ति जो रस्से पर चल सकता है उसकी आखें धोखा नही खा सकती थी। उसने जो कुछ देखा था, उसमे पत्तागोभी के कल्ले जसी कोई चीज नही थी।

यह गुब्बारे बेचनेवाले का गोल मटोल तोबडा था। सदा की भाति वह बेल-बूटो और पतली टूटी वाली केतली के समान लग रहा था।

गुब्बारे बचनेवाले का सिर जमीन से ऊपर को उठा हुआ था और उसकी गदन के गिद काली, सीली मिट्टी का कालर-सा बना हुआ था।

यह भी खूब रही! " तिबुल ने कहा।

गुब्बारे बेचनेवाला गोल-गोल आखो से तिबुल की ओर देख रहा था जिनमे निमल नीलाकाश प्रतिबिम्बित हो रहा था।

मने रसोइये छोकरो को अपने गुबारे दे दिये और उन्होने भागने में मेरी सहायता की वह देखो, उनमे से एक गुब्बारा उड भी रहा है "

तिबुल ने उधर नज़र दौडाई और बहुत ऊचाई पर नीले आकाश में सतरे रग का एक छोटा-सा गुब्बारा उडता हुआ देखा।

यह उन गुब्बारो मे से एक था जो रसोइये छोकरो ने उडा दिये थे।

उन तीनो ने भी जो बाड के पीछ खडे हमले की योजना बना रहे थे गुब्बारा देखा। अब स्पेनी तो सब कुछ ही भूल गया। वह ज़मीन से ऊपर को उछला उसने अपनी आख की पुतली घुमाई और निशाना साधने की मुद्रा बना ली। उसे तो निशानेबाज़ी का जनून था।

" उधर देखिये, ' वह चिल्लाया। दस बुर्जों की ऊचाई पर वह निकम्मा गुब्बारा उड रहा है! मैं सोने की दस मुहरो की शत लगाने को तैयार हू कि उसे बीध डालूगा। मुझसे बेहतर निशानेबाज ढूढे नही मिलेगा!"

कोई भी उससे शत लगाने को तयार नही था, मगर इस से स्पेनी के जोश मे कमी नही आई। पहलवान और मनेजर तो गुस्से से लाल-पीले हो उठे।

पाजी!' पहलवान चिल्ला उठा। एकदम पाजी! यह गुब्बारों को निशाने बनाने का समय नही है। पाजी न हो तो! हमे तिबुल को पकडना है! बेकार कारतूस बरबाद न करो।'

मगर इस से कोई लाभ नही हुआ। यह बढिया निशानेबाज़ किसी भी तरह अपने पर काबू न पा सका। निशाना लगाने के लिये गुब्बारा बहुत ही आकषक था। स्पेनी ने अपनी घुमती हुई पुतलीवाली आख बन्द करके निशाना साधना शुरू किया। जब तक वह निशाना साधता रहा, तिबुल ने गुब्बारे बेचनेवाले को ज़मीन से बाहर निकाला। कसा दृश्य था वह! उसके कपडो पर क्या कुछ नही था! कही कुछ क्रीम लगी थी और कही शबत, कही कीचड चिपका हुआ था तो कही फलो के मुरब्बे के बने सितारे!

उस जगह जहा से तिबुल ने उसे बोतल के डाट की तरह खींचकर बाहर निकाला, बडा-सा काला सूराख रह गया। उसमें मिट्टी भर गई और ऐसी आवाज हुई मानो छत पर बरसात की मोटी-मोटी बूदें टपटपा रही हो।

स्पेनी ने गोली चलाई। गुब्बारे को तो खर, वह निशाना न बना पाया। ओह! उसकी गोली तो मैनेजर के हरे टोप मे जो खुद भी एक बुज के बराबर ऊचा था, जा लगी।

तिबुल ने सब्जी के खेत की बाड फादी और नौ दो ग्यारह हो गया।

हरा टोप गिर पडा और समोवार की पाइप की तरह लुढ़कने लगा। स्पेनी के हाथो के तोते उड गये। उसकी बढिया निशानेबाज होने की ख्याति मिट्टी मे मिल गयी थी। इतना ही नही वह मनेजर की नजरो मे गिर गया था।

अरे उल्लू! मनेजर आपे से बाहर हो गया। उसने कागजी चक्र स्पेनी के सिर पर दे मारा।

कागज फट गया और स्पेनी के सिर के गिद दातेदार कागजी कालर-सा बन गया।

सिफ लापीतूप ही मुह ताकता हुआ खडा रह गया। गोली दगने की आवाज से आसपास के कुत्ते भडक उठे। उनमे से एक कही से भागता हुआ आया और पहलवान की ओर झपटा।

भागो भागो बचकर!" लापीतूप ने चिल्लाकर कहा।

तीनो सिर पर पाव रखकर भागे।

गुब्बारे बेचनेवाला अकेला ही रह गया। उसने बाड पर चढकर इधर उधर नजर दौडाई। तीनो मित्र एक हरी भरी पहाडी से नीचे लुढक रहे थे। लापीतूप एक टाग पर उछल रहा था और दूसरी मोटी टाग को उस जगह से पकडे हुए था जहा से कुत्ते ने उसे काट लिया था। मनेजर एक वृक्ष पर जा चढा था और उसके साथ लटका हुआ उल्लू जैसा लग रहा था। स्पेनी कागजी चक्र में से अपने सिर को हिलाता-डुलाता हुआ कुत्ते पर गोली चलाता था और हर बार खेत मे खडे कनकौवे को ही बीधता था।

कुत्ता पहाडी के ऊपर खडा था और ऐसा ही प्रतीत होता था मानो उसने फिर से झपटने का इरादा छोड दिया हो।

कुत्ते को लापीतूप की मोटी टाग से जो मजा मिला था, वह उस से सन्तुष्ट नजर आता था। वह अपनी चमकती हुई गुलाबी जबान बाहर निकाले पूछ हिला रहा था और खुश दिखाई दे रहा था।

छठा अध्याय

अप्रत्याशित परिस्थितिया

तिबुल से जब यह पूछा गया था कि वह काला कसे हो गया है तो उसने जवाब दिया था कि डाक्टर गास्पर आर्नेरी से पूछिये"।

मगर डाक्टर गास्पर से पूछे बिना भी कारण का अनुमान लगाना कठिन नही है। हमे याद है कि तिबुल लडाई के मदान से बच निकलने मे सफल हो गया था। हमे इस

बात का भी स्मरण है कि सनिक उसकी तलाश करते रहे थे उन्होंने मजदूरो के मुहल्ले जला दिये थे और सितारे के चौक मे गोलिया चलाई थी। तिबुल भागकर डाक्टर गास्पर के घर मे आ छिपा था। मगर यहा उसे किसी भी क्षण पकडा जा सकता था। खतरा इसी बात का था कि यहा उसे बहुत बडी सख्या मे लोग पहचानते थे।

हर दुकानदार तीन मोटो का हिमायती था क्योकि वह खुद भी मोटा और धनी था। डाक्टर गास्पर के अडोस पडोस मे रहनेवाले धनी लोग सनिको तक यह खबर पहुचा सकते थे कि तिबुल डाक्टर गास्पर के घर मे है।

आपको अपनी शक्ल सूरत बदलनी होगी " डाक्टर गास्पर ने उस रात को कहा जब तिबुल उनके घर नमूदार हुआ।

डाक्टर गास्पर ने ही उसे नीग्रो बना दिया था।

उन्होने कहा था—

तुम लम्बे-तडगे हो। तुम्हारा सीना उभरा हुआ, कधे चौड चौडे दात चमकते हुए और बाल सख्त काले और घुघराले ह। अगर त्वचा गोरी न होती तो उत्तरी अमरीका के नीग्रो जैसे लगते। हा, यह खूब सूझी! मैं तुम्हे काला बनने मे मदद दूगा।"

डाक्टर गास्पर आर्नेरी को सौ विज्ञानो की जानकारी थी। वे बहुत ही गम्भीर, मगर उदारमना व्यक्ति थे। काम के वक्त काम और खेल के वक्त खेल ही होना चाहिए।

इसलिए वे कभी-कभी अपना जी भी बहलाते। मगर विश्राम भी करते तो वज्ञानिक की भाति। तब वह गरीब यतीम बालको के लिए उपहारस्वरूप पानी मे भिगोकर उतारी जानेवाली तस्वीरे अद्भुत फुलझडिया खिलौने गजब की और अनजानी आवाजो वाल वाद्ययन्त्र और नये रग बनाते।

यह देखिये उन्होने तिबुल से कहा। इस बोतल मे रगहीन तरल पदाथ है। खुश्क हवा मे जिस भी शरीर पर इसे लगाया जायेगा वह काला हो जायगा सो भी कुछ कुछ बगनी सा—नीग्रो जसे रग का। और इस बोतल मे वह पदाथ है जो इस रग को साफ कर देता '

तिबुल ने रग बिरगे तिकोना से बनी हुई अपनी बिरजस उतारी और काक की बदबू तथा जलन पदा करने वाला तरल पदाथ अपन तन पर मला।

एक घटे बाद उसकी त्वचा का रग काला हो गया।

तभी मौसी गानीमेड अपना चूहा लिये हुए आई थी। इसके बाद की कहानी हमे मालूम है।

अब हम डाक्टर गास्पर की ओर लौटते ह। हमे याद है कि कप्तान बोनावेन्तूरा उन्हे महल क कमचारी के साथ काली घोडा-गाडी मे बिठाकर ले गया था।

घोडा-गाडी उडी चली जा रही थी। यह तो हमें मालूम ही है कि पहलवान लापीतूप उस तक नही पहुच पाया था। घोड़ा-गाडी के अन्दर अधेरा था। भीतर जाने पर डाक्टर ने शुरू मे तो यह समझा कि उसके पास बठा हुआ कमचारी अस्तव्यस्त बालो वाली एक बालिका को अपनी गोद मे लिये है।

कमचारी मौन साधे था। बालिका भी।

क्षमा कीजिये, आपके लिये जगह थोडी तो नही हो रही ? ' डाक्टर नें टोप उतारते हुए शिष्टतावश पूछा।

कर्मचारी ने रुखाई से जवाब दिया—

"आप चिन्ता न करें।

घोडा-गाडी की छोटी-छोटी खिडकियो से कुछ-कुछ रोशनी छन रही थी। कुछ क्षण बाद आखो को अधेरे मे नजर आने लगा। तब डाक्टर को लम्बी नाक वाला कमचारी,

अपनी पलको को कुछ-कुछ मूदे था, दिखाई दिया और बहुत ही सुदर फ्रॉक पहने
ारी-सी बालिका की भी झलक मिली। बालिका बहुत ही उदास-सी प्रतीत हुई। सम्भवत
ाका रग जद था, मगर अधेरे मे यह तय करना मुमकिन नही था।

बचारी बच्ची! ' डाक्टर गास्पर ने सोचा। जरूर यह बीमार है। ' उन्होने फ्र
कमचारी को सम्बोधित किया—

सम्भवत आप मुझसे मदद लेने आये ह? लगता है यह बेचारी बच्ची बीमार
गयी है?'

हा आपकी मदद की जरूरत है लम्बी नाक वाले कमचारी ने उत्तर दिया।

'निश्चय ही यह तीन मोटो मे से किसी एक की भतीजी या उत्तराधिकारी टूट्टी की
ोई छोटी सी मेहमान है।" डाक्टर ने अनुमान लगाया। ' इसकी पोशाक बढिया है
से महल से लाया जा रहा है और सनिको का कप्तान इसके साथ आया है। जाहिर है कि
ह कोई साधारण बालिका नही है। मगर जिदा बच्चो को तो उत्तराधिकारी टूट्टी के निकट
ो नही आने दिया जाता। तब यह नन्ही परी वहा कैसे जा पहुची?'

डाक्टर अपने अनुमानो मे ही उलझ गये। उन्होने फिर से लम्बी नाक वाले कमचारी
ा बातचीत शुरू की—

कहिये तो बच्ची को क्या बीमारी है? डिफ्थीरिया तो नही?'

'नही उसकी छाती में छेद है।'

'आपका मतलब है कि फेफडो मे कुछ गडबड है?'

उसकी छाती मे छेद है, कमचारी ने दोहराया।

डाक्टर ने शिष्टतावश बात को गोलमोल ही रहने दिया।

'बेचारी बच्ची!" उन्होने गहरी सास ली।

यह बच्ची नही गुडिया है," कमचारी ने कहा।

इसी समय घोडा-गाडी डाक्टर के घर के सामने जा पहुची।

कमचारी और कप्तान बोनावेन्तूरा डाक्टर के पीछे-पीछ उनके घर में गये। डाक्टर
उन्हे अपनी प्रयोगशाला मे ले गये।

"अगर यह गुडिया है तो भला म आपकी क्या सेवा कर सकता हू?

कमचारी ने सारी बात स्पष्ट की।

मौसी गानीमेड सुबह की घटना को अभी तक नही भूली थी और उत्तेजित थी। उसने
छेद मे से, भीतर झाककर देखा। वहां उसे डरावना कप्तान बोनावेन्तूरा दिखाई दिया।
वह अपनी तलवार की टेक लगाये खडा था और घुटनो तक के मुडे हुए किनारो वाले बडे
बडे बूट पहने अपने एक पैर को हिला-डुला रहा था। उसके बूटो की एडिया दुमदार तारों

जैसी थी। मौसी को बढिया गुलाबी फ्राक मे उदास और बीमार बालिका भी नज़र आई जिसे कमचारी ने आराम कुर्सी पर बिठा दिया था। बालिका का अस्तव्यस्त बालों वाला सिर झुका हुआ था। ऐसा लगता था मानो वह फुदनो की जगह लगाये गये सुनहरे गुलाबो वाले प्यारे-प्यारे रेशमी सडलो की ओर देख रही थी।

तेज़ हवा के झोके हाल के शटरो को खटखटा रहे थे और इस से मौसी गानीमेड के बातचीत सुनने में बाधा पड रही थी। फिर भी कुछ न कुछ तो उसकी समझ मे आ ही गया।

कमचारी ने डाक्टर गास्पर को तीन मोटो की राज्यीय परिषद का फरमान दिखाया। डाक्टर ने उसे पढ़ा तो उनके हाथो के तोते उड गये।

"गुडिया कल सुबह तक ठीक हो जानी चाहिए कमचारी ने उठते हुए कहा।

कप्तान बोनावे तूरा ने एडिया बजायी।

'मगर   मगर   डाक्टर ने हाथ हिलाये। म कोशिश करूगा, मगर वादा नही कर सकता। म इस जादुई गुडिया के कल-पुर्ज़ों से अपरिचित हू। मुझे उन्हे देखना समझना होगा यह मालूम करना होगा कि इनमे क्या खराबी हुई है और नये पुर्ज़े तयार करने होगे। इसके लिये बहुत काफी वक्त की जरूरत होगी। हो सकता है कि यह मेरी समझ मे ही न आये मुमकिन है कि म इस खराब की हुई गुडिया को ठीक ही न कर पाऊ म विश्वास के साथ नही कह सकता भद्रजन इतना थोडा समय है केवल एक रात म वादा नही कर सकता "

कर्मचारी ने उन्हे टोका। उगली उठाते हुए उसने कहा—

"उत्तराधिकारी टूट्टी के दुख का पारावार नही, इसलिए देर नही होनी चाहिए। गुडिया कल सुबह तक ठीक ठाक हो जानी चाहिए। तीन मोटो का यही हुक्म है। उनके हुक्म अदूली करने की किसी को जुरत नही हो सकती । कल सुबह आप ठीक ठाक और भली चगी गुडिया लिये हुए तीन मोटो के महल मे आइयेगा।

मगर मगर " डाक्टर ने विरोध किया।

यह अगर मगर' बन्द कीजिये! गुडिया कल सुबह तक ठीक हो जानी चाहिए। अगर आप यह कर देंगे तो आपको इनाम दिया जायेगा अगर नही तो कडी सज़ा।"

डाक्टर के तो होश हवा हो गये थे।

'म कोशिश करूगा," वह मिनमिनाये। 'मगर इतना तो समझिये कि यह बहुत अधिक ज़िम्मेदारी का काम है।"

बेशक! कमचारी ने फौरन कहा और उगली नीचे कर ली। 'मने आदेश आप तक पहुचा दिया आपका काम है उसे पूरा करना। नमस्कार!"

मौसी गानीमेड दरवाज़े से पीछे हटी और अपने कमरे मे भाग गयी जहा कोने म शकिस्मत चूहा चीं ची कर रहा था। डरावने मेहमान बाहर निकले। कमचारी घोडा ाडी मे जा बठा, काउट बोनावेतूरा अपनी चमक-दमक दिखाता उछलकर घोडे पर सवार ो गया। सनिकों ने अपने टोप नीचे को कर लिये। सभी वहा से रवाना हो गये।

उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया डाक्टर की प्रयोगशाला मे रह गयी।

डाक्टर ने मेहमानो को विदा किया, फिर मौसी गानीमेड के पास आये और ासाधारण कडाई से बोले—

'मौसी गानीमेड ध्यान से मेरी बात सुनिये। लोग मुझे बुद्धिमान यक्ति मानते डाक्टर के नाते मेरी अच्छी ख्याति है और मुझे निपुण कारीगर भी माना जाता है। म ग्पनी ख्याति को बडा महत्व देता हू। इसके अलावा मैं अपने सिर को भी सही सलामत खना चाहता हू। कल सुबह मेरी ख्याति को भी बट्टा लग सकता है और सिर भी कलम कया जा सकता है। आज रात भर मुझे बहुत मुश्किल काम करना है। समझी?' डाक्टर ने तीन मोटो की राज्यीय परिषद् का फरमान हिलाते हुए उसे दिखाया। "मेरे काम मे किसी तरह का खलल नही पडना चाहिये! शोर-गुल नही होना चाहिये। तश्तरियो को नही बजाइयेगा। चूल्हे पर कुछ नही जलाइयेगा। मुगियो को आवाज़ नही दीजियेगा। चूहे को मत पकडियेगा। आमलेट, फूलगोभी मिठाई और दिल को ताकत देनेवाली दवाई की बात नही कीजियेगा! समझ गयी?"

डाक्टर गास्पर बहुत गुस्से मे थे।

मौसी गानीमेड ने अपने को कमरे मे बन्द कर लिया।

'अजीब बातें हो रही हं, बडी ही अजीब बातें!' वह बडबडाती रही। "खाक भी तो मेरी समझ में नहीं आ रहा पहले तो वह नीग्रो कही से आ टपका, फिर गुडिया और अब यह फरमान अजीब बाते हो रही हैं आजकल!"

अपने को शान्त करने के लिये वह अपनी भतीजी के नाम खत लिखने बैठ गयी। खत बहुत सावधानी से लिखना पडा ताकि कलम की आवाज़ न हो। वह नही चाहती थी कि डाक्टर बिगड उठें।

एक घटा गुज़र गया। मौसी गानीमेड लिखे जा रही थी। वह यहां तक लिख चुकी थी कि कैसे उस सुबह को डाक्टर की प्रयोगशाला में अचानक ही एक नीग्रो नमूदार हुआ था। उसने आगे लिखा—

वे दोनों बाहर गये। डाक्टर महल के एक कमचारी और सैनिको के साथ लौट आये। कमचारी और सनिक एक गुडिया लेकर आये जो बिल्कुल जि दा लडकी लगती है, मगर नीग्रो उनके साथ नही लौटा। वह कहा चला गया मुझे मालूम नही "

नीग्रो, जो वास्तव मे नट तिबुल था, कहा चला गया था यह सवाल डाक्टर गास्पर को भी परेशान कर रहा था। गुडिया की मरम्मत करते हुए वे लगातार तिबुल के बारे मे सोचते रहे। वे झुझला उठे। अपने आप से बाते करने लगे—

हद हो गयी लापरवाही की भी! मने उसे नीग्रो बनाया उसे अदभुत रग से रगा एसा बना दिया कि कोई भी पहचान न पाये मगर चौदहवें बाजार मे उसने खुद ही अपना भडाफोड कर दिया! उसे तो गिरफ्तार किया जा सकता था! ओह! कितना लापरवाह है वह! क्या वह लोहे के पिजरे मे बन्द होना चाहता है?' डाक्टर खीझ रहे थे। तिबुल की लापरवाही फिर यह गुडिया इसके अलावा पिछले दिन की परेशानिया अदालत चौक मे जल्लादो के दस तख्ते

'बडा भयानक वक्त आ गया है! डाक्टर कह उठे।

डाक्टर को यह मालूम नही था कि उस दिन दी जानेवाली सजाये रद्द कर दी गयी ह। महल का कमचारी नपी-तुली बात करनेवाला व्यक्ति था। उसने महल मे घटी घटना के बारे मे डाक्टर को कुछ नही बताया। डाक्टर उस बेचारी गुडिया की ओर देखते हुए सोचने लगे—

इस पर ये वार किसने किये हैं? जरूर किसी हथियार से शायद तलवार से ही। इस गुडिया इस प्यारी बच्ची पर वार किये किसने ऐसा किया? किसे हिम्मत हुई उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया को तलवार से बीधने की?'

डाक्टर यह अनुमान नही लगा पाये कि सनिको ने ऐसा किया था। उनके दिमाग मे यह बात नही आ सकती थी कि महल के सनिक भी तीन मोटो का साथ देना बन्द कर जनता की ओर होते जा रहे ह। अगर उन्हे यह मालूम हो जाता, तो कितनी खुशी होती!

डाक्टर ने गुडिया का सिर हाथो मे ले रखा था। सूरज खिडकी मे से झाक रहा था। गुडिया उसके प्रकाश मे खूब चमक रही थी। डाक्टर उसे गौर से देख रहे थे।

"अजीब बात है, बडी अजीब बात है वह सोच रहे थे 'यह चेहरा तो मने कही पहले भी देखा है हा जरूर! मने इसे देखा है म इसे पहचान रहा हू। मगर कहा देखा था मने इसे? कब देखा था? वह जीता-जागता चेहरा था, एक जीवित बालिका का चेहरा बडा प्यारा सा, मुस्कराता हुआ तरह तरह के मुह बनाता, गम्भीर होता चचलता दिखाता और उदास होता हुआ हा हा! इसमे रत्ती भर भी शक शुबह नही हो सकता! मगर मेरी कम्बख्त कमजोर नजर चेहरो को याद कर पाने मे बाधा डालती है।'

डाक्टर ने गुडिया के घुघराले सिर को अपनी आखो के निकट कर लिया।

"कसी कमाल की गुडिया है! कसे सधे हुए हाथो ने इसे बनाया है! साधारण गुडियो जैसी तो उसमे कोई बात ही नही। गुडियो की आम तौर पर फूली फूली नीली आखें होती हैं उन

मे इन्सानी आखो जसी कोई भी चीज़ नही होती, वे भावनाशून्य होती ह उनकी छोटी सी नाक फीते जैसे होठ और बेढगे से भूरे बाल होते ह मेमने के ऊन जसे। गुडिया वसे तो सुखी दिखाई देती है पर वास्तव मे होती है भावनाशून्य मगर इस गुडिया मे ऐसी कोई भी चीज़ नही है। कसम खाकर कहता हू कि यह तो बिल्कुल ऐसी है मानो किसी लडकी को ही गुडिया मे बदल दिया गया हो!

डाक्टर गास्पर अपनी असाधारण रोगिनी पर मुग्ध हुए जा रहे थे। उनके दिमाग मे लगातार यह बात आ रही थी कि कभी और कही तो उन्होने यह पीला-सा चेहरा गम्भीर भूरी आख और कटे हुए अस्त-यस्त बाल देखे ह। सिर को हिलाने डुलाने का ढग और आखो का अन्दाज़ तो खास तौर पर जाना पहचाना प्रतीत हुआ। वह अपने सिर को ज़रा सा एक ओर को घुमाकर डाक्टर को झुकी झुकी नज़र से बहुत गौर से और शरारत भरे ढग से देखा करती थी

डाक्टर अपने पर काबू न रख पाये और उन्होने ऊचे स्वर मे पूछ ही लिया—

'क्या नाम है तेरा गुडिया?'

मगर लडकी चुप रही। तभी डाक्टर को एहसास हुआ कि गुडिया खराब हो गयी है उसकी आवाज लौटानी है उसके दिल की मरम्मत करनी है उसकी मुस्कान लौटानी है उसे नाचना और इसी उम्र की लडकियो के समान व्यवहार करना सिखाना है।

देखने में कोई बारह साल की लगती है।

इत्मीनान से काम करने का वक्त नही था। डाक्टर काम मे जुट गये। मुझे इस गुडिया को ज़िन्दा करना है!

मौसी गानीमेड ने खत खत्म कर लिया। दो घटे तक जसे तसे ऊब बर्दाश्त करती रही। अब उसे कुरेद हुई— जाने ऐसा क्या काम है जो डाक्टर को फौरन करना चाहिये? जाने वह गुडिया कसी है?

वह दबे पाव डाक्टर की प्रयोगशाला के दरवाज़े पर आयी और उसने दिल की शक्लवाले छेद मे से झाकने की कोशिश की। ओह! वहा तो चाबी लगी हुई थी। उसे कुछ भी नज़र न आया। इसी समय दरवाज़ा खुला और डाक्टर गास्पर बाहर आये। वे इतना अधिक परेशान थे कि उन्होने मौसी गानीमेड को उसकी इस बेहूदा हरकत के लिये डाटा डपटा भी नही। मौसी गानीमेड के तो डाट डपट के बिना ही होश हवास उड गये।

'मौसी गानीमेड म जा रहा हू' डाक्टर ने कहा, लगता है कि मुझ जाना ही होगा। बग्घी ले आइये।

वह चुप हो गये और फिर हथेली से माथा सहलाते हुए बोले—

म तीन मोटो के महल मे जा रहा हू। बहुत मुमकिन है कि म वहा से लौटकर न आऊ।'

मौसी गानीमेड को तो जैसे धक्का लगा वह एकदम पीछे को हट गयी।

तीन मोटो के महल मे?

हा मौसी गानीमेड। मामला बहुत टेढा है। मेरे पास उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया लायी गयी है। वह दुनिया मे सबसे अच्छी गुडिया है। उसका स्प्रिग टूट गया है। तीन मोटो की राज्यीय परिषद् ने मुझे कल सुबह तक इस गुडिया को ठीक ठाक करने का हुक्म दिया है। मुझे कठोर दण्ड दिया जायेगा

मौसी गानीमेड तो रुआसी हो गयी।

'म इस बेचारी गुडिया को ठीक नही कर पा रहा हू। मने इसकी छाती मे छिपे हुए स्प्रिग को खोज निकाला है उसके सभी राज समझ गया हू और इसे ठीक भी कर सकता हू। मगर वह तो छोटी-सी चीज है! बडी मामूली-सी चीज के कारण म इसे ठीक नही कर सकता। इस रहस्यपूर्ण स्प्रिग मे एक दातेदार चक्र है जो टूटा हुआ है वह बिल्कुल बेकार हो गया है! नया बनाने की जरूरत है मेरे पास आवश्यक धातु भी है चादी जसी मगर काम शुरू करने से पहले यह जरूरी है कि म इस धातु को कम से कम दो दिन तक तूतिये मे भिगोये रखू। समझती ह न, दो दिन तक मगर यह गुडिया तो कल सुबह तक तयार हो जानी चाहिये।'

'क्या कोई और चक्र नही लगा सकते?' मौसी गानीमेड ने झिझकते हुए पूछा।

डाक्टर ने निराशा से हाथ झटकते हुए कहा—

म हर तरह की कोशिश कर चुका हू, मगर बेसूद।"

पाच मिनट बाद एक बन्द बग्घी डाक्टर गास्पर के दरवाज़ के सामने आकर खडी हो गयी। डाक्टर ने तीन मोटो के महल में जाने का इरादा बना लिया।

'म उनसे कह दूगा कि कल सुबह तक गुडिया तयार नहीं हो सकती। फिर वे जैसा भी चाहें मेरे साथ सुलूक कर सकते ह "

मौसी गानीमेड अपने पेशबन्द का छोर चबाने और सिर हिलाने लगी। वह तब तक सिर हिलाती रही जब तक कि उसे उसके अलग होकर गिर जाने की चिन्ता न हुई।

डाक्टर गास्पर ने गुडिया को अपने पास बिठा लिया और बग्घी रवाना हो गयी।

सातवा अध्याय

अजीब गुडिया की रात

हवा डाक्टर गास्पर के दोनो ओर सीटिया बजा रही थी। सान रखनेवाले द्वारा छुरी तेज करते समय जो आवाज पदा होती है हवा की शू शा उस से भी ज्यादा नागवार लग रही थी।

डाक्टर ने कालर से कान ढक लिये और हवा की ओर पीठ कर ली।

तब हवा ने सितारो से खिलवाड शुरू किया। वह कभी उन्हें मानो फूक मारकर बुझा देती, कभी उन्हें झूला झुलाती और कभी काली तिकोनी छतो के पीछे छिपा देती। जब यह खेल खेलकर उसका मन ऊब गया तो वह बादलो से उलझने लगी। मगर बादल पुरानी मीनारो की भाति इधर उधर बिखर जाते। तब हवा गुस्से से एकदम सद हो गयी।

डाक्टर को लबादा ओढ़ लेना पडा। आधा लबादा उन्होने गुडिया को ओढा दिया।

'जरा तेजी से हाकते चलो! भई कोचवान जरा तेजी से!'

न जाने क्यो डाक्टर को डर महसूस होने लगा और वे कोचवान से घोडे को जल्दी जल्दी हाकने का अनुरोध करने लगे।

सडको पर अन्धेरा था, वे वीरान सुनसान थी और वातावरण दिल मे दहशत पदा करता था। केवल कुछ ही खिडकियो मे से लाल लाल सी रोशनी छन रही थी, बाकी बन्द थी। लोगो को भयानक घटनायें घटने की आशका थी।

इस शाम को बहुत-सी बातें गरमामूली-सी लग रही थी वे मन मे तरह तरह की शकायें पदा कर रही थी। डाक्टर को एसा भी लगा कि अन्धेरे मे इस अजीब सी गुडिया की आखें कही दो पारदर्शी पत्थरो की तरह चमक न उठें। उन्होने गुडिया की ओर से नजर बचाने की कोशिश की।

'बकवास है! उन्होने अपने को तसल्ली दी। 'यह तो महज मेरे दिल की कमजोरी है। यह हर शाम जसी शाम है, केवल राहगीर कम ह। सिफ हवा ही उनकी

परछाइयो से ऐसा खिलवाड कर रही है कि हर राहगीर रहस्यमय लबादे मे लिपटा लिपटाया किराये का हत्यारा प्रतीत होता है और चौराहो मे जल रहे लम्पो की रोशनी भी बडी अजीब तरह की नीली नीली है काश कि हम जल्दी से तीन मोटो के महल में पहुच जायें !

डर से निजात पाने की एक बहुत अच्छी दवाई है—सो जाना। कम्बल से मुह सिर ढक लेना तो विशेषत बहुत लाभदायक रहता है। डाक्टर ने भी यही दवाई आजमाने का निश्चय किया। कम्बल की जगह उन्होने अपना टोप नीचे की ओर खीचकर आखें ढक ली। और ज़ाहिर है कि जसे होना चाहिए था, उन्होने एक सौ तक गिनना शुरू किया। मगर इस से कोई फायदा न हुआ। तब उन्होने ज़्यादा कारगर तरीका आज़माया। उन्होने मन ही मन दोहराना शुरू किया—

'एक हाथी और एक हाथी—ये हुए दो हाथी। दो हाथी और एक हाथी—ये हुए तीन हाथी। तीन हाथी और एक हाथी—ये हुए चार हाथी

इस तरह गिनते गिनते उन्होने हाथियो के झुण्ड तक गिनती कर डाली। एक सौ तेईसवा काल्पनिक हाथी तो सचमुच का हाथी बन गया। चूकि डाक्टर यह न समझ पाये थे कि वह हाथी था या गुलाबी पहलवान लापीतूप इसलिए जाहिर है कि वे सो गये थे और सपने देखने लगे थे।

जागृत अवस्था की तुलना मे सोते हुए समय कही अधिक तेज़ी से गुज़रता है। पर खर, सपने मे डाक्टर न केवल तीन मोटो के महल में जा पहुचे बल्कि उन्होने यह भी देखा कि उनके खिलाफ मुकदमे की कारवाई की जा रही है। हर मोटा उनके सामने हाथ मे गुडिया लिए ऐसे ही खडा था जैसे जिप्सी नीले लहगेवाली बन्दरिया को उठाये रहता है।

वे किसी तरह का हीला हवाला सुनने को तयार न थे।

"तुमने हमारा फरमान पूरा नही किया,' वे कह रहे थे तुम्हे इस के लिए कडी सज़ा दी जायेगी। तुम्ह गुडिया हाथ मे लिए हुए सितारे के चौक मे कसे हुए रस्से पर चलना होगा। मगर पहले तो तुम अपना चश्मा उतार लो

डाक्टर ने क्षमा कर देने की प्राथना की। उन्हे सबसे ज़्यादा फिक्र तो गुडिया की थी उन्होने कहा—

'म तो गिरने का आदी हो चुका हू अगर म रस्से से फिसलकर नीचे तालाब मे जा भी गिरा, तो कोई खास बात नही। मुझ इसका तजरबा है—म शहर के फाटक के करीब बुज के साथ नीचे गिर चुका हू मगर गुडिया बचारी गुडिया का ता ख्याल कीजिये ! वह तो चूर-चूर हो जायेगी कृपया इस पर रहम कीजिये देखिये मुझ

यकीन है कि यह गुडिया नही है जीती जागती लडकी है बहुत ही प्यारा सा नाम है इसका जो म भूल गया हू जा मुझे याद नही आ रहा

नही ! तीन मोट चिल्लाये। नही तुम्ह हरगिज माफ नही किया जायगा ! तीन मोटो का यही हुक्म है! वे इनन जार स चिल्लाय कि डाक्टर की आख खुल गयी।

तीन मोटा का यही हुक्म है ! किसी न डाक्टर के काना के पास ही चीखकर कहा।

डाक्टर अब सा नही रहे थे। वास्तव म ही काई एसे चिल्ला रहा था। डाक्टर ने अपनी आखो से शायद यह कहना ज्यादा सही होगा अपन चश्मे से टोपी हटाई और इधर उधर नजर दौडाई। जितनी देर व सोय रहे थे इसी बीच रात की चादर और अधिक काली हो गयी थी।

बग्घी खडी थी। काली-काली आकृतिया उसे घरे हुए थी। इन्ही के शोर ने डाक्टर का स्वप्न भग कर दिया था। वे लालटेनें हिला रहे थे। इसी से हिलती-डुलती परछाइया नजर आ रही थी।

यह क्या मामला है ? डाक्टर न पूछा। हम कहा ह ? ये लोग कौन ह ?

एक आकृति निकट आयी और उसने डाक्टर के सिर तक लालटन ऊची करके डाक्टर पर प्रकाश डाला। लालटन हिल डुल रही थी। लालटेन वाला हाथ चौड कफवाल चमडे के खुरदरे दस्ताने से ढका हुआ था।

डाक्टर समझ गया—सनिक ह।

'तीन मोटा का यही हुक्म है उस आकृति न दोहराया।

पीले प्रकाश मे यह आकृति टुकडे टुकड सी हो गयी। उसका मोमजामे का चमकता हुआ टोप रात के समय लोहे का प्रतीत हो रहा था।

किसी को भी महल के करीब एक किलोमीटर तक निकट जाने की इजाज़त नही है। यह हुक्म आज जारी किया गया है। शहर मे गडबड है। आगे जाना मना है !"

पर मेरा तो महल मे जाना बिल्कुल लाज़िमी है।

डाक्टर झल्लाय हुए थे।

सनिक ने बहुत कडाई से कहा—

म सन्तरियो का कप्तान त्सेरेप हू। म आपको एक कदम भी आगे नही जाने दूगा ! बग्घी लौटाओ ! उसने लालटेन तानते हुए चीखकर कोचवान से कहा।

डाक्टर का अब तो दिल ही बठ गया। मगर फिर भी उन्हे यकीन था कि सनिको को जब यह पता चलेगा कि म कौन हू और किस लिये महल मे जाना चाहता हू तो वे फौरन आगे जाने की अनुमति दे देंग।

'म डाक्टर गास्पर आर्नेरी हू उन्हाने कहा।

जवाब मे जोर का ठहाका गूज उठा। सभी ओर लालटेनें हिलने डुलने लगी।

देखिये हज़रत ऐसे खतरनाक समय मे और इतनी देर से रात को हमे हसी मज़ाक पसन्द नही सन्तरियो के कप्तान ने कहा।

म आप से कह रहा हू कि म डाक्टर गास्पर आर्नेरी हू।

कप्तान भडक उठा। उसने हर शब्द धीरे धीरे और तलवार टनकारते हुए कहा—

महल मे पहुच जाने के लिए आप झूठ नाम का सहारा ले रहे ह। डाक्टर गास्पर आर्नेरी रातो को सडका पर नही घूमते। आज की रात तो खास तौर पर ऐसा नही हो सकता। इस समय वे एक बहुत ही जरूरी काम मे लगे हुए ह—वे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया को ठीक ठाक कर रहे ह। वे तो कल सुबह ही महल मे आयेंगे। और आपको म धोखेबाज़ी के लिए गिरफ्तार करता हू!

क्या?! अब डाक्टर के भडकने की बारी थी।

क्या?! वह मुझ पर यकीन नही करना चाहता? खैर म अभी उसे गुडिया दिखाता हू! डाक्टर ने गुडिया की ओर हाथ बढाया —मगर

गुडिया अपनी जगह पर नही थी। डाक्टर जब सपने देख रहे थे उसी बीच गुडिया बग्घी से नीचे जा गिरी थी।

डाक्टर को ठडे पसीने आ गय।

शायद म सपना देख रहा हू? डाक्टर के मन मे यह खयाल आया।

ओह नही! यह तो हकीकत थी।

तो अब कहिय! दात पीसते और लालटन को उगलियो के बीच झुलाते हुए कप्तान बडबडाया। जहन्नुम म जाइये! आप जसे सिरफिरे बुडढ से माथापच्ची न करनी पडे इसी लिए छाड देता हू जाइये यहा से!'

अब तो कोई चारा ही नही था। कोचवान ने बग्घी मोडी। पहियो ने चर मर की, घोडा हिनहिनाया लोह की लालटेनें आखिरी बार लहरायी और बेचारे डाक्टर वापिस हो लिए।

वे अपने को बस मे न रख पाय आर रो पड। ये लोग उनके साथ बहुत बुरी तरह पेश आये थे उन्हे सिरफिरा बुडढा कहा था। इतना ही नही उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया भी तो खो गयी थी! इसका मतलब यह है कि अब मेरा सिर गया।'

वे आसू बहाते रह। उनके चश्मे के शीशे धुधला गये थे और अब उन्हे कुछ भी नजर नही आता था। उनका मन हुआ कि तकिये मे सिर छिपाकर खूब रोय। मगर कोचवान ता घोडा कुदाता जा रहा था। दस मिनट तक डाक्टर का ऐसा ही बुरा हाल रहा। मगर जल्द ही उनकी सामान्य समझ बूझ लौट आई।

मैं अभी भी गुडिया को खोज सकता हू डाक्टर ने सोचा। आज रात सडक पर बहुत कम लोग आ जा रहे ह। ये सडके तो वसे ही हमेशा सुनसान रहती ह। मुमकिन है इस बीच वहा से कोई भी व्यक्ति न गुजरा हो "

उन्होने कोचवान को आदेश दिया कि घोडे की चाल धीमी कर दे और सडक पर नजर गडाये रहे।

'क्यो कुछ नजर आया? कुछ दिखाई दिया?' वे हर कदम पर पूछते थे।

नही कुछ भी नजर नही आया कुछ भी नही' कोचवान जवाब देता।

कोचवान ने सडक पर पडी एसी बेकार चीजो के नाम लिए जिनमे किसी की दिलचस्पी नही हो सकती थी। उसने कहा—

पीपा पडा है।'

नही यह नही '

'शीशे का अच्छा और बडा-सा टुकडा पडा है।

नही।

'टूटा हुआ जूता पडा है।'

नही' डाक्टर की आवाज अधिकाधिक धीमी होती जाती थी।

कोचवान तो सचमुच ही अपनी पूरी कोशिश कर रहा था। वह आख फाड फाडकर देख रहा था। अधेरे मे भी वह इतनी अच्छी तरह देख पाता था कि मानो बग्घी का कोचवान न होकर महासागरीय जहाज का कप्तान हो।

'आपको कही कोई गुडिया गुडिया नजर नही आ रही है? गुलाबी फाक मे?

गुडिया तो नजर नही आ रही" कोचवान ने भारी और दु खद आवाज मे उत्तर दिया।

'इसका मतलब है कि वह किसी के हाथ लग गयी अब और तलाश करने मे कोई तुक नही। इसी जगह मेरी आख लगी थी उस वक्त तक तो वह मेरे पास बठी थी आह!" और डाक्टर का मन फिर से रोने को हुआ।

कोचवान ने सहानुभूति दिखाते हुए कई बार नाक सुडकी।

'तो अब हमे क्या करना है?"

'ओह, नही जानता म कुछ नही जानता डाक्टर हाथो मे सिर थामे बठे थे और दुख तथा बग्घी के धचको से उनका सिर हिल-डुल रहा था। 'म समझता हू सब समझता हू' उन्होने कहा। यह जाहिर है बिल्कुल जाहिर है पहले से यह बात मेरे दिमाग मे क्यो नही आई! वह भाग गई, भाग गई वह गुडिया मेरी आख लग गई और वह खिसक गई। मामला बिल्कुल साफ है। वह गुडिया नही, जीती जागती

लडकी थी। मुझे तो देखते ही यह बात महसूस हुई थी। मगर इससे तीन मोटो की नजर मे तो मेरा अपराध कुछ कम सगीन नही हो जाता '

अब अचानक डाक्टर को ज़ोर की भूख महसूस हुई। वे कुछ देर चुप रहे और फिर उन्होने बहुत गम्भीरतापूर्वक कहा –

मने आज दिन को खाना नही खाया! मुझे नजदीक के किसी भोजनालय मे ले चलिए।'

भूख ने डाक्टर को शान्त कर दिया।

वे देर तक अंधेरी गलियो मे चक्कर काटते रहे। सभी भोजनालयो के दरवाजे बन्द पडे थे। उस रात उस खतरनाक रात को सभी मोट पेटवाले परेशान थे।

उन्होने नये ताले लगा दिये और दरवाजो के पीछ छोटी बडी अलमारिया रख दी थी। उन्होने खिडकियो मे परो वाली गद्दिया और धारीदार तकिये ठूस दिये थे। उनकी आखो से नीद गायब हो गयी थी। जो मोटे और धनी थे उन्हे उस रात हमला होने की आशका थी। उन्होने अपने गुस्सल कुत्तो को सुबह से ही खाने पीने को कुछ नही दिया था ताकि वे ज्यादा होशियार रहे, भूख से तिलमिलाते हुए आग बबूला हो जायें। मोटो और धनियो के लिए भयानक रात थी। उन्हें यकीन था कि लोग किसी भी क्षण फिर विद्रोह कर सकते ह। सारे शहर मे यह खबर भी फल चुकी थी कि कुछ सनिको ने तीन मोटो के साथ गद्दारी करते हुए उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया पर तलवारो से वार किये और महल छोडकर चले गये। इस खबर से धनियो और पेटुओ के परो तले की धरती ही खिसक गई थी।

बेडा गक! वे परेशान होते हुए कह रहे थे। अब तो हम सनिको पर भी भरोसा नही कर सकते। कल उन्होने जनता की बगावत कुचली और आज अपनी तोपो के मुह हमारे घरो की ओर मोड देंगे।

डाक्टर गास्पर को इस बात की उम्मीद न रही कि वे अपनी भूख को शान्त कर सकेगे, थोडा सुस्ता पायेंग। आसपास की किसी चीज़ मे कोई हरकत न थी ज़िन्दगी के कही कोई आसार न थे।

तो क्या अब घर ही लौटना होगा?' डाक्टर ने दुखी होते हुए सोचा। मगर वह तो बहुत दूर है मेरी तो भूख से जान निकल जायेगी

अचानक उन्हे किसी भुनी हुई चीज की गध आई। हा गध बहुत ही प्यारी थी शायद प्याज़ के साथ भूने गये भड के मास की। कोचवान को इसी समय थोडी-सी दूरी पर रोशनी नज़र आई। प्रकाश की पतली-सी रेखा हवा मे हिल डुल रही थी। यह रोशनी कसी है?

काश यह भाजनालय हा!' डाक्टर ने खुश हाते हुए कहा।

वे निकट पहुचे। मगर यह भोजनालय नही था।

कुछ छोट छोटे घरा से जरा परे एक खाली मदान पडा था। वहा पहियो वाला एक घर खडा था। उसी के कुछ कुछ खुले दरवाज मे से प्रकाश की रेखा छन रही थी।

कोचवान अपनी सीट से नीचे उतरा और जाच पडताल करने के लिए चल दिया। डाक्टर सभी दुर्घटनाओ को भूल भाल कर भुने हुए मास की गध मे खो गये। वे गुनगुनाने लगे चहक उठ और उहान खुशी से आखें मूद ली।

ओह यहा कही कुत्ते न हो!" कोचवान अधेरे मे से चिल्लाया। लगता है कि यहा कुछ पडिया सी ह

मगर अत अच्छा ही रहा। कोचवान पडिया चढ़कर दरवाजे के पास पहुचा और उसने दरवाज पर दस्तक दी।

कौन है? प्रकाश की पतली-सी रेखा चौडी और चमकती हुई चौकोर मे बदल गयी। दरवाजा खुला। दहलीज पर एक आदमी नजर आया। इद गिद के अधेरे और इस व्यक्ति के पीछे चमकते हुए प्रखर प्रकाश के कारण वह काले कागज का पुतला सा प्रतीत हुआ।

कोचवान ने डाक्टर की ओर से जवाब दिया—

डाक्टर गास्पर आर्नेरी। आप कौन ह? यह पहिया वाला घर किसका है?

"यह चाचा ब्रिजाक का मेलो ठेलो मे घूमनेवाला पहियेदार घर है" दहलीज पर नजर आ रही छाया ने उत्तर दिया। यह छाया अब खिल उठी थी, उत्तेजित सी प्रतीत हुई और हाथ हिलाती डुलाती बोली—'आइये पधारिये सज्जनो! चाचा ब्रिजाक की गाडी मे डाक्टर गास्पर आये है यह हमारा धय भाग्य है।"

खूब ही बढिया अन्त रहा! बहुत काफी भटक लिये थे रात के अधेरे मे! चाचा ब्रिजाक की गाडी जिदाबाद!

यहा डाक्टर, कोचवान और घोडे को पनाह मिली खाना और आराम मिला। पहियो वाला घर मेहमाननेवाज था। इस मे चाचा ब्रिजाक का घूमने फिरने वाला कलाकार-दल रहता था।

कौन भला चाचा ब्रिजाक के नाम से परिचित नही था! कौन नही जानता था मेलो ठेलो मे घूमनेवाली इस गाडी को! पर्वो त्योहारो के अवसर पर साल भर इस पहिया-गाडी के कलाकार बाजार के चौका मे अपने खेल-तमाशे पेश करते थे। कसे कमाल के थे इस दल के कलाकार! क्या बढिया होते थे इनके तमाशे! सबसे बडी बात तो यह थी कि इसी दल मे होता था रस्से पर चलनेवाला नट तिबुल।

यह तो हम जानते ही ह कि तिबुल देश के सबसे अच्छे नट के रूप मे प्रसिद्ध था। उसकी फुर्ती तो हम खुद भी सितारे के चौक मे देख चुके ह। हमे याद है कि सनिको की

गोलियो की बौछाड मे वह किस तरह ऊचे तार पर चला था।

तिबुल जब बाजार के चौको मे अपने करतब दिखाता था तो छोटे बडे सभी दर्शको के तालिया बजा-बजाकर हाथ दर्द करने लग जाते थे। दुकानदार बूढी मगतिया स्कूली बालक फौजी और बाकी सभी लोग इसी तरह ज़ोर-ज़ोर से तालिया बजाकर उसे दाद देते थे मगर अब दुकानदारो और बाके छलो का पहलेवाला जोश ठडा पड गया था— 'हम उसके लिए तालिया बजाते थे और अब वह हमारे ही विरुद्ध मोर्चा ले रहा है!

नट तिबुल ने चाचा ब्रिज़ाक की पहिया गाडी से नाता तोड लिया था और इस तरह अब यह गाडी सूनी-सूनी हो गई थी।

डाक्टर गास्पर ने इसकी कोई चर्चा नही की कि तिबुल के साथ क्या बीती थी। उन्होने उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया का भी कोई ज़िक्र नही किया।

डाक्टर गास्पर ने मेलो ठेलो मे घूमनेवाली इस गाडी इस पहियेदार घर के अन्दर क्या देखा?

डाक्टर को बडे-से तुर्की ढोल पर बिठाया गया जो जाल के समान सुनहरी झालरवाले तिकोने लाल कपड से सुसज्जित था।

यह पहियेदार घर गाडी के डिब्बे की तरह बना हुआ था। कन्वास के पर्दे लगाकर इसे कई कक्षो मे विभाजित कर दिया गया था।

रात काफी बीत चुकी थी। इस पहियेदार घर के निवासी सो रहे थे। दरवाज़ा खोलने और परछाईं सा प्रतीत होनेवाला व्यक्ति बूढ़ा मसखरा अगस्त था। इस रात वह ड्यूटी पर था। डाक्टर जब इस पहियेदार घर के निकट पहुचे थे उस समय वह अपने लिए रात का खाना पका रहा था। वास्तव मे ही वह प्याज़ के साथ भेड का मास तल रहा था।

डाक्टर ढोल पर बठे हुए इद गिद नज़र दौडा रहे थे। लकडी के बक्से पर ढिबरी

जल रही थी। दीवारो पर बारीक सफेद और गुलाबी कागजो मे लिपटे हुए चक्र धातु की चमकती हुई मूठो वाले लम्बे धारीदार चाबुक टगे हुए थे, कपडो के रग बिरगे टुकडो सुनहरे छल्लो बेल-बूटो और तारो सितारो से सुसज्जित चमकती हुई पोशाकें लटक रही थी। वहा तरह-तहर के नकाब भी नजर आ रहे थे—कुछ सीगो वाले कुछ अजीब लम्बी नाको वाले और कुछ के मुह कानो तक फले हुए। एक और नकाब था बडे-बडे कानो वाला। सबसे अजीब बात तो यह थी कि उसके कान थे तो इन्सानो जसे, मगर बहुत ही बडे बडे।

कोने मे रखे पिजरे मे एक अजीबोगरीब जानवर बठा था।

एक दीवार के पास लकडी की एक लम्बी मेज़ रखी थी। उसके ऊपर दस दर्पण लटके हुए थे। हर दपण के पास एक मोमबत्ती खडी थी अपने ही मोम से जमी हुई। ये मोमबत्तिया बुझी हुई थी।

मेज़ पर तरह-तरह के डिब्बे तूलिकायें रग, पाउडर पफ गुलाबी पाउडर और बनावटी बाल पडे थे जहा-तहा रग बिरगे धब्बे सूख रहे थे।

'आज हमने सनिको से बडी मुश्किल से अपनी जान बचाई, मसखरे ने कहा। बात यह है कि नट तिबुल हमारे ही दल का कलाकार था। सनिक हम को पकड पाना चाहते थे। वे समझते ह कि हमने उसे कही छिपा दिया है बूढ मसखरे ने बहुत उदास होते हुए अपनी बात जारी रखी। मगर हम तो ख़ुद नही जानते कि नट तिबुल कहा है। शायद उसकी हत्या कर दी गयी या उसे लोहे के पिजरे मे बन्द कर दिया गया।

मसखरे ने गहरी सास ली और पके बालो वाला अपना सिर हिलाया। पिजरे मे बठा जानवर बिल्ली जैसी आखो से डाक्टर की ओर देख रहा था।

'बडे अफसोस की बात है कि आप हमारे यहा इतनी देर से आये, मसखरे ने कहा। हम आपको बहुत प्यार करते हैं। आप हमे कुछ तसल्ली कुछ दिलासा देते। हम जानते ह कि आप ग़रीबो के, जनसाधारण के दोस्त ह। इस सिलसिले मे म आपको एक घटना याद दिलाना चाहता हू। पिछले वष के बसन्त मे हम कलेजी बाज़ार के चौक मे अपना तमाशा पेश कर रहे थे। मेरी बेटी ने वहा एक गीत गाया था "

'हा हा ' डाक्टर को याद आया। वे अचानक उत्तेजित हो उठे।

'याद है न आपको? उस समय आप भी वही थे। मेरी बेटी ने उस कचौडी के बारे मे गाना गाया था जो किसी मोटे कुलीन के पेट मे जाने के बजाय चूल्हे मे ही ज़ल जाने को अपना सौभाग्य मानती थी

हा, हा मुझे याद है तो आगे क्या हुआ था?'

'कोई कुलीन महिला, एक बुढ़िया यह गाना सुनकर नाराज़ हो गयी थी। उसने लम्बी नाको वाले अपने नौकरों को हुक्म दिया था कि वे लडकी की पिटाई करे।

हा, हा मुझे याद है। मंने उसे ऐसा नही करने दिया था। मने नौकरों को भगा दिया था। उस महिला ने जब मुझे पहचाना था तो उस पर घडो पानी पड गया था। ऐसा ही हुआ था न?

हा। बाद मे जब आप चले गये तो मेरी बेटी ने कहा कि अगर उस कुलीन बुढिया के नौकरो ने मेरी पिटाई की होती तो म शम के मारे किसी तरह भी जि दा न रह पाती आपने उसकी जान बचाई थी। वह आपका यह एहसान कभी नही भूल सकेगी!

'अब आपकी बेटी कहा है? डाक्टर ने पूछा। वे बहुत ही उत्तजित हो रहे थे।

बूढे मसखरे ने क वास के पर्दे के निकट जाकर आवाज़ दी।

कुछ अजीब सा नाम पुकारा उसने। दो ध्वनियो का कुछ एसे उच्चारण किया मानो लकडी की गोल डिबिया का बडी मुश्किल से खुलनेवाला ढक्कन खोला गया हो – सूओक!

कुछ क्षण बीते। क वास का पर्दा हटा और उसके पीछे से लडकी का अस्तव्यस्त बाला वाला कुछ कुछ झुका हुआ सिर नजर आया। वह अपनी भूरी आखो को कुछ कुछ झुकाये हुए बहुत ध्यान से और कुछ कुछ शरारती ढग से डाक्टर की ओर देख रही थी।

डाक्टर ने उसकी ओर देखा तो सकते मे आ गये – उनके सामने उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया खडी थी!

तीसरा भाग

सूझौक

आठवां अध्याय

छोटी-सी अभिनेत्री की कठिन भूमिका

हां यह वही थी!

मगर शैतान जाने, वह यहां आ कहां से गयी थी? करिश्मा? इसका क्या सवाल पैदा होता है! डाक्टर गास्पर अच्छी तरह से जानते थे कि करिश्मे नहीं होते। उन्होंने समझ लिया कि उनके साथ धोखा हुआ है छल-कपट हुआ है। गुडिया वास्तव में जीती जागती लड़की थी और जब वे असावधानी के कारण बग्घी में सो गये थे, तो वह शरारती लड़की की तरह बाहर कूद गयी थी।

'ऐसे मुस्कराने से कुछ हासिल नहीं होगा! आपकी मासूम मुस्कान से आपका जुर्म कुछ कम संगीन नहीं हो जायेगा" डाक्टर ने कड़ाई से कहा। आपको तो अपने किये की खुद ही सजा मिल गयी है। संयोगवश मैंने आपको वहां आ ढूंढा है जहां ढूंढ पाना शायद असम्भव था।

गुडिया आखें फाड़ फाड़कर उनकी ओर देख रही थी। फिर वह छोटे-से खरगोश की भांति आखें झपकाने लगी। उसने मानो कुछ न समझते हुए मसखरे अगस्त की ओर देखा। उसने गहरी सांस ली।

'कौन हैं आप? साफ-साफ बताइये!'

डाक्टर ने अपनी आवाज़ को यथाशक्ति कठोर बनाया। मगर गुडिया इतनी प्यारी थी कि उससे नाराज़ होना बहुत मुश्किल था।

तो आप मुझे भूल गये' उसने कहा। मैं सूओक हूं।

"सू-ओक' डाक्टर ने दोहराया। मगर आप तो उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया हैं!'

कैसी गुडिया! मैं तो साधारण लड़की हूं'

क्या? नहीं नहीं आप बन रही हैं!

गुडिया पर्दे से बाहर आ गई। लम्प की तेज रोशनी अब उस पर पड रही थी। वह मुस्करा रही थी, उसका अस्तव्यस्त बालो वाला सिर एक ओर को झुका हुआ था। उसके बाल किसी भूरी चिडिया के बच्चे के बालो के समान थे।

पिजरे मे बठा हुआ झबरीला जानवर गुडिया की ओर बहुत ध्यान से देख रहा था।

डाक्टर गास्पर कुछ भी नही समझ पा रहे थे। पाठकगण, थोडा सब्र कीजिये सारा राज आपकी समझ मे आ जायेगा। मगर इस समय हम एक बहुत ही महत्त्वपूण बात की ओर आपका ध्यान आकषित करना चाहते ह, जो डाक्टर गास्पर आर्नेरी की नजर से चूक गई थी। बात यह है कि आदमी जब उत्तेजित होता है तो एसी बातें भी नजर से चूक जाती हैं जिनकी ओर सामान्यत बरबस ध्यान जाता है।

वह बात यह है—पहियेदार घर में गुडिया बिल्कुल दूसरी ही नजर आ रही थी। उसकी भूरी आखो मे खुशी की चमक थी। वह गम्भीर और सतक प्रतीत हो रही थी, मगर उसके चेहरे पर दुख उदासी का नाम निशान भी नही था। इसके विपरीत यह कहा जा सकता था कि वह ऐसी शरारती लडकी थी जो शर्मीली लजीली होने का ढोग कर रही थी।

बात यही खत्म नही हो जाती। उसका वह शानदार रेशमी गुलाबी फ्राक क्या हुआ? सुनहरे गुलाबों वाले सैंडल कहा गये? उसकी पोशाक की चमक दमक सज धज, तडक भडक क्या हुई? उन्ही चीजो की बदौलत कोई भी लडकी यदि राजकुमारी नही तो नये साल के फर-वृक्ष पर सजाने के बढ़िया खिलौने जसी तो अवश्य बन जाती है। अब गुडिया बहुत ही साधारण पोशाक पहने थी। जहाजियो के नीले कालर वाला ब्लाउज, पुराने-से सडल जो कभी सफेद रहे होगे, मगर इस समय मटमले-से दिखाई दे रहे थे। वह जुराब भी नहीं पहने थी। मगर इस से आप यह न समझ बठियेगा कि इस साधारण पोशाक से गुडिया बदसूरत नजर आने लगी थी। इसके विपरीत, यह पोशाक उसे खूब जच रही थी। कभी-कभी कोई लडकी इतने बुरे ढग के कपडे लत्ते पहने होती है कि उसकी ओर देखने तक को मन नही होता, मगर जरा ध्यान देने पर बिल्कुल दूसरा ही रूप सामने आता है। वह तो बहुत प्यारी, राजकुमारी से भी अधिक प्यारी होती है।

फिर, जैसा कि आपको याद होगा, सबसे बडी बात तो यह है कि उत्तराधिकारी टुट्टी की गुडिया की छाती पर बहुत भयानक काले कटाव थे। मगर वे अब गायब थे।

यह तो बडी खुशमिजाज, बड़ी स्वस्थ गुडिया थी!

मगर डाक्टर गास्पर का किसी भी बात की ओर ध्यान नही गया। बहुत मुमकिन है कि अगले कुछ क्षणों मे डाक्टर यह सब कुछ भाप जाते, मगर तभी किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। अब मामला और भी उलझ गया। गाडी मे एक नीग्रो ने प्रवेश किया।

गुडिया काप उठी। पिजरे मे बठा हुआ जानवर अजीबोगरीब बिल्ली की तरह घुरघुराने लगा यद्यपि वह बिल्ली नही था।

हम जानते ह कि यह नीग्रो कौन था। डाक्टर गास्पर भी उसे जानते थे। उन्होने तो तिबुल को नीग्रो बनाया था। मगर और कोई इस राज़ को नही जानता था। यह परेशानी यह उलझन कोई पाच मिनट तक बनी रही। नीग्रो की हरकते भी बहुत ही भयानक थी। उसने गुडिया को हाथो मे लेकर ऊपर उठा लिया और उसके गालो और नाक को चूमने लगा। गुडिया अपने गालो को बहुत ज़ोर से दायें बायें हिला रही थी ताकि नीग्रो उन्हे चूम न पाये। नीग्रो उन्हें चूमने की कोशिश करता हुआ ऐसे लग रहा था मानो धाग के साथ लटके सेब को चखना चाहता हो। बूढ़े अगस्त ने आखें मूद ली। डर के मारे उसके चेहरे का रग जद हो गया। वह उस चीनी शहशाह की भाति सिर हिला डुला रहा था जो यह तय कर रहा हो कि अपराधी का सिर कलम करवाये या उसे शक्कर के बिना ज़िन्दा चूहा खाने की सज़ा दे?

गुडिया का सडल पर से उतरकर लम्प से जा टकराया। लैंम्प उलटकर बुझ गया। एकाएक अधेरा हो गया। भय और भी बढ गया। तभी सब ने यह देखा कि पौ फटने लगी थी। दरवाज़े की दरारो मे से प्रकाश की रेखा छनने लगी थी।

सुबह होने को है डाक्टर गास्पर ने कहा। मुझ उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया लेकर तीन मोटो के महल मे पहुचना है।

नीग्रो ने दरवाजा खोल दिया। धुधला-सा उजाला भीतर फल गया। मसखरा पहले की तरह आखें मूदे बठा था। गुडिया पर्दे के पीछे जा छिपी थी। डाक्टर गास्पर ने तिबुल को झटपट सारा किस्सा कह सुनाया। उन्होने बताया कि उत्तराधिकारी की गुडिया कैसे खो गयी थी और कसे खुशकिस्मती से इस पहियेदार घर मे मिल गयी थी।

गुडिया पर्दे के पीछे सब कुछ सुन रही थी, मगर उसकी समझ मे कुछ भी नही आ रहा था।

डाक्टर इसे तिबुल के नाम से सम्बोधित कर रहे ह! गुडिया हैरान हो रही थी। यह भला तिबुल कसे हो सकता है? यह तो भयानक नीग्रो है। तिबुल तो खूबसूरत गोरा चिट्टा है वह तो काला नही है ’

तब उसने पर्दे के पीछे से बाहर झाका। नीग्रो ने अपने लाल पतलून की जेब से एक लबोतरी-सी बोतल निकाली उसका काक खोला, उसमे से चिडिया की चीची सी हुई। नीग्रो ने इस बोतल मे से निकलनेवाला तरल पदाथ अपने तन पर मलना शुरू किया। कुछ क्षण बाद मानो करिश्मा हुआ। नीग्रो गोरा चिट्टा और सुदर हो गया काला नही रहा। अब तो कोई सदेह बाकी न रह गया—यह तिबुल ही था!

हुर्रा!" गुडिया चिल्लाई और पर्दे के पीछे से लपककर तिबुल की गदन से जा लिपटी।

मसखरे ने तो अपनी आखो से कुछ नही देखा था। इसलिए उसने यह समझ लिया कि बस अब तो कुछ बहुत ही भयानक बात हो गयी है। वह अपनी सीट से नीचे फश पर जा गिरा और निश्चल-सा पड रहा। तिबुल ने उसका पतलून पकडकर उसे उठाया।

अब गुडिया अपने आप ही तिबुल को चूमने लगी।

यह तो कमाल ही हो गया!" उसने ख़ुशी से हाफते हुए कहा। तुम ऐसे काले कसे हो गये थे? म तो तुम्हे पहचान ही न पाई

सूम्रोक!' तिबुल ने कडाई से कहा।

वह फौरन उसकी चौडी छाती से नीचे उतरकर टीन के बने फौजी की भाति उसके सामने सावधान खडी हो गई।

"क्या बात है?" उसने स्कूली छात्रा की भाति पूछा।

तिबुल ने उसके अस्तव्यस्त बालो वाले सिर पर हाथ रखा। सूम्रोक ने अपनी ख़ुशी से चमकती हुई भूरी आखो को जरा ऊपर उठाकर उसकी ओर देखा।

डाक्टर गास्पर ने कुछ देर पहले जो कुछ कहा वह तुम ने सुना था?

"हा। उन्होने कहा था कि तीन मोटो ने उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया ठीक करने के लिए उनके पास भेजी थी। वह गुडिया बग्घी मे से उतर भागी। उनका कहना है कि वह गुडिया म हू।

यह तो वे गलती कर रहे ह' तिबुल ने कहा 'म आपको यकीन दिलाता हू कि यह गुडिया नही है। यह तो मेरी नन्ही-सी दोस्त है, छोटी सी नलकी सूम्रोक है सकस के करतबो मे मेरी विश्वसनीय साथी।'

बिल्कुल सच! गुडिया ने ख़ुशी से तिबुल का समथन किया। देखो न हम दोनो तो अनेक बार एकसाथ रस्से पर चले है।" तिबुल ने उसे अपनी विश्वसनीय साथी कहा था वह इस बात से बहुत ख़ुश हुई थी।

प्यारे तिबुल! सूम्रोक फुसफुसाई और उसने तिबुल के हाथ से अपना गाल रगडा।

यह कसे हो सकता है? डाक्टर ने हैरान होते हुए कहा। क्या यह जीती जागती लडकी है? सूम्रोक यही बताते ह न आप इसका नाम हा! हा! आप ठीक कहते ह! अब सारी बात मेरी समझ मे आ गई है। मुझे याद आ गया है इस लडकी को म एक बार पहले भी देख चुका हू। हा हा मने इसे उस बुढिया के नौकरो से बचाया था जो डडे से इसकी पिटाई करना चाहते थे!" अब डाक्टर ने अपने हाथ लहराये—

'हा हा हा ! हा, अब समझ मे आया। इसीलिए मुझे उत्तराधिकारी टुट्टी की गुडिया इतनी जानी-पहचानी लगी थी। दोनो हू ब हू एक जसी हैं। यह एक अद्भुत घटना है।

अब सारी बात साफ हो गई थी और इस से हर किसी को बहुत खुशी हुई।

उजाला बढता जा रहा था। निकट ही एक मुर्गे ने बाग दी।

डाक्टर फिर से उदास हो गये।

हा, यह सब कुछ तो बहुत खूब है मगर इसका मतलब है कि उत्तराधिकारी की गुडिया अब मेरे पास नही है। इसका मतलब यह है कि म सचमुच ही उसे खो बैठा हू "

नही इसका मतलब यह है कि आपको वह मिल गई है ' लडकी को प्यार से अपने साथ सटाते हुए तिबुल ने कहा।

'क्या मतलब ?'

वही जो मने कहा है सूओक तुम तो समझती हो न मेरा मतलब ?

लगता तो ऐसा ही है " सूओक ने धीरे से उत्तर दिया।

तो क्या ख्याल है ? ' तिबुल ने पूछा।

'म तयार हू ' गुडिया ने कहा और मुस्करा दी।

डाक्टर के पल्ले कुछ नही पडा।

"इतवार के दिन जब हम लोगो की भीड के सामने अपने करतब दिखाते थे तब भी तुम मेरी बात माना करती थी। ठीक है न ? तुम धारीदार चबूतरे पर खडी होती थी। म तुम से कहता था– चलो ! ' तब तुम तार पर चढकर मेरी ओर आती थी। म भीड के ऊपर बहुत ऊचाई पर तार के मध्य मे खडा होता था। तब म अपना एक घुटना झुकाकर फिर से तुम्हें कहता था–'चलो !'–तब तुम मेरे घुटने पर पर रख मेरे कधे पर चढ जाती थी तब तुम्हें कभी डर महसूस हुआ था क्या ?'

'नही। तुम मुझ से कहते थे– चलो !'–इसका मतलब था कि मुझे शान्त स्थिर रहना चाहिये, किसी चीज से नही डरना चाहिये।'

'हा तो अब म फिर तुम से कहता हू– चलो ! '–तुम गुडिया बनोगी।

ऐसा ही सही, म गुडिया बनूगी।"

'गुडिया ? डाक्टर ने पूछा। 'क्या मतलब ? '

पाठकगण, म आशा करता हू कि आप सब कुछ समझ गये ह ! आपको तो डाक्टर गास्पर के समान परेशानियो और हैरानियो से दो चार नही होना पडा। इसलिए आप तो ऐसे उत्तेजित नही ह और बात को अधिक आसानी से समझ सकते ह।

जरा ख्याल कीजिये–डाक्टर पिछले दो दिनो से थोडी देर के लिए भी ढग से नही सो पाये थे। इसलिए उनकी काम करने की इस हिम्मत को देखकर तो केवल हैरानी ही होती है।

मुर्गे के दूसरी बाग देने के पहले ही सब कुछ तय हो गया था। तिबुल ने पूरी काय योजना तयार कर ली थी –

सूग्रोक, तुम अभिनेत्री हो। उम्र की छोटी होते हुए भी तुम्हे अपनी कला मे कमाल हासिल है। वसन्त मे जब हमारे दल ने मूक नाटक बुद्धू बादशाह पेश किया था तो उसमे तुमने पत्तागोभी की सुनहरी जड का बहुत अच्छा अभिनय किया था। फिर बैले मे तुमने उतारनी तस्वीर का अभिनय किया था और मिल मालिक से केतली मे खूब ही बदली थी। नाचने मे तुम सबसे बढ चढकर हो और गाने मे भी। तुम दूर की कौडी भी खूब लाती हो। सबसे बडी बात तो यह है कि तुम साहसी लडकी हो बहुत समझदार भी हो।

सूग्रोक के चेहरे पर खुशी की लालिमा दौड गयी थी। इतनी अधिक प्रशसा के कारण उसे तो लज्जा भी अनुभव हो रही थी।

हा तो तुम्हे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया की भूमिका अदा करनी होगी।'

सूग्रोक ने तालिया बजायी और बारी बारी से तिबुल, बूढे अगस्त और डाक्टर गास्पर को चूमा।

जरा रुको तिबुल ने अपनी बात जारी रखी। 'मुझे अभी कुछ और भी कहना है। तुम्हें मालूम ही है कि हथियारसाज़ प्रोस्पेरो तीन मोटो के महल मे लोहे के पिजरे मे बन्द है। तुम्हें उसे आज़ाद कराना होगा।

क्या पिजरा खोलना होगा?'

'हा। मैं वह राज जानता हू जो प्रोस्पेरो को महल से निकल भागने मे सहायता देगा।

'राज़?"

'हा। वहा एक सुरग है।'

तिबुल ने गुब्बारे बेचनेवाले का सारा किस्सा कह सुनाया।

इस सुरग का मुह किसी देग मे है। यह देग महल के रसोईघर मे होना चाहिए। तुम्हे इसे ढूढना होगा।

ठीक है।

अभी सूर्योदय नही हुआ था मगर पक्षी चहकने लगे थे। गाडी के दरवाज़े मे से बाहर हरी घास नजर आ रही थी। उजाला हो जाने पर पिजरे मे बन्द रहस्यपूण जानवर रहस्यमय न रहा। वहा साधारण लोमडी नज़र आने लगी थी।

'अब हमे वक्त नही गवाना चाहिए! बहुत दूर जाना है।"

डाक्टर गास्पर ने कहा –

'अब आप अपना सबसे सुन्दर फ्राक छाट लीजिये '

सूम्रोक अपने सभी फ्राक निकाल लाई। वे सभी बहुत बढ़िया थे क्योकि उसने खुद ही उन्हे तयार किया था। सभी प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों की भाति सूम्रोक की पसन्द भी बहुत बढिया थी।

डाक्टर गास्पर देर तक रग बिरगे फ्राको को ध्यान से देखते रहे।

मेरे ख्याल मे तो यह फ्राक ठीक रहेगा। टूटी हुई गुडिया के फ्राक से यह कुछ बुरा नही है। इसे पहन लीजिये। '

सूम्रोक ने यह फ्राक पहन लिया। वह गाडी के बीचोबीच खडी थी, सूर्य की पहली किरणो मे नहाती हुई सी। एकदम अनुपम थी उसकी छवि उसका रूप। उसका फ्राक गुलाबी था। मगर सूम्रोक जब हिलती डुलती थी तो एसा प्रतीत होता था मानो सुनहरी बरसात हो रही हो। फ्राक चमकता था, सरसराता था और उससे प्यारी प्यारी सुगध आती थी।

'म तयार हू," सूश्रोक ने कहा।

घडी भर मे उन्होने विदा ले ली। सरकस मे काम करनेवाले लोगो को टसुए बहाना पसन्द नही होता। वे तो अक्सर अपनी जान हथेली पर लिये रहते हं। फिर कसकर आलिगन करना भी ठीक नही था कि फ्राक मे सिलवटें न पड जायें।

जल्दी ही लौट आना!" बूढे अगस्त ने कहा और गहरी सास ली।

मं अब मजदूरो के मुहल्लो मे जाता हू। हमे वहा अपनी ताकत का अनुमान लगाना चाहिए। मजदूर मेरा इन्तजार कर रहे ह। उन्हें मालूम हो गया है कि म जिन्दा और आजाद हू।'

तिबुल ने लबादा लपेटा, चौडा सा टोप पहना काला चश्मा चढाया और बनावटी लम्बी नाक लगा ली। यह नाक काहिरा की यात्रा मूक नाटक में तुक बादशाह का अभिनय करते समय काम मे लाई जाती थी। अब कोई लाख सिर पटकने पर भी उसे पहचान नही सकता था। यह सच है कि बडी-सी नाक से उसका चेहरा भयानक हो गया था मगर उसके लिए सुरक्षित रहने का यही सबसे अच्छा तरीका था।

बूढ़ा अगस्त दहलीज पर खडा रहा। डाक्टर तिबुल और सूश्रोक गाडी से बाहर निकले।

अब पूरी तरह दिन निकल आया था।

जल्दी कीजिये जल्दी कीजिये! डाक्टर ने उतावली मचाते हुए कहा।

एक मिनट बाद वे सूश्रोक के साथ बग्घी मे जा बठे।

तुम डर महसूस नही करती?' डाक्टर ने पूछा।

सूश्रोक जवाब मे मुस्करा दी। डाक्टर ने उसका माथा चूमा।

सडके अभी भी सुनसान पडी थी। लोगो की आवाज बहुत ही कम सुनाई देती थी। मगर अचानक कोई कुत्ता जोर-जोर से भौंकने लगा। कुछ देर बाद वह ऐसे गुर्राने और चीखने लगा मानो कोई उसके मुह की बोटी छीन लेना चाहता हो।

डाक्टर ने बग्घी से बाहर झाका।

जरा गौर कीजिये यह वही कुत्ता था जिसने पहलवान लापीतूप को काटा था! मगर बात केवल इतनी ही नही थी डाक्टर ने यह दृश्य देखा। यह कुत्ता किसी व्यक्ति से उलझ रहा था। व्यक्ति लम्बा और दुबला-पतला था। उसका सिर बहुत छोटा सा था। वह सुन्दर मगर अजीब सा सूट पहने था और टिड्डा सा प्रतीत होता था। वह कोई गुलाबी, सुन्दर और समझ मे न आनेवाली चीज कुत्ते के मुह से छुडा लेने के लिए जोर लगा रहा था। सभी दिशाओ में गुलाबी टुकडे उड रहे थे।

आदमी जीत गया। उसने वह चीज़ कुत्ते के मुह् से छुडाकर छाती के साथ चिपका ली और उस दिशा मे तेज़ी से भाग चला जिधर से डाक्टर की बग्घी आ रही थी।

यह व्यक्ति जब बग्घी के बराबर पहुचा तो डाक्टर की पीठ के पीछे से झाकती हुई सूआोक ने एक भयानक चीज़ देखी। यह अजीब सा आदमी भाग नही रहा था छलागें मारता हुआ बैले नतक की भाति मानो हवा मे तर रहा था। उसके फ्राक कोट के हरे छोर पवन चक्की के पखो की भाति हवा मे लहरा रहे थे। और वह अपने हाथो मे अपने हाथो मे काले काले घावो वाली एक लडकी उठाये था।

' यह तो म हू!" सूआोक चिल्ला उठी। वह अपनी सीट पर पीछे को हट गई और उसने मखमली तकिये से मुह ढक लिया।

चीख सुन भागते हुए व्यक्ति ने मुडकर देखा। अब डाक्टर को उसे पहचानने मे देर न लगी। यह नृत्य शिक्षक था श्रीमान एक दो तीन।

नौवां अध्याय

तेज भूखवाली गुडिया

उत्तराधिकारी टूट्टी छज्जे मे खडा था। भूगोल का अध्यापक दूरबीन मे से देख रहा था।

उत्तराधिकारी टूट्टी यह माग कर रहा था कि कुतुबनुमा भी लाया जाये। मगर उसकी जरूरत नही थी।

उत्तराधिकारी टूट्टी गुडिया के लौटने की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था।

वह अत्यधिक उत्तजित रहा था इसलिए उसे बहुत गहरी और मीठी नीद आई थी।

छज्जे से नगर के फाटको से महल की ओर जानेवाली सडक साफ तौर पर दिखाई दे रही थी। नगर के ऊपर चढते हुए सूरज के कारण आखें मिचमिचा रही थी। उत्तराधिकारी हथेली से आखो पर ओट किये हुए था। वह अपनी नाक को सिकोड रहा था छीकना चाहता था, मगर उसे छीक नही आ रही थी।

अभी तो कोई भी नजर नही आ रहा," भूगोल के अध्यापक ने कहा।

इसे यह जिम्मेदारी का काम इसलिए सौंपा गया था कि भूगोलविज्ञ होने के कारण वह फासलो, विस्तारो और हिलती डुलती वस्तुओ को सबसे अधिक अच्छे ढग से समझ सकता था।

'आप यकीन के साथ कह सकते ह कि वहा कुछ भी नही है?' टूट्टी ने जोर देकर पूछा।

'मुझसे बहस नही कीजिये। दूरबीन के

अलावा मेरे पास ज्ञान है और म चीज़ो का सही अनुमान भी लगाना जानता हू। मुझे चमेली की लता दिखाई दे रही है जिसका लातीनी भाषा मे बहुत ही सु दर मगर मुश्किल सा नाम है। उसके आगे पुल ह और फिर सन्तरी नज़र आ रहे ह जिनके इदगिद तितलि या उड रही ह। इनके आगे सडक है ज़रा रुकिये! रुकिये तो!

उसने दूरबीन का शीशा घुमाया। उत्तराधिकारी टूट्टी पजा के बल खडा हो गया। उसका दिल एसे उछल रहा था मानो उसने पाठ न तयार किया हो।

हा अध्यापक ने कहा।

इसी समय तीन घुडसवार महल के पाक से सडक की ओर जाते दिखाई दिये। कप्तान बोनावे तूरा अपने घुडसवारो के साथ उस बग्घी की ओर जा रहा था जो सडक पर दिखाई दी थी।

हुर्रा! उत्तराधिकारी इतने ज़ोर से चिल्लाया कि दूर दूर के गावो मे कलहस की क्लिक का राग अलापने लगे।

छज्जे के नीचे कसरत का शिक्षक इस बात के लिए तयार खडा था कि अगर उत्तरा धिकारी खुशी के कारण पत्थर की मुडर से नीचे जा गिरे, तो वह उसे हाथा मे साध ले।

हा तो डाक्टर की बग्घी महल की ओर जा रही थी। अब न तो दूरबीन की जरूरत रही थी और न ही भूगोल के अध्यापक के ज्ञान की। अब तो सभी को बग्घी और सफेद घोडा नज़र आ रहे थे।

बडी खुशी की घडी थी! बग्घी आखिरी पुल के पास जाकर खडी हुई। सन्तरी हट गये। उत्तराधिकारी जोर से दोनो हाथ हिलाता हुआ उछल रहा था उसके सुनहरे बाल लहरा रहे थे। आखिर उसे वह चीज़ दिखाई दी जिसका इन्तज़ार था। छोटे कद

का एक व्यक्ति बूढे की तरह धीरे धीरे बग्घी से बाहर निकला। सन्तरी तलवार पर हाथ रखकर सम्मान प्रकट करते हुए दूर खडे थे। इस नाटे व्यक्ति ने एक अदभुत गुडिया बग्घी से बाहर निकाली। यह रेशमी फीतो मे लिपटी हुई ताजा गुलाबो के गुलदस्ते जसी लग रही थी।

सुबह के नीले-नीले आकाश और घास तथा किरणो की चमक मे यह दृश्य तो देखते ही बनता था।

घडी भर बाद गुडिया महल मे पहुच गई। वह अपने आप ही चली जा रही थी।

ओह खूब बढिया निभा रही थी सूओक अपनी भूमिका! अगर वह सचमुच की गुडियो मे जा पहुचती तो निश्चय ही वे उसे अपने समान मान लेती।

सूओक बिल्कुल शान्त और स्थिर थी। वह अनुभव कर रही थी कि उसे अपने अभिनय मे सफलता मिल रही है।

इस भूमिका से कही अधिक कठिन काम करने पडते ह वह मन ही मन सोच रही थी जसे कि जलती हुई मशाल लेकर बाजीगरी के करतब करना या दोहरी कलाबाजी लगाना

सूओक ने सरकस मे ये दोनो ही काम किये थे।

मतलब यह कि सूओक का दिल मजबूत रहा। इतना ही नही, उसे तो यह अभिनय पसन्द भी आया। डाक्टर गास्पर कही अधिक चिन्तित थे। वे सूओक के पीछे पीछे जा रहे थे। सूओक छोटे छोटे कदम उठा रही थी पजो के बल चलनेवाली बैले नतकी की भाति। उसका फ्राक हिलता डुलता, लहराता और सरसराता था।

पालिश किया हुआ फश चमचमा रहा था। वह इस फश की सतह पर गुलाबी बादल की तरह प्रतिबिम्बित हो रही थी। बडे-बडे हालो में जो चमकते हुए फर्श के कारण और भी अधिक बडे और दपणो के कारण और भी अधिक चौडे लग रहे थे, वह बहुत ही छोटी-सी लग रही थी।

ऐसा प्रतीत होता था मानो स्थिर विराट जल विस्तार पर फूलो की एक छोटी सी टोकरी बही चली जा रही हो।

सूओक खुश-खुश और मुस्कराती हुई चली जा रही थी, सन्तरियो के पास से, कवचधारी और चमडे की वर्दी पहने हुए लोगो के करीब से जो उसे स्तम्भित से देख रहे थे। वह गुजरी महल के उन कमचारियो के पास से जो जीवन मे पहली बार मुस्कराये थे।

ये लोग सूओक के पास आने पर आदरपूवक उसे रास्ता देते। ऐसा लगता मानो वह इस महल की स्वामिनी हो इस पर अधिकार पाने के लिए आई हो।

ऐसा गहरा सन्नाटा छा गया कि सूओक के हल्के-हल्के कदमो की आहट भी साफ सुनाई देती थी। यह आहट जमीन पर गिरनेवाली पखुडी के समान हल्की थी।

इसी समय सूग्रोक के समान छोटा सा ग्रौर कान्तिमय बालक चौडी चौडी सीढियो से नीचे भागा ग्रा रहा था गुडिया का स्वागत करने के लिए। यह था उत्तराधिकारी टूट्टी।

इन दोनो का कद एक जसा था।

सूग्रोक रुक गई।

तो यह है उत्तराधिकारी टूट्टी!' उसने सोचा।

उसके सामने एक दुबला पतला-सा लडका खडा था, किसी गुस्सैल लडकी से मिलता जुलता। भूरी ग्राखो वाला चेहरे पर कुछ कुछ उदासी की छाप लिये हुए। उसका ग्रस्त व्यस्त बालो वाला सिर एक ग्रोर को जरा झुका हुग्रा था।

सूग्रोक को मालूम था कि टूट्टी कौन है। वह जानती थी कि तीन मोटे कौन ह। उसे ग्रच्छी तरह ज्ञात था कि गरीब ग्रौर भूखो मरते लोग जितना लोहा जितना कोयला निकालते ह जितना ग्रनाज पदा करते ह वह सभी तीन मोटे हथिया लेते ह। वह उस कुलीन महिला को नही भूली थी जिसने ग्रपने नौकरो को उसकी पिटाई करने के लिए भेजा था। वह जानती थी कि तीन मोटे कुलीन वृद्धाए बाके छले दुकानदार ग्रौर सनिक—

वे सभी जिन्होने हथियारसाज प्रोस्पेरो को लोहे के पिजरे मे बन्द किया और अब हाथ धोकर उसके मित्र नट तिबुल के पीछे पडे ह, एक ही थली के चट्टे बट्टे ह।

सूग्रोक जब महल की ओर रवाना हुई थी तो उसने सोचा था कि उत्तराधिकारी टूट्टी बहुत भयानक व्यक्ति होगा कुलीन बुढिया जैसा। फर्क सिफ इतना कि उसकी लम्बी और पतली-सी लाल लाल जबान हमेशा बाहर लटकती रहती होगी।

मगर नही सूग्रोक को उसमे ऐसी कोई भयानक बात नजर न आई। सच तो यह है कि टूट्टी को देखकर उसे खुशी ही हुई।

वह अपनी खुशी से चमकती हुई भूरी आखो से उसकी ओर देख रही थी।

अरे, तुम हो गुडिया? उत्तराधिकारी टूट्टी ने उसका हाथ छूते हुए पूछा।

ओह, अब म क्या करू?" सूग्रोक को डर महसूस हुआ। क्या गुडिया बातें भी किया करती ह? आह, मुझ तो किसी ने पहले से कुछ बताया ही नही! मुझे तो मालूम नही कि सनिको ने जिस गुडिया को तोड डाला था वह क्या कुछ कर सकती थी "

डाक्टर गास्पर ने स्थिति को सम्भाला।

'श्रीमान जी ' डाक्टर ने रस्मी अन्दाज मे कहा 'मने आपकी गुडिया को ठीक ठाक कर दिया है! जसा कि आप अपनी आखो से देख रहे हैं मने केवल उसमे फिर से जान ही नही डाली उसे पहले से ज्यादा सजीव बना दिया है। यकीनन यह पहले से बढ़िया गुडिया बन गई है उसका फ्रॉक भी बदल दिया गया है, जो कही अधिक सुन्दर है। मुख्य बात तो यह है कि मने आपकी गुडिया को बाते करना गीत गाना और नाचना भी सिखा दिया है।

यह तो कमाल हो गया! उत्तराधिकारी ने धीरे से कहा।

'अब मुझे अपना फन दिखाना चाहिए!" सूग्रोक ने तय किया।

अब चाचा ब्रिजाक के कलाकार दल की छोटी-सी अभिनेत्री ने नये रगमच पर अपनी पहली भूमिका खेलनी शुरू की।

यह रगमच था महल का मुख्य हॉल। वहा ढेरो दशक जमा हो गये थे। सभी ओर उनकी भीड लगी हुई थी। वे सीढियो के सिरो पर खडे थे, बरामदो और गलरियो में जमा थे। वे गोल खिडकियो मे से झाक रहे थे, छज्जो में भीड लगाये थे। इसलिए कि अधिक अच्छे ढग से देख-सुन सके, वे स्तम्भो पर चढे हुए थे।

बहुत ही रग बिरगे सिर और पीठें सूय की प्रखर किरणो मे चमचमा रहे थे।

सूग्रोक अपने इदगिद बहुत-से लोगो को देख रही थी। उनके खिले हुए चेहरे उसे ताक रहे थे।

इस भीड मे हलवाई थे जिनकी उगलियो से शाख से बहनेवाली राल की भाति लाल शरबत या बादामी रग की गाढी गाढी चटनी बह रही थी। यहा मत्री भी थे जो मुर्गों के समान रग बिरग फ्राक कोट पहने थे और बन्दरो की सी हरकते कर रहे थे। इस भीड मे तग फ्राक कोटा वाले छोटे छोटे और मोटे मोटे वादक दरबारी लोग कुबडे डाक्टर लम्बी नाको वाले विद्वान और लहराते बालो वाले हरकारे भी थे। यहा मन्त्रियो की तरह ठाठदार कपडे पहने नौकर चाकर भी उपस्थित थे। ये सभी लोग एक दूसरे से चिपके खडे थे।

सभी एकदम खामोश थे। वे दम साधे गुलाबी गुडिया को देख रहे थे। यह गुडिया भी बिल्कुल शान्त थी और बारह साल की लडकी के अनुरूप गरिमा से इन सकडो नजरो का सामना कर रही थी। वह जरा भी शर्मा या झेंप नही रही थी। यहा के दशक चौक के उन दशको से अधिक माग करनेवाले नही थे जिनके सामने सूग्रोक लगभग हर दिन अपना कला प्रदशन करती थी। ओह, वे तो बहुत कठोर दशक होते थे—वे तमाशाई लोग फौजी अभिनेता, स्कूली छात्र और छोटे मोटे दुकानदार! सूग्रोक तो उनके सामने भी कभी नही घबराई डरी थी। वे कहा करते थे— सूग्रोक दुनिया की सबसे अच्छी अभिनेत्री है और उसके कालीन पर अपनी जेब का छोटा सा आखिरी सिक्का तक फेंक देते थे। बेशक यह सही है कि उस सिक्के से कलेजी की कचौडी खरीदी जा सकती थी जो जुराब बुननेवाली किसी औरत के लिए नाश्ते दोपहर और रात के खाने का काम दे सकती थी।

इस तरह सूग्रोक ने एक वास्तविक गुडिया की भूमिका अदा करनी शुरू की।

उसने अपने पजे जोडे, फिर पजा के बल खडी हुई और अपनी झुकी हुई बाहा को ऊपर उठाया। वह चीनी राजा की भाति अपनी कनिष्ठाओ को हिलाती हुई गाने लगी। उसका सिर गीत की लय के साथ साथ दायें बायें हिलने लगा।

सूग्रोक की मुस्कान मे शोखी थी, शरारत थी। मगर उसने लगातार इस बात की कोशिश की कि सभी गुडियो की भाति उसकी आखे गोल-गोल और फैली फली सी रहे।

गीत यह था—

किसी अजब विज्ञान ज्ञान से
मुझे तपाकर भट्टी मे।
नयी जिन्दगी दे डाली है
प्यारे डाक्टर गास्पर ने।।
सुनो, आह अब म भरती हू
देखो तो, म मुस्काई।
फिर से हसी-खुशी की मने

नई जिंदगी है पाई।।
तेरे पास पहुच पाने को
बहुत बार पथ मे भटकी।
भूल न जाना नाम बहन का
सूश्रोक रहे मन म अटकी।।
फिर स जिंदा हो जाने पर
सोई तो सपना आया।
अपने लिए तुझ सपने मे
जार जार रोते पाया।।
देखो तो पलक हिलती ह
कुडल मेरा लहराया।
भूल न जाना कभी बहन को
प्यारा नाम 'सूश्रोक' पाया।।

सूश्रोक टूट्टी ने धीरे से दोहराया।

टूट्टी की आख डबडबायी हुई थी और इसलिए वे दो नही, चार लग रही थी।

गुडिया न गीत खत्म किया और श्रोताओ के सम्मुख सिर झुकाया। हाल मे उपस्थित सभी लोगो ने प्रशसा करते हुए गहरी सास ली। सभी हिले डले सभी ने सिर हिलाये और अपनी खुशी जाहिर करते हुए जबान से चटखारा भरा।

वास्तव मे ही गीत की धुन बहुत प्यारी थी, यद्यपि ऐसी कमउम्र लडकी की आवाज के लिए कुछ कुछ उदासी लिये हुए थी। उसकी आवाज तो बहुत ही गजब की थी। ऐसा लगता था मानो चादी या शीश के कण्ठ से निकल रही हो।

फरिश्ते की तरह गाती है, खामोशी मे आर्केस्टा कडक्टर के शब्द सुनाई दिये।

'हा पर इसका गीत कुछ अजीब सा था तमगे लगाये हुए किसी दरबारी ने कहा।

बस आलोचना तो इतनी ही हुइ। तीन मोटे हाल मे आये। इतनी भीड देखकर वे आग-बबूला हो सकते थे, इसलिए सभी लोग दरवाजो की तरफ भाग चले। इस हडबडी गडबडी मे हलवाई ने शरबत से सना हुआ अपना पजा किसी सुदरी की पीठ पर लगा दिया। सुन्दरी चीख उठी। उसके चीखने से यह भी स्पष्ट हो गया कि उसके दात बनावटी ह, क्योंकि वे निकलकर बाहर आ गिरे थे। सनिको के मोटे कप्तान का भद्दा-सा भारी बूट इस खूबसूरत जबड के ऊपर जा पडा। बनावटी दात कचकच की आवाज करते हुए पिस गये। और प्रबधक ने फौरन घूमकर डाटा—

' कसी शम की बात है! यहा ग्रखरोट बिखरा दिये! परो तले ग्राते ह!

बनावटी जबडा खो बठनेवाली सु दरी ने चीखकर शिकायत करनी चाही। उसने हाथ भी ऊपर उठाये मगर जबडे के साथ हा उसकी ग्रावाज का भी दम निकल गया था। उसन कुछ कहा मगर किसी के पल्ले कुछ नही पडा।

क्षण भर बाद सभी फालतू लोग हाल से जा चुके थे। केवल बडे-बडे अधिकारी ही बाकी रह गये।

ग्रब सूग्रोक ग्रौर डाक्टर गास्पर तीन मोटो के सामने खड थे।

ऐसा लगता था कि पिछले दिन घटी घटनाग्रो से तीन मोटा को कोई परेशानी नही हुई थी। वे तो पाक मे डाक्टर की देख रेख मे गेंद खलते रहे थे। शरीर मे चुस्ती फुर्ती लाने के लिए वे ग्रक्सर एसा करते थे। वे बहुत थक गये थे। पसीने से सराबोर उनके चेहरे चमक रहे थे। उनकी कमीजें पीठो से चिपकी हुई थी ग्रौर पीठें हवा से फूले हुए पाला जसी लग रही थी। इनमे से एक मोटे की ग्राख के नीचे चोट का नीला काला सा निशान था जो भोडे गुलाब या खूबसूरत मेढक के समान था। दूसरा मोटा इस भोड से गुलाब को सहमी सहमी नजर से देख रहा था।

यह तो इस दूसरे मोटे ने उसके चेहरे पर गेंद दे मारा है ग्रौर चोट का खूबसूरत निशान बना दिया है ' सूग्रोक ने सोचा।

वह मोटा जिसे चोट लगी थी गुस्से से फू फा कर रहा था। डाक्टर गास्पर हतप्रभ से मुस्करा रहे थे। मोटे गौर से गुडिया को देख रहे थे। ख शी से चमकते हुए उत्तराधिकारी टूट्टी के चेहरे को देखकर मोटो का मूड ठीक हुग्रा।

'हा, तो ' एक मोटे ने कहा ग्राप ह डाक्टर गास्पर ग्रार्नेरी ?"

डाक्टर ने सिर झुकाया।

'गुडिया कैसी है? दूसरे मोटे ने पूछा।

बहुत ही खूब है! टूट्टी खुशी से चिल्लाया।

मोटो ने उत्तराधिकारी को इतना अधिक खुश कभी नही देखा था।

यह तो बहुत खुशी की बात है! गुडिया वास्तव मे बहुत ही सु दर दिखाई दे रही है "

पहले मोटे ने माथे से पसीना पोछा ग्रौर चीखकर कहा—

डाक्टर गास्पर, ग्रापने हमारा फरमान पूरा कर दिया है। ग्रब ग्राप ग्रपना इनाम माग सकते ह।"

खामोशी छा गयी।

लाल रग के विग लगाये हुए नाटा सा मुशी अपना पेन तयार किये हुए था ताकि डाक्टर जो इनाम माग वह उसे झटपट लिख ले।

डाक्टर ने यह कहा— कल अदालत चौक मे विद्रोहियो को दण्ड देने के लिए जल्लादो के दस तख्ते बनाये गये थे

उन्हें आज दण्ड दिया जायेगा एक मोट ने टोका।

मैं भी इसी की चर्चा करने जा रहा हू। मेरी आप से यह प्राथना है कि आप सभी बन्दियो की जान बख्श दें और उन्हे आज़ाद कर दें। मेरी प्राथना है कि आप सभी को माफ कर दें और तख्ते जलवा दें

लाल विगवाला मुशी तो यह प्राथना सुनकर काप उठा और उसके हाथ से पेन गिर पडा। पेन की निब बहुत ही तेज़ थी और वह दूसरे मोट के पर मे जा घुसी। वह दद से चीख उठा और एक पर पर लट्टू की तरह घूमने लगा। पहला मोटा जिसकी आख के नीचे चोट का निशान था दुर्भावना से ठठाकर हस दिया। उसे अब बदला मिल गया था।

बेडा गर्क ! ' पाव से पेन निकालते हुए दूसरा मोटा चिल्लाया। कम्बख्त बिल्कुल तीर के समान है। बेडा गर्क ! ऐसी प्राथना करना अपराध है ! आपको ऐसा इनाम मागने का अधिकार नही है !

लाल बनावटी बालो वाला मुशी अपनी जान लेकर भागा। रास्ते मे वह एक फूलदान से टकराया जो बम की सी आवाज करता हुआ नीचे गिरा और टुकड टुकडे हो गया। अब तो यहा अच्छा-खासा हगामा ही हो गया था। मोटे ने पेन निकाला और भागे जाते मुशी की ओर फेंका। मगर ऐसा मोटा आदमी भला खाक निशानेबाज हो सकता है ! पेन एक सन्तरी की पीठ मे जा घुसा। पर चूकि वह असली फौजी था इस लिये टस से मस तक नही हुआ। जब तक पहरा बदला नहीं गया पेन उसी जगह पर लगा रहा।

"म आप से अनुरोध करता हू कि उन सभी मजदूरो की जान बख्श दी जाये जिन्हे मौत की सजा दी जानेवाली है और जल्लादो के सभी तख्ते जलवा दिये जाये। डाक्टर ने धीरे से, मगर दृढ़तापूवक दोहराया।

जवाब मे तीनो मोटे ऐसे चीख उठे मानो कोई तख्ते तोड रहा हो।

नही ! नही ! नही ! ऐसा हरगिज नही हो सकता ! उन्हे जरूर सजा दी जायेगी !

'मरने का अभिनय कीजिये, डाक्टर ने फुसफुसाकर गुडिया से कहा।

सूओक बात को फौरन भाप गई। वह पजो के बल खडी हुई ददभरी आवाज मे कराही और लडखडाने लगी। उसका फ्राक पकड ली गई तितली के पखो की भाति फडफडा रहा था और उसका सिर लटक-सा गया था। ऐसा लगता था कि वह अभी ढेर हुई कि हुई।

उत्तराधिकारी उसकी ओर लपका।

' हाय ! हाय ! " वह चीख उठा।

सूओक और भी ज्यादा दर्दीली आवाज मे कराही।

' आप देख रहे ह न ? " डाक्टर गास्पर ने कहा। गुडिया फिर से दम तोडने जा रही है। उसके अन्दर लगे हुए पुर्जे बहुत ही सवेदनशील ह। अगर आप मेरी प्राथना पर कान नही देंगे तो वह बिल्कुल बेकार होकर रह जायेगी। मेरे ख्याल मे तो अगर श्रीमान उत्तराधिकारी की गुडिया बेकार का गुलाबी चिथडा बनकर रह जायेगी तो उन्हे बहुत सदमा पहुचेगा। '

उत्तराधिकारी तो आपे से बाहर हो गया। वह हाथी के बच्चे की तरह पर पटकने लगा। उसने कसकर आखें बन्द कर ली और सिर हिलाने लगा।

'हरगिज ऐसा नही होने दूगा ! हरगिज नही ! वह चीख उठा। 'डाक्टर का अनुरोध पूरा किया जाये ! म अपनी गुडिया को नही मरने दूगा ! सूओक ! सूओक ! वह फूट फूटकर रोने लगा।

ज़ाहिर है कि तीन मोटो ने हथियार फेंक दिये। फौरन हुक्म जारी कर दिया गया। विद्रोहियो को माफी दे दी गयी। डाक्टर गास्पर ख़ुश ख़ुश घर चल दिये।

अब म घोड बेचकर सोऊंगा ' डाक्टर रास्ते मे सोचते जा रहे थे।

घर लौटते हुए उन्होने नगर मे सुना कि अदालत चौक मे जल्लादो के तख्ते जल रहे ह और धनी लोग इस बात से बहुत नाराज़ ह कि गरीबो को माफ कर दिया गया है।

इस तरह सूम्रोक तीन मोटो के महल मे रह गई।

टूट्टी उसे साथ लिये हुए बाग मे आया।

उत्तराधिकारी ने परो से फूलो की क्यारियो को रौंदा बाड के काटेदार तार से टकराया और तालाब मे गिरते गिरते बचा। ख़ुशी के मारे उसे मानो अपनी सुध बुध ही नही रही थी।

क्या वह इतना भी नही समझ पा रहा कि म जीती जागती लडकी हू ? सूम्रोक को हैरानी हो रही थी। ' म तो कभी किसी के हाथो ऐसे उल्लू न बनती।"

नाश्ता लाया गया। सूम्रोक ने पेस्ट्रिया देखी और उसे याद आया कि केवल पिछले वष की पतझर मे ही उसे एक पेस्ट्री खाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। और सो भी बूढे मसखरे अगस्त ने कहा था कि वह पेस्ट्री नही मीठी पाव रोटी है। उत्तराधिकारी टूट्टी के लिये लाई गई पेस्ट्रियो की तो बात ही निराली थी। मधुमक्खिया उन्हें फूल ही समझ बठी थी और दसेक उनके इदगिद मडराने लगी थी।

हाय म क्या करू ?" सूम्रोक व्यथित होती हुई सोचने लगी। 'गुडिया भला कभी खाती भी है ? मगर गुडिया तो तरह-तरह की होती है ओह, मेरा बहुत मन हो रहा है पेस्ट्री खाने को ! '

सूम्रोक अपना मन न मार सकी।

म भी थोडी सी पेस्ट्री खाना चाहती हू उसने धीरे से कहा। उसके गाल लज्जारुण हो गये।

यह तो बडी अच्छी बात है ! ' उत्तराधिकारी बहुत ख़ुश हुआ। 'पहले तो तुम ने कभी कुछ खाना नही चाहा था। तब मुझे अकेले नाश्ता करते हुए बडी ऊब अनुभव होती थी। ओह, कितनी ख़ुशी की बात है ! तुम्हे भूख लगने लगी है "

सूम्रोक ने एक टुकडा खाया। उसके बाद एक और, एक और फिर एक और। अचानक उसने देखा कि उत्तराधिकारी की देखभाल करनेवाला नौकर जो कुछ दूर खडा हुआ था उसकी ओर देख रहा है—सो भी साधारण ढग से नही, सहमा-डरा-सा।

वह मुह बाये हुए था।

नौकर का ऐसा करना स्वाभाविक ही था।

उसने भला कब अपने जीवन मे गुडियो को खाते देखा होगा!

सूश्रोक सहम उठी। चौथी पेस्ट्री उसके हाथ से गिर गयी, सबसे अधिक क्रीम और अगूर के मुरब्बेवाली।

मगर मामला बिगडा नही। नौकर ने अपनी आखें मली और मुह बन्द कर लिया। उसने सोचा—

'यह तो मुझे भ्रम हुआ है। गर्मी की मेहरबानी है।'

उत्तराधिकारी लगातार बोलता-बतियाता रहा। आखिर थककर चुप हो गया।

गर्मी के इस वक्त गहरी नीरवता छाई हुई थी। जाहिर था कि पिछले दिन की हवा पख लगाकर कही दूर उड गई थी। अब एकदम शान्ति थी। और तो और पक्षियो ने भी पख समेट लिये थे।

ऐसी नीरवता मे उत्तराधिकारी के निकट घास पर बठी हुई सूश्रोक एक अनबूझ सी आवाज़ सुन रही थी बार बार एक ही समय दोहरायी जाती हुई। यह ध्वनि रूई मे लिपटी हुई घडी की टिक टिक के समान थी। अन्तर केवल इतना था कि घडी टिक टिक" करती है और यह ध्वनि थी धक धक की।

यह क्या है? सूश्रोक ने पूछा।

क्या?" उत्तराधिकारी ने आश्चय से एक वयस्क की भाति अपनी नज़र ऊपर उठाई।

'यह धक धक की आवाज शायद यह घडी है? तुम्हारे पास घडी है क्या?

फिर से खामोशी छा गई और इस खामोशी मे फिर से यह धक धक सुनाई दी। सूश्रोक ने उगली उठाकर चुप रहने का सकेत किया। उत्तराधिकारी ने भी ध्यान से इस आवाज़ को सुना।

यह घडी नही है उत्तराधिकारी ने धीरे से कहा। "यह तो मेरा लोहे का दिल है जो धडक रहा है

दसवा अध्याय

चिडियाघर

दो बजे उत्तराधिकारी टट्टी को पढाई के कमरे मे बुला लिया गया। पाठ का समय हो गया था। सूश्रोक अकेली रह गई।

किसी को इस बात का सान-गुमान भी नही हुआ कि सूश्रोक जीती जागती लडकी है। शायद उत्तराधिकारी टट्टी की असली गुडिया जो अब नृत्य शिक्षक श्रीमान एक दो-तीन के पास थी, सूश्रोक की भाति ही सजीव लगती होगी। निश्चय ही किसी बहुत बढिया कारीगर

के निपुण हाथो ने उसे बनाया होगा। हा, यह सच है कि वह पेस्ट्रिया नही खाती थी। मगर शायद उत्तराधिकारी टूट्टी ने सही कहा था कि उसे भूख ही नही लगती थी। तो खर इस तरह सूओक अकेली रह गई।

स्थिति खासी उलझी उलझायी थी।

बहुत बडा महल भूल भुलया से ढेरो दरवाजे बरामदे और सीढिया।

दहशत पदा करनेवाले सन्तरी विभिन्न रगो के विग लगाये हुए अनजाने अपरिचित कठोर लोग खामोशी और चमक दमक।

सूओक की ओर कोई ध्यान नही दे रहा था।

वह उत्तराधिकारी के सोने के कमरे मे खिडकी के पास खडी थी।

तो मुझ अपने काम की योजना बना लेनी चाहिये सूओक ने तय किया। हथियारसाज प्रोस्पेरो लोहे के जिस पिजरे मे बद है वह उत्तराधिकारी टूट्टी के चिडियाघर मे रखा है। मुझे किसी तरह वहा पहुचना चाहिये।

यह तो आप जानते ही ह कि जीते जागते बच्चो को उत्तराधिकारी के निकट भी नही फटकने दिया जाता था। उसे तो बद घोडा-गाडी मे भी कभी नगर नही ले जाया गया था। वह ता महल मे ही बडा हुआ था। उसे विज्ञानो की शिक्षा दी जाती थी, जालिम बादशाहो और सेनानायको के बारे मे किताबें पढकर सुनाई जाती थी। उसके आसपास रहनेवाले लोगो के लिये हसना मुस्कराना मना था। उसके सभी शिक्षक और अध्यापक दुबले-पतले थे, ऊचे कद के बूढ थे कसकर भीचे हुए पतले होठो और मटले चेहरो वाले। इसके अलावा उन सब के हाजमे भी खराब रहते थे। गडबड हाजमेवाले लोग भी कभी हसते ह!

उत्तराधिकारी टूट्टी ने कभी जोर की हसी गूजते हुए ठहाके नही सुने थे। हा कभी-कभार नशे मे धुत्त किसी कसाई या अपनी ही तरह के मोटे मोट मेहमानो की दावत करनेवाले तीन मोटो के ठहाके उसे जरूर सुनाई देते थे। मगर इन्हे प्यारी हसी थोडे ही कहा जा सकता था! यह तो भयानक चीख चिघाड होती थी। इस से मन खिलता नही दहल उठता था।

मुस्कराती तो थी केवल गुडिया। मगर तीन मोट गुडिया की मुस्कान को खतरनाक नही मानते थे। फिर गडिया बोलती तो थी ही नही। वह उत्तराधिकारी कों उन बहुत सी बातो के बारे मे कुछ नही बता सकती थी जो महल के पाक और लोहे के पुलो पर पहरा देते हुए सतरी उसकी नजरो से दूर रखते थे। इसी लिये वह जनता, गरीबी, भूखे बच्चो कारखानो खानो जलखानो और किसानो के बारे मे कुछ नही जानता था। इसी लिये उसे यह मालूम नही था कि धनी लोग गरीबो को मेहनत करने

क लिये मजबूर करते ह और गरीबो के थके-हारे हाथो द्वारा तयार की जानेवाली सभी चीजें हथिया लेते है।

तीन मोटे अपन उत्तराधिकारी को बहुत ही क्रोधी बहुत ही क्रूर बनाना चाहते थे। उसे बच्चो से दूर रखा गया और उसके लिये चिडियाघर बना दिया गया।

अच्छा यही है कि वह दरिंदो को देखा करे उन्होने तय किया। उसे यह निर्जीव हृदयहीन गुडिया दे दी जाये और उसके लिये जगली दरिंदे जुटा दिये जाये। यही उचित है कि वह शरो को कच्चा मास खाते और अजगर को जिन्दा खरगोश निगलते देख। यही ठीक रहेगा कि वह दरिंदो की दिल दहलानेवाली आवाजें सुने और अगारा की तरह जलती हुई उनकी लाल-लाल आखें देखे। तभी वह निदय तभी वह सगदिल बन सकेगा।'

मगर तीन मोटो के मन के चीते न हो सके।

उत्तराधिकारी टूटी मन लगाकर पढता वीरो और बादशाहो के बारे मे रोगट खडे करनेवाली कहानिया सुनता अपने शिक्षको की फुसियो वाली नाको को नफरत से देखता —मगर वह सगदिल न बना।

उसे दरिंदो की तुलना मे गडिया कही अधिक अच्छी लगती थी।

बशक आप यह कहेगे कि बारह साल के बालक के लिए गुडियो से खलना शम की बात है। इस उम्र मे बहुत-से तो शरो का शिकार करना चाहेगे। मगर उत्तराधिकारी के सिलसिले मे इसकी एक खास वजह थी। वक्त आने पर आप को उस कारण की जानकारी हो जायेगी।

फिलहाल हम सूओक की ओर लौटते ह।

उसने शाम होने तक इन्तजार करने का फसला किया। उसे दर असल ऐसा ही करना भी चाहिये था। जाहिर है कि गुडिया का दिन दहाडे महल मे अकेले इधर उधर घूमते फिरना बडा अजीब-सा लगता।

पाठ के बाद वे फिर दोनो इकट्ठ हो गये।

तुम्हे एक बात बताऊ सूओक ने कहा "जब म डाक्टर गास्पर के यहा बीमार पडी थी तो मने एक विचित्र सपना देखा था। उस सपने में मै गुडिया से जीती जागती लडकी मे बदल गई मुझ दिखाई दिया मानो म सरकस की कलाकार थी। म अन्य कलाकारो के साथ मेलो-ठेलो मे घूमनेवाले पहियेदार घर मे रहती थी। यह गाडी एक जगह से दूसरी जगह जाती मेलो ठलो मे ठहरती और हम बड-बडे चौको मे अपने खेल तमाशे दिखाते। मै रस्से पर चलती नाचती, बाजीगरी के मुश्किल करतब करती और मूक नाटको मे तरह-तरह की भूमिकाए खलती "

उत्तराधिकारी आखें फाड फाडकर उसे देखता हुआ ये बाते सुन रहा था।

"हम बहुत गरीब लोग थे। अक्सर दोपहर का खाना नही खाते थे। हमारे पास एक बडा-सा सफेद घोडा था। उसका नाम था अनरा। फटे हुए पीले कपडे से ढके उसके चौडे जीन पर खडी होकर म बाजीगरी के करतब दिखाती। फिर वह घोडा मर गया क्योकि पूरे एक महीने तक हमारे पास उसे अच्छी तरह से खिलाने पिलाने के लिये काफी पसे नही थे '

'गरीब ? ' टूट्टी ने पूछा। "यह बात मेरी समझ मे नही आती। आप लोग गरीब क्यो थे ? "

"बात यह है कि हम गरीबो के सामने अपने खेल-तमाशे पेश करते थे। वे ताबे पीतल के छोटे छोटे सिक्के ही हमारी ओर फेंकते थे। कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि तमाशे के बाद मसखरा अगस्त अपना टोप लेकर दशको के सामने चक्कर लगाता और टोप बिल्कुल खाली ही रह जाता, उसे एक कौडी भी दशको से न मिलती।'

उत्तराधिकारी टूट्टी कुछ भी न समझ पाया।

सूओक शाम होने तक उसे एसी ही बाते सुनाती रही। उसने उसे गरीबो के कठिन जीवन बडे नगर और उस कुलीन वद्धा के बारे मे बताया जो उसकी पिटाई कराना चाहती थी। उसने चर्चा की उन अमीरो की जो जीते जागते बालको पर कुत्ते लुहा देते ह। उसने जिक्र किया नट तिबुल और हथियारसाज प्रोस्पेरो का और यह भी बताया कि मजदूर खनिक और जहाजी धनियो और मोटो की सत्ता का तख्ता उलट देना चाहते ह।

सब से अधिक तो उसने सरकस का जिक्र किया। धीरे धीरे वह अपनी बातो की तरगो में ऐसी बही कि यह तक भूल गई कि वह सपने की चर्चा कर रही है।

' म बहुत अर्से से चाचा ब्रिजाक के पहियेदार घर मे रह रही हू। मुझे तो यह भी याद नही कि किस उम्र मे म नाचने घुडसवारी करने और कसरती झूले पर तरह तरह की कसरते और करतब करने लग गई थी। ओह, मै कसे कसे बढिया करतब करना जानती हू ! उसने हाथ बजाते हुए कहा, ' मसलन, पिछले इतवार को हमने बन्दरगाह मे

अपना कायक्रम प्रस्तुत किया। वहा मने आड़ुओ की गुठलियो पर वाल्ज की धुन बजायी

"आड़ुओ की गुठलियो पर? वह कैसे?

"ओह तुम यह भी नही जानते! क्या तुमने आड़ू की गुठली स बनाई गई सीटी कभी नही देखी? यह तो बडी मामूली-सी बात है। मने बारह गुठलिया जमा की और उनकी सीटिया बना ली। जब तक उन मे सूराख नही हो गया उन्हे पत्थर पर घिसती रही घिसती रही "

"वाह, यह तो बहुत दिलचस्प बात है!'

'केवल बारह गुठलियो पर ही नही म तो चाबी पर भी वाल्ज की धुन बजा सकती हू

'चाबी पर भी? वह कैसे? जरा बजाकर दिखाओ! मेरे पास बहुत बढिया चाबी है '

इतना कहकर उत्तराधिकारी टूट्टी ने अपनी जाकेट के कालर का बटन खोला और गले मे से एक पतली-सी जजीर निकाली। इस जजीर के साथ एक छोटी-सी सफेद चाबी लटक रही थी।

'यह लो!"

'तुम इसे इस तरह छिपाये क्यो रहते हो?' सूओक ने पूछा।

'मुझे यह चाबी सरकारी सलाहकार ने दी है। यह मेरे चिडियाघर के एक पिजरे की चाबी है।'

तो क्या तुम सभी पिजरा की चाबिया अपन पास रखते हो ?

नही। मुझसे कहा गया है कि यह सबसे महत्त्वपूण चाबी है। मुझ इसे बहुत सम्भालकर रखना चाहिये

सूम्रोक ने उसे अपनी कला दिखाई। उसने चाबी का सूराखवाला भाग होठ के साथ लगाकर एक प्यारी-सी धुन बजाई।

उत्तराधिकारी ऐसा मस्त हुआ कि वह चाबी जो उसे बहुत सम्भालकर रखने के लिये सौपी गई थी उसे उसकी सुध बुध ही न रही। चाबी सूम्रोक के पास ही रह गई। उसने अनजाने ही उसे लस से सुसज्जित गुलाबी जब मे डाल लिया।

शाम हुई।

गुडिया के लिये उत्तराधिकारी टूट्टी के सोने के कमरे की बगल मे ही एक विशष कमरा तयार किया गया था।

उत्तराधिकारी टूट्टी को सपने मे अद्भुत चीज़ें दिखाई दे रही थी—लम्बी लम्बी नाको वाले ऐसे नकाब कि देखकर बरबस हसी आये, अपनी नगी पीली पीठ पर बडा सा चिकना पत्थर लादे हुए एक व्यक्ति और एक मोटा जो इस व्यक्ति पर अपना काला सा कोडा बरसा रहा था। उत्तराधिकारी ने चिथड पहने एक छोकरे को आलू खाते देखा। उसे सफेद घोडे पर सवार एक बनी ठनी बुढ़िया भी नजर आई जो आडुओ की बारह गुठलियो के सहारे वाल्ज की कोई भद्दी सी धन बजा रही थी

इसी समय इस छोटे से शयन-कक्ष से काफी दूर महल के पाक के एक कोन मे कुछ और ही घटनायें घट रही थी। आप घबरायें नही पाठकगण वहा कोई भयानक बात नही हुई थी। इस रात केवल उत्तराधिकारी टूट्टी ने ही सपने मे अजीबोगरीब चीजें नही देखी थी। एसा ही अद्भुत सपना देख रहा था वह सन्तरी जो उत्तराधिकारी टूट्टी के चिडियाघर के फाटकवाली चौकी पर पहरा देते देते ऊघने लगा था।

सन्तरी जगले के साथ टेक लगाये पत्थर पर बठा था और प्यारी-प्यारी नीद का मजा ले रहा था। चौडी मियान मे बद उसकी तलवार घुटनो के बीच रखी हुई थी। काले रेशमी रूमाल के बीच से पिस्तौल बडे इत्मीनान से उसकी बग़ल मे लटक रही थी। उसके निकट ही बजरी पर जगलेवाली लालटन रखी थी। सन्तरी के बूट और उसकी आस्तीन पर पत्तो के बीच से आ गिरनेवाला तितली का लम्बा सा लार्वा लालटेन की रोशनी मे चमक रहे थे।

एकदम शान्तिपूण वातावरण था।

हा, तो सन्तरी सो रहा था अजीबोगरीव सपना देख रहा था। उसने देखा कि उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया उसके पास आई। वह हू ब हू वसी ही थी जसी कि सुबह के समय, जब डाक्टर गास्पर आर्नेरी उसे लेकर आये थे। वही गुलाबी फ्राक, वही रेशमी

फीते वही बढिया लस वही चमक दमक। मगर अब सपने में वह जीती जागती लडकी प्रतीत हुई। वह मनमाने ढग से हिलती डुलती थी दायें बायें देखती थी, चौक उठती थी और होठो पर उगली रख देती थी।

उसका छोटा सा शरीर लालटेन की रोशनी मे चमक रहा था।

सन्तरी तो सपने मे मुस्करा भी दिया।

इसके बाद उसने गहरी सास ली अधिक सुविधाजनक ढग से बठ गया कधा जगले के साथ टिका दिया और नाक जगले मे बने हुए लोहे के गुलाब पर रख दी।

सूभ्रोक ने सन्तरी को सोते देखकर लालटेन उठाई और पजो के बल बहुत सावधानी से बाड को लाघ गई।

स तरी खर्राटे ले रहा था। नीद मे उसे ऐसे लगा मानो चिडियाघर मे शर दहाड रहे हो।

किन्तु वास्तव मे गहरा सन्नाटा था। जानवर सो रहे थे।

लालटेन की रोशनी तो बहुत ही थोडे फासले तक पड रही थी। सूभ्रोक धीरे धीरे बढती जा रही थी अधेरे मे इधर उधर देखती हुई। ख शकिस्मती ही कहिये कि रात एकदम अ धेरी नही थी। झिलमिलाते सितारे और इस जगह से कुछ दूर, वृक्षो की चोटिया और छतो पर से पडती हुई पाक के लम्पो की रोशनी इसकी कालिमा को कुछ कम कर रही थी।

लडकी बाड लाघकर एक तग-सी वीथी पर चल दी सफेद फूलो से ढकी छोटी छोटी झाडियो के बीच से।

कुछ देर बाद उसे जानवरों की गध मिली। वह फौरन इसे पहचान गई। बात यह है कि एक बार शेरो को सधानेवाला एक व्यक्ति अपने तीन शेरो और एक ग्रेट डेन कुत्ते के साथ उनके सरकस दल में आ मिला था।

सूभ्रोक खुले मदान मे जा पहुची। उसे अपने इदगिद काली-काली परछाइया सी नजर आइ मानो छोटे छोट घर खडे हो।

ये रहे पिजरे ’ सूभ्रोक फुसफुसाई।

उसका दिल जोर से धडक रहा था। उसे जानवरो से डर लगता हो ऐसी बात नही। बात यह है कि सरकस मे काम करनेवाले लोग तो यो भी बुजदिल नही होते। उसे चिन्ता थी तो केवल इस बात की कि उसके परो की आहट और लालटेन की रोशनी से कोई जानवर न जाग उठे और शोर मचाकर सन्तरी को न जगा दे।

वह पिजरो के निकट गई।

प्रोस्पेरो कहा है? सूभ्रोक चिन्तित हो रही थी।

वह लालटन ऊपर उठाकर पिजरा को देख रही थी। कही भी काई चीज़ हिल डुल न रही थी, नीरवता छाई थी। लालटन की रोशनी पिजरो की सलाखो से विभाजित होकर असमान हिस्सो मे पि ारा म प्रवेश करती हुई जानवरो पर पड रही थी।

उसे झबरीले मोटे कान नजर आये फिर कोई फला हुआ पजा और फिर कोई धारीदार पीठ दिखाई दी उकाब पख फलाकर सो रहे थे, प्राचीन मुकुटो जसे लग रहे थे। कुछ पिजरो के अन्दर अजीब सी काली आकृतिया नजर आ रही थी।

पतली रुपहली सलाखो वाले पिजरो मे ऊची नीची शाखाओ पर तोते बठे थे। जब सूओक इस पिजरे के करीब खडी हुई तो उसे लगा कि सलाख के बिल्कुल करीब बठे हुए बूढे और लम्बी लाल दाढी वाले तोते ने एक आख खोलकर उसकी ओर देखा। उसकी आख नीबू के बीज के समान थी।

इतना ही नही उसने झटपट वह आख ब द कर ली और ऐसे जाहिर किया मानो सो रहा हो। फिर सूओक को एसे प्रतीत हुआ मानो वह अपनी लाल दाढी मे मुस्कराया भी।

म तो निरी बुद्धू हू सूओक ने अपने को दिलासा दिया। मगर उसे डर महसूस हुआ।

वास्तव मे ही उस खामोशी मे कोई चीज़ हिलती डुलती सरसराती और हल्की सी चरमर की आवाज करती

कभी रात को अस्तबल या मुर्गीखाने मे जाइय। वहा की खामोशी आपको आश्चयचकित कर देगी। मगर साथ ही वहा आपको अनक हल्की हल्की आवाज़ सुनाई देंगी – पख की फडफडाहट घुरघुराहट तख्ते की चरमर और कोई बारीक सी आवाज़ जो मानो किसी सोई हुई मुर्गी के कठ से निकल गई हो।

कहा होगा प्रोस्पेरो? 'सूओक ने फिर से सोचा। मगर इस बार वह बहुत चिन्तित थी। अगर आज उसे दण्ड दिया जा चुका और उसके पिजरे मे उकाब बिठा दिया गया होगा तब?

इसी समय किसी की फटी-सी आवाज़ सुनाइ दी –

सूओक!

इसी समय उसे किसी की भारी और तेजी से चलती हुई सास और कुछ एसी आवाज़ें सुनाई दी मानो कोई बडा सा बीमार कुत्ता कराह रहा हो।

ओह!' सूओक चौक उठी।

उसने उस तरफ लालटेन की जिधर से आवाज़ आइ थी। वहा दो लाल लाल चिगारिया जल रही थी। पिजरे मे भालू के समान कोई बडी-सी काली आकृति खडी थी सलाखो को थामे हुए उन पर अपना सिर टिकाये हुए।

प्रोस्पेरो ! सूम्रोक ने धीरे से कहा।

इसी क्षण उसके दिमाग मे ढेरो ख्याल कौंध गये –

वह ऐसा भयानक क्या है ? उसके तन पर भालू की तरह बडे बड बाल उगे हुए हैं। उसकी म्राखो मे लाल लाल चिगारिया ह। उसके नाखून लम्बे म्रौर खमदार है। वह नग धडग है। यह म्रादमी नही बनमानस है

सूम्रोक रुम्रासी हो गई।

म्राखिर तुम म्रा गई सूम्रोक इस म्रजीब-से जन्तु ने कहा। मुझे यकीन था कि म तुम्हे देख पाऊगा।

नमस्ते। मै तुम्हे म्राजाद करान म्राई हू सूम्रोक ने कापती हुई म्रावाज़ मे धीरे से कहा।

म पिजरे से नही निकलूगा। मेरी म्राखिरी घडी म्रा पहुची है।'

फिर से भारी भरकम म्रौर खरखरी-सी म्रावाजें सुनाई दी। यह जन्तु गिर पडा, फिर से उठा म्रौर उसने म्रपना माथा सलाखो के साथ सटा दिया।

मेरे करीब म्राम्रो सूम्रोक।

सूम्रोक करीब गई। बडा भयानक सा चेहरा उसकी म्रोर देख रहा था। निश्चय ही यह किसी इ सान का चेहरा नही था। वह तो भडिये की थूथनी जसा लगता था। सबसे भयानक बात तो यह थी कि इस भडिये के कानो की बनावट इन्सान के काना जसी थी यद्यपि वे छोटे छोटे सख्त बालो से ढके हुए थे।

सूम्रोक का मन हुम्रा कि म्रपना मुह ढाप ले। लालटन उसके हाथो मे हिल डुल रही थी। इसके फलस्वरूप हवा मे प्रकाश के पीले पीले धब्बे चमक उठते थे।

तुम्हें मुझसे डर लगता है, सूम्रोक। म तो म्रब इ सान जसा नही लगता हू। डरो नही ! मेरे नज़दीक म्राम्रो तुम कितनी बडी हो गई हो। तुम बडी दुबली पतली हो। तुम्हारा चेहरा बडा उदास है

वह बडी मुश्किल से ही बोल पा रहा था। वह नीचे ही नीचे धसकता जा रहा था म्रौर म्राखिर म्रपने पिजरे के लकडी के फश पर लेट गया। वह बडी तेजी से सास ले रहा था उसका मुह खुला हुम्रा था म्रौर लम्बे लम्बे पीले दातो की दो कतारे दिखाई दे रही थी।

मेरी म्राखिरी घडी करीब म्रा गई है। मगर म जानता था कि मरने से पहले तुम्हें एक बार फिर देखूगा।

उसने बालो से भरी हुई बदर जसी बाह फलाकर कुछ टटोलना शुरू किया। वह अधेरे मे कुछ ढूढ लेना चाहता था। तख्ते मे से एक कील निकालने की आवाज हुई और तब वह भयानक बाह सलाखो के बीच से बाहर आई।

इस जन्तु ने एक छोटी-सी तख्ती आगे की ओर बढाते हुए कहा—

इसे ले लो। इस से सब कुछ तुम्हारी समझ मे आ जायेगा।

सूओक ने तख्ती अपनी जेब मे छिपा ली।

प्रोस्पेरो! वह धीरे से फुसफुसाई।

मगर कोई उत्तर नही मिला।

सूओक लालटेन करीब ले गई। जन्तु का मुह अब हमेशा के लिए खुला रह गया था। उसकी ज्योतिहीन आखें सूओक को ताक रही थी।

प्रोस्पेरो! सूओक के हाथ से लालटेन नीचे गिर गई। 'वह मर गया! वह मर गया! प्रोस्पेरो!"

लालटन बुझ गई।

चौथा भाग

हथियारसाज प्रोस्पेरो

ग्यारहवा अध्याय

मिठाईघर का बुरा हाल हो गया

चिडियाघर के जानवरो ने खूब शोर मचा दिया। इससे उस सन्तरी की नीद टूट गई जिस से फाटक पर हमारा परिचय हो चुका है और जिसकी लालटेन सूओक उठा ले गई थी।

जानवर चीख चिघाड रहे थे दहाड और गुर्रा रहे थे पिजरे की सलाखो पर ज़ोर ज़ोर से अपनी दुमे मार रहे थे पक्षी पख फडफडा रहे थे

सन्तरी ने अपने जबडे बजाते हुए जमुहाई ली जगले पर मुट्ठिया जमाकर अगडाई ली और आखिर होश मे आया।

तब वह एकदम चौंककर खडा हुआ। लालटन गायब थी। सितारे धीमे धीमे झिलमिला रहे थे। चमेली की प्यारी प्यारी खुशबू फली हुई थी।

'बेडा ग़र्क़!'

सन्तरी ने गुस्से से थूका। उसके थूक ने गोली का सा काम किया और चमेली के एक फूल को डाल से नीचे गिरा दिया।

जानवरो का सहगान अधिकाधिक ऊचा होता गया।

सन्तरी ने खतरे का सकेत दिया। घडी भर बाद लोग मशालें लिए उसकी ओर दौडते हुए आये। सन्तरी गालिया बक रहे थे। मशालें चट-चट की आवाज़ कर रही थी। कोई सन्तरी अपनी तलवार से अटककर गिर पडा और किसी दूसरे सन्तरी की एडी से टकराकर उसने अपनी नाक घायल कर ली।

"कोई मेरी लालटेन चुरा ले गया!'

'कोई चिडियाघर मे घुस आया है!"

"चोर!'

"विद्रोही!"

टूटी नाक और टूटी एडीवाला सन्तरी तथा अन्य सन्तरी भी अंधेरे में मशालें लहराते हुए अनजाने शत्रु की खोज करने चल दिये।

मगर उन्हें चिडियाघर मे सन्देह पैदा करनेवाली कोई चीज नजर न आई।

शेर अपने दुर्गंधवाले मुंहो को खूब खोल-खोल कर दहाड रहे थे। बबर बेचैनी से अपने पिंजरो मे इधर उधर चक्कर काट रहे थे। तोते टीं टीं और टाय टाय कर रहे थे। वे पंख फडफडाते हुए इधर-उधर फुदक रहे थे और इस तरह उनका पिंजरा एक शानदार रंग बिरंगा हिंडोला-सा लग रहा था। बन्दर अपने झूलो पर झूल रहे थे। भालू भारी भरकम आवाज मे गुर्र-गुर कर रहे थे।

रोशनी और हो हल्ले से जानवर और भी परेशान हो उठे।

सन्तरियो ने हर पिंजरे को बहुत ध्यान से देखा।

उन्हें कहीं भी कोई गडबड दिखाई न दी।

उन्हें तो वह लालटेन भी नहीं मिली जो सूओक ने गिरा दी थी।

मगर अचानक घायल नाकवाले सन्तरी ने कहा—

"वह क्या है?' इतना कहकर उसने अपनी मशाल ऊंची की।

सभी की नजरें ऊपर को उठ गई। वृक्ष की हरी भरी चोटी आकाश की छाया मे काली-सी लग रही थी। पत्ते गतिहीन थे। बहुत ही शान्त रात थी।

देख रहे हो न?" सन्तरी ने ऊंची आवाज मे पूछा। उसने अपनी मशाल हिलाई।

'हां। वहां कुछ गुलाबी-सा है "

'कुछ छोटा-सा "

'वहां बैठा हुआ है '

'अरे उल्लुओ! इतना भी नहीं जानते कि यह क्या है? यह तो तोता है। यह पिंजरे से उडकर यहां आ बैठा है। ओह, इसे शैतान ले जाये!"

वह सन्तरी जो ड्यूटी पर था और जिसने खतरे का संकेत दिया था झेंप-सी अनुभव करता हुआ चुप खडा था।

'इसे नीचे उतारना चाहिए। इसी ने सभी जानवरो को परेशान कर डाला है।"

'तुम ठीक कहते हो। वूम, चलो, चढो वृक्ष पर। तुम्हीं सबसे छोटे हो।"

वूम वृक्ष के करीब गया। वह झिझक महसूस कर रहा था।

"ऊपर जाओ और उसे दाढी से पकडकर नीचे घसीट लाओ।"

तोता बडे इत्मीनान से बैठा हुआ था। घने हरे पत्तों मे उसके पंख मशाल की रोशनी मे खूब गुलाबी नजर आ रहे थे।

बूम ने अपना टोप माथे पर झुका लिया और अपनी गुद्दी खुजलाने लगा।

मुझे डर लगता है तोते ऐसे जोर से काटते ह कि नानी याद आ जाती है।

उल्लू न हो तो!"

आखिर बूम वृक्ष पर चढ़ चला। मगर आधी ऊचाई तक जाकर रुका कुछ क्षण तक ठहरा रहा और फिर नीचे उतर आया।

"म किसी भी हालत मे यह करने को तयार नही हू! उसने कहा।" यह मेरा काम नही है। मुझे तोतो से लडना नही आता।

इसी समय किसी की बुढाई-सी गुस्से से भरी आवाज सुनाई दी। कोई व्यक्ति चप्पल फटफटाता हुआ अधेरे मे से सन्तरिया की ओर भागा आ रहा था।

"इसे मत छेडियेगा!" वह चिल्लाया। "इसे परेशान नही कीजियेगा!"

यह व्यक्ति था चिडियाघर का मुख्य कमचारी। वह बडा विद्वान और अच्छा प्राणिविज्ञ था, अर्थात् जानवरो के बारे मे वह सभी कुछ जानता था जो जानना सम्भव है।

वह शोर सुनकर जाग उठा था।

यह मुख्य कमचारी चिडियाघर में ही रहता था। वह बिस्तर से उठा और ऐसे हडबडाकर भागा हुआ आया कि रात की टोपी भी उतारना भूल गया, इतना ही नही, उसने अपनी नाक पर से चमकता हुआ बडा खटमल भी नही उतारा।

वह बहुत नाराज था। ऐसा स्वाभाविक ही था—कुछ फौजियो ने आकर उसकी दुनिया मे दखल देने की जुर्रत की थी और अब कोई बुद्धू उसके तोते को दाढी से पकडकर नीचे घसीटना चाहता था!

सन्तरियो ने उसे जाने का रास्ता दे दिया।

प्राणिविज्ञ ने अपना सिर पीछे की ओर कर ऊपर देखा। उसे भी पत्तो के बीच कुछ गुलाबी सा नजर आया।

"हा," उसने कहा यह तोता ही है। यह मेरा सबसे अच्छा तोता है। वह बडा मनमौजी है। पिजरे मे टिककर तो बठता ही नही। यह मेरा लौरा है लौरा! लौरा!' वह उसे बारीक-सी आवाज मे बुलाने लगा। इसे यही पसन्द है कि प्यार दुलार से बुलाया जाये। लौरा! लौरा! लौरा!'

सन्तरियो ने मुह बन्द कर अपनी हसी का फव्वारा रोका। यह नाटा-सा बूढा फूलदार छापेवाला गाउन और चप्पल पहने था, पीछे की ओर सिर किये था तथा उसकी रात की टोपी का फुदना जमीन चूम रहा था। वह लम्बे तडगे सन्तरियो, जलती मशालो और चीखते चिघाडते जानवरों के बीच बडा अजीब सा प्रतीत हो रहा था।

मगर सबसे दिलचस्प बात तो कुछ क्षण बाद हुई। प्राणिविज्ञ वृक्ष पर चढने लगा। बहुत फुर्ती दिखाई उसने इस काम में। ज़ाहिर था कि उसे इसका खासा अभ्यास था। एक, दो तीन! उसके गाउन के नीचे से उसका धारीदार पाजामा कुछ बार दिखाई दिया और यह प्रतिष्ठित बुजुग ऊपर चढ़ता चला गया। आखिर उसका छोटा-सा, मगर खतरनाक रास्ता तय हुआ।

लौरा!" उसने प्यार से और मुह मे मिसरी घोलते हुए फिर से कहा।

अचानक उसकी चीख गूज उठी। वह चिडियाघर से बाहर पार्क और आसपास कम से कम एक किलोमीटर के फासले तक सुनाई दी।

'शतान!" वह चिल्लाया।

सम्भवत वृक्ष पर तोता नही, कोई राक्षस बैठा था।

सन्तरी एकदम वक्ष से पीछे हट गये। प्राणिविज्ञ तेज़ी से नीचे की ओर लुढ़क चला। ख़ुशकिस्मती ही कहिये कि एक छोटे से मगर मजबूत तने ने उसे नीचे गिरने से बचा लिया। वह वही लटककर रह गया।

काश! अन्य वैज्ञानिक अब अपने सम्मानित भाई को इस हाल में देख पाते! निश्चय ही वे उसके बुढापे और उसके ज्ञान का सम्मान करते हुए जान बूझकर दूसरी ओर मुह फेर लेते! तने से लटकता हुआ उसका गाउन बहुत ही अटपटा लग रहा था।

सन्तरी सिर पर पर रखकर भागे जा रहे थे। उनकी मशालो की लपटें हवा मे लहरा रही थी। अधेरे मे ऐसा प्रतीत होता था मानो दहकते हुए अयालो वाले काले घोडे भागे जा रहे हो।

चिडियाघर मे शोर कम हो गया। प्राणिविज्ञ लटका हुआ था, न हिलता था न डुलता था। मगर उधर महल मे शोर मचा हुआ था।

वृक्ष पर रहस्यपूण तोते के नमूदार होने के कोई पन्द्रह मिनट पहले तीन मोटो को बहुत ही बुरी खबर मिली थी।

'शहर में भारी गडबड है। मजदूर बन्दूके और पिस्तौलें लिए हुए ह। वे सनिको को गोलियो का निशाना बना रहे ह और सभी मोटो को नदी मे फेंक रहे हैं।"

नट तिबुल आज़ाद है। वह इद गिद के लोगो को जमाकर अपनी सेना तैयार कर रहा है।"

'बहुत से सनिक मजदूरो के मुहल्लो मे चले गये ह। वे तीन मोटो की नौकरी नही बजाना चाहते।'

कारखानो की चिमनियो से धुआ नही निकल रहा। सभी मशीनें ठप पडी ह। खनिक खानो मे जाकर धनियो के लिए कोयला निकालने से इन्कार कर रहे ह।"

किसान ज़मीदारो से जूझ रहे ह।

मन्त्रियो ने तीन मोटो को उक्त समाचार दिये थे।

सदा की भाति इस बार भी तीन मोटे सोच सोचकर मोटे होने लगे। देखते ही देखते उन मे से प्रत्येक का आध पाव वज़न बढ गया।

म इसे बर्दाश्त नही कर सकता एक मोटे ने कहा। म और बर्दाश्त नही कर सकता यह मेरी सहनशक्ति से बाहर है ओह ओह! मेरा गला घुटा जा रहा है '

इसी क्षण उसका बफ जसा सफद कालर चटक की आवाज़ करता हुआ खुल गया।

मं मोटा होता जा रहा हू!' दूसरा मोटा चिल्लाने लगा। मुझे बचाइये!'

तीसरे मोटे ने क्षुब्ध होते हुए अपने पेट पर नज़र डाली।

इस तरह राज्यीय परिषद के सामने दो सवाल उठ खडे हुए—पहला तो यह कि किसी भी तरह मोटो की चर्बी को बढने से रोकना और दूसरे—नगर मे हो रही हलचल को शान्त करना।

पहले सवाल के बारे मे उन्होने तय किया—

नाच!

नाच! नाच! हा नाच ही। यह सबसे अच्छा व्यायाम है।

घडी भर की भी देर न होने दी जाये और फौरन नत्य शिक्षक को बुलवाया जाये। वह तीनो मोटो को बैले नाच की शिक्षा दे।'

हा यह सही है, पहले मोटे ने कहना शुरू किया मगर

ठीक इसी समय चिडियाघर से प्राणिविज्ञ की चीख सुनाई दी जिसे वक्ष पर अपने प्यारे तोते लौरा की जगह शतान दिखाई दिया था।

पाक में इधर-उधर दौडते हुए लोग बुरी तरह हाफ रहे थे।

सबसे खूबसूरत काली और नारगी रग की तितलियो के तीस जोडे डरकर पाक से उड गये।

मशालो का सागर-सा लहराने लगा। सारा पाक धुए की गध मे डूबा और दहकता हुआ एसा जगल बन गया जो अधेरे मे भागा चला जा रहा हो।

जब चिडियाघर के फाटक से कोई दस कदम का फासला रह गया तो उस ओर को भागे जाते सभी लोग अचानक ही रुक गये मानो किसी ने उनके पर काट डाले हो। वे सभी मुडे और चीखते चिल्लाते एक दूसरे के ऊपर गिरते पडते, दायें बायें मुडते, पीछे की ओर भाग चले। वे सभी अपने को बचाने के फेर मे पडे थे। मशालें जमीन पर पडी थी उन से लपटें निकल रही थी और काले-काले धुए के बादल छा गये थे।

'ओह!"

'आह!'

बचाइये!"

लोगो की चीख-पुकार से पाक मे हगामा मचा हुआ था। हवा मे ऊची उठती हुई चिगारिया इधर-उधर भागते और परेशानहाल लोगो पर लाल लाल रोशनी डाल रही थी।

चिडियाघर की ओर से शान्त दृढ और बडे-बडे कदम बढाता हुआ एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति चला आ रहा था।

इस रोशनी मे लाल बालो और चमकती हुई आखो वाला यह यक्ति फटी-सी जाकेट पहने भयानक छाया की तरह आ रहा था। वह एक हाथ से चीते के गले मे पडा हुआ वह पट्टा थामे था जो जजीर के टुकडे से बनाया गया था। पीले रग का यह पतला सा दरिदा भयानक पट्ट से निजात पाने के लिए बेकरार था। वह उछल-कूद रहा था, गुर्राता था और किसी सूरमा के झडे पर बबर की भाति अपनी लम्बी लाल जबान कभी बाहर निकालता तो कभी अदर कर लेता।

भागते हुए लोगो मे से कुछ ने पीछे मुडकर देखने की हिम्मत की तो उन्होंने देखा कि वह व्यक्ति अपने दूसरे हाथ मे एक लडकी को उठाये हुए है जो चमकता हुआ गुलाबी फ्राक पहने है। लडकी सहमी-सहमी सी गुस्से से गुर्राते हुए चीते को देख रही थी, सुनहरे गुलाबो वाले सैंडलो को परो से चिपकाये थी और अपने दोस्त के कधे से सटी जा रही थी।

'प्रोस्पेरो!' भागते हुए लोग चिल्लाये।

प्रोस्पेरो! यह तो प्रोस्पेरो है!"

'बचाइये!'

'गुडिया!'

"गुडिया!'

अब प्रोस्पेरो ने दरिंदे को छोड दिया। चीता पूछ हिलाता और बडी बडी छलागें मारता भागते हुए लोगो के पीछे दौड चला।

सूओक हथियारसाज़ के कधे से नीचे उतर गई। दौडते हुए लोग घास पर बहुत-सी पिस्तौलें गिरा गये थे। सूओक ने तीन पिस्तौलें उठा ली। उसने दो पिस्तौलें प्रोस्पेरो को दे दी और एक खुद ले ली। पिस्तौल उसके कद की आधी लम्बाई के बराबर थी। मगर वह उस काली और चमकती हुई चीज़ का इस्तेमाल करना जानती थी। उसे सरकस मे पिस्तौल से निशाना लगाना सिखाया गया था।

'आओ चलें! हथियारसाज़ ने आदेश दिया।

पार्क के अन्दर क्या हो रहा था इस बात मे उन्हें कोई दिलचस्पी नही थी। उन्होने इस बात की ओर भी ध्यान नही दिया कि चीता वहा क्या गुल खिला रहा था।

उन्हें तो महल मे से निकलने का माग ढूढ़ना था। उन्हें तो यहा से बच निकलना था।

वह वाछित देग कहा है जिसकी तिबुल ने चर्चा की थी? वह रहस्यपूण देग कहा है जिसके द्वारा गुब्बारे बेचनेवाला बच निकला था?

रसोईघर की ओर! रसोईघर की ओर! रास्ते मे अपनी पिस्तौल हिलाते हुए सूओक चिल्लाई।

वे बिल्कुल अधेरे मे झाडियो के बीच से भागे जा रहे थे, सोये हुए पक्षियो को जगाते हुए। ओह सूओक के बढिया फ्राक की अब कैसी दुर्गति हो गयी थी!

'किसी मीठी मीठी चीज़ की गध आ रही है" जगमगाती हुई खिडकियो के नीचे रुकते हुए सूओक ने कहा।

दूसरो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए लोग आम तौर पर उगली उठाते है। मगर सूओक ने इस समय उगली की जगह पिस्तौल ऊपर उठाई।

सन्तरी इनके पीछे भागे आ रहे थे। मगर ये दोनो वृक्ष की चोटी पर जा चढ़े थे। वे पलक झपकते मे खिडकियो को छूती डालो के सहारे मुख्य खिडकी मे जा पहुचे थे।

यह वही खिडकी थी जिसमें से एक दिन पहले गुब्बारे बेचनेवाला भीतर जा पहुचा था।

यह मिठाईघर की खिडकी थी।

बेशक रात काफी जा चुकी थी और खतरे का सकेत दिया जा चुका था, फिर भी यहा खूब ज़ोर शोर से काम हो रहा था। सभी हलवाई और सफेद टोप पहने उनके सहायक

चुस्त छोकरे इधर उधर दौड धूप कर रहे थे। वे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया के लौटने की खुशी मे अगले दिन के खाने के लिए फलो की एक विशेष जली तयार कर रहे थे। इस बार उन्होने केक न तैयार करने का फसला किया था। इस बात का भला कसे यकीन हो सकता था कि फिर कोई उडता हुआ मेहमान कही आ धमकेगा और फ्रासीसी क्रीम तथा अद्भुत मुरब्बो का सत्यानाश नही कर डालेगा।

मिठाईघर के बीचोबीच एक बडे से टब मे पानी उबल रहा था। सभी ओर सफेद भाप का बादल-सा छाया हुआ था। इसी बादल की छाया में रसोइये छोकरे मौज मना रहे थे--जली के लिए फल काट रहे थे।

हा तो पर तभी भाप के बादल और मौज मेले मे से हलवाइयो ने एक भयानक दश्य देखा।

खिडकी के बाहर शाखायें जोर से हिली, पत्ते ऐसे ही सरसराये जसे कि तूफान आने के पहले और फिर खिडकी के दासे पर दो यक्ति नजर आये--लाल बालो वाला देव और एक बालिका।

हाथ उठाओ!' प्रोस्पेरो ने कहा। उसके दोनो हाथो मे पिस्तौलें थी।

'खबरदार कोई भी अपनी जगह से न हिले!" अपनी पिस्तौल ऊपर करते हुए सूओक ने ऊची आवाज में कहा।

प्रोस्पेरो और सूओक को अपना आदेश दोहराने की आवश्यकता नही हुई। दो दर्जन सफेद आस्तीनें ऊपर को उठ गइ।

इसके बाद पतीले इधर उधर फेंके जाने लगे।

चमकते हुए शीशे और तांब, प्यारी-प्यारी और मीठी-मीठी गधवाली मिठाईघर की दुनिया का अब अन्त हो गया था।

हथियारसाज़ बडे देग की तलाश कर रहा था। सिर्फ उसी के मिलने पर खुद उसकी और उसकी नन्ही-सी मित्र की जान बच सकती थी जिसने उसे बचाया था।

उन्होंने बतनो को उलट पलट दिया, कडाहियो, बोगियो, तश्तरियो और प्लेटो को इधर-उधर फेंक दिया। शीशे छनछनाते हुए फर्श पर गिर रहे थे आटा सफेद बादल बनकर उड रहा था--सहारा रेगिस्तान की रेतीली आधियो की भाति, सभी ओर बादाम किशमिश और चेरियो का तूफान बरपा था, ऊचे ताको से शकर जल प्रपातो के समान नीचे गिर रही थी, फश पर फैला हुआ मीठा शबत टखनो को छू रहा था, पानी छपछपाता था, फल इधर उधर उछल रहे थे, ताबे के ढेरो बतन इधर उधर लुढक रहे थे सभी कुछ उथल-पुथल हो गया था। कभी-कभी सपने मे ऐसा होता है और चूकि यह मालूम हो कि यह सपना ही है तो आदमी मनमानी कर सकता है।

"मिल गया!" सूम्रोक चिल्लाई। 'यह रहा!

जिस चीज़ की उन्हें तलाश थी, वह मिल गई थी। देग का ढक्कन टूटी फूटी चीज़ो के ढेर मे जा मिला था। वह चिपचिपे लाल, हरे और पीले शबत मे जा गिरा था। प्रोस्पेरो को तलहीन देग दिखाई दिया।

जल्दी करो! सूम्रोक चिल्लाई। 'तुम चलो मै तुम्हारे पीछे पीछे आती हू।

हथियारसाज़ देग मे उतर गया। जब वह उसके भीतर जाकर गायब हो गया तो उसे मिठाईघर के लोगो का शोर सुनाई दिया।

सूम्रोक देग मे उतर न पायी। चीता पाक और महल मे आतक फैलाने के बाद यहा आ पहुचा था। सन्तरियो की गोलियो ने उसे जहा जहा से घायल कर दिया था, वहा-वहा उसके तन पर खून के लाल धब्बे लगे हुए थे।

हलवाई एक कोने मे सिमट गये। सूम्रोक को अपनी पिस्तौल का ध्यान न रहा और उसने चीते पर एक नाशपाती फेंकी।

चीता सिर के बल प्रोस्पेरो के पीछे देग मे कूदा। वह अधेरी और तग सुरग मे उसके पीछे-पीछे लुढकता गया। उसकी पीली पूछ देग से बाहर हिलती डुलती नज़र आ रही थी। फिर वह भी गायब हो गई।

सूम्रोक ने हाथो से आखें ढाप ली।

प्रोस्पेरो! प्रोस्पेरो! वह चीख उठी।

हलवाइयो के पेट मे हसी के मारे बल पडे जा रहे थे। इसी समय सन्तरी मिठाईघर मे आ पहुचे। उनकी वर्दिया तार-तार थी, उनके चेहरो पर खून नज़र आ रहा था और उनकी पिस्तौलो से धुआ निकल रहा था—वे चीते से जूझते रहे थे।

'प्रोस्पेरो तो अब जि दा नही बचेगा! चीता उसके टुकडे-टुकडे कर डालेगा! अब मेरे लिए सब बराबर है। तुम लोग मुझे गिरफ्तार कर सकते हो।'

सूम्रोक ने बडे इत्मीनान से अपनी बात कही। बडी-सी पिस्तौल थामे उसका छोटा-सा हाथ उसकी बगल मे लटक रहा था।

तभी गोली दगी। प्रोस्पेरो ने सुरग मे चीते पर गोली चलाई थी।

सन्तरी देग के इर्दगिद जमा थे। शरबत की झील उनके घुटनों को छू रही थी।

एक सन्तरी ने देग मे झाका। फिर उसने हाथ अन्दर डालकर कुछ बाहर खीचने की कोशिश की। दो और सन्तरियो ने मदद की। उन्होने ज़ोर लगाया और मरे हुए चीते को जो चोगे मे फसा हुआ था पूछ से पकडकर बाहर खीचा।

'वह मर चुका है," एक सन्तरी ने माथे का पसीना पोछते हुए कहा।

"वह जि दा है! वह जिन्दा है! मने उसे बचा दिया! मने जनता के मित्र की जान बचा दी है!"

ऐसे खुश हो रही थी सूग्रोक, बेचारी छोटी सूग्रोक, जिसका फ्राक फटा हुग्रा था ग्रौर जिसके सैंडलों ग्रौर बालो में लगे हुए सुनहरे गुलाबो का बुरा हाल हो गया था।

खुशी के मारे उसके चेहरे पर सुर्खी ग्रा गई थी।

उसने ग्रपने मित्र नट तिबुल द्वारा सौंपा गया कायभार पूरा कर दिया था—उसने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को ग्राज़ाद करा दिया था।

हा, तो ग्रब हम भी देखेंगे सूग्रोक को हाथ से पकडते हुए एक सन्तरी ने कहा, ग्रब हम भी देखेंगे कि तुम्हारा क्या होता है, मशहूर गुडिया! देखेंगे "

इसे तीन मोटो के पास ले चलो "

वे तुम्हें मौत की सज़ा दे देंगे।'

'उल्लू, ग्रपने फ्राक की गुलाबी लस से शरबत का धब्बा चाटते हुए सूग्रोक ने इत्मीनान से कहा। यह धब्बा उसके फ्राक पर तब लगा था जब प्रोस्पेरो ने मिठाईघर मे तोड फोड की थी।

बारहवा ग्रध्याय

नृत्य-शिक्षक एक-दो-तीन

सूग्रोक ग्रब गुडिया नही रही थी। उसका क्या हुग्रा, फिलहाल हम इसके बारे मे कुछ नही जानते। इसके ग्रलावा हम ग्रभी यह भी स्पष्ट नही करेंगे कि वृक्ष पर किस किस्म का तोता बैठा था, बूढा प्राणिविज्ञ जो शायद ग्रभी तक रस्सी पर सूखने के लिए डाली गई कमीज़ की भाति लटका हुग्रा था, इतना ग्रधिक क्यो डर गया था, हथियारसाज़ प्रोस्पेरो कैसे पिजरे से निकल भागा, चीता कहा से ग्राया ग्रौर सूग्रोक हथियारसाज़ के कधे से कसे जा सटी वह भयानक जन्तु क्या था जिसने इन्सानी ग्रावाज़ मे सूग्रोक से बातचीत की उसके द्वारा सूग्रोक को दिया गया लकडी का टुकडा कसा था, ग्रौर वह जन्तु मर क्यो गया था

समय ग्राने पर इनमे से प्रत्येक गुत्थी सुलझ जायेगी। म ग्रापको विश्वास दिलाता हू कि कही कोई करिश्मा नही हुग्रा ग्रौर हर चीज़ का ठोस कारण था।

इस समय सुबह का वक्त है। ग्राज तो प्रकृति बहुत ही निखर उठी है। प्रकृति के इस जोबन का एक कुमारी बुढ़िया पर, जिसकी सूरत बकरी से मिलती-जुलती थी, ऐसा ग्रसर पडा कि उसके सिर मे बचपन से रहनेवाला दर्द गायब हो गया। इस सुबह को ऐसी गज़ब की हवा थी। वृक्ष सरसरा नही रहे थे, बच्चों की सी खुशीभरी ग्रावाज़ मे गा रहे थे।

ऐसी सुबह को हर कोई नाचना चाहता है। इसलिए इसमे आश्चय की कोई बात नही कि नृत्य शिक्षक एक दो-तीन का हाल लोगो से खचाखच भरा हुआ था।

जाहिर है कि भूखेपेट तो कोई नही नाचता। यदि मन भारी हो, तब भी कोई नही नाचना चाहता। मगर भूखे और दुखी केवल वही थे जो आज मजदूरो के मुहल्लो मे तीन मोटो के महल पर फिर से धावा बोलने के लिए जमा हो रहे थे। मगर बाके छैले धनी महिलायें और पेटुओ तथा धनियो के बेटे-बेटिया खूब मजे मे थे। उन्हे इस बात की खबर नही थी कि नट तिबुल गरीबो और भूखे कारीगरो की फौज तैयार कर रहा है। उन्हें नही मालूम था कि छोटी-सी नतकी सूओक ने हथियारसाज प्रोस्पेरो को आजाद करा दिया है जिसकी जनता को बेहद जरूरत थी। नगर मे हो रही हलचल को वे बहुत महत्त्व नही देते थे।

'यह सब बकवास है!' एक प्यारी-सी मगर तीखी नाकवाली नवाबजादी ने नाच के सडल तयार करते हुए कहा। अगर वे फिर से महल पर हल्ला बोलेंगे तो सनिक उन्हे पिछली बार की तरह पीसकर रख देंगे।'

'यकीनन! एक जवान बाके छले ने सेब खाते और अपने फ्राक कोट की जाच करते हुए खिलखिलाकर कहा। इन खनिको और गन्दे मन्दे कारीगरो के पास न तो बन्दूकें ह न पिस्तौलें और न ही तलवारे। दूसरी तरफ सनिको के पास तो तोपें भी ह।"

खाते पीते और निश्चिन्त लोगो के जोडे एक दो तीन के घर चले आ रहे थे। उसके घर के दरवाज़े पर यह साइन बोड लगा हुआ था—

नृत्य-शिक्षक, श्रीमान एक-दो-तीन

केवल नृत्य ही नहीं, बल्कि नजाकत,
नफासत, फुर्तीलेपन, शिष्टाचार और
जीवन के प्रति काव्यमय दृष्टिकोण
की भी शिक्षा देता है।
दस नृत्यो की फीस

पेशगी ली जाती है

गोल हाल के शहदरगे लकडी के सुन्दर फर्श पर एक-दो-तीन अपनी कला सिखा रहा था।

वह काली बासुरी बजा रहा था। इसे तो करिश्मा ही कहना चाहिए कि वह उसके होंठो से लगी रहती थी। कारण कि वह लस के कफो और सफेद नम दस्तानो वाले अपने हाथो को लगातार हिलाता जा रहा था। वह बार-बार झुकता, मुद्रायें बनाता, आखें घुमाता

श्रौर ताल के साथ जूते की एडी बजाता श्रौर रह रहकर दपण की श्रोर भागा जाता। वह दर्पण मे श्रपना रूप निहारता, इस बात की जाच करता कि उसके तन पर जहा तहा बधे रिबनो की गाठें तो ठीक-ठाक हैं उसके फुलेल लगे बाल तो चमक रहे ह

जोडे नाच रहे थे। उनकी सख्या बहुत श्रधिक थी श्रौर वे पसीने से तर ब-तर थे। ऐसा लगता था मानो कोई बहुत ही बढिया रगतवाला मगर बदजायका शोरबा तयार हो रहा हो।

इस भारी भीड मे चक्कर लगाता हुश्रा कोई बाका छैला या कोई सुन्दरी कभी तो बड बडे पत्तो वाले शलजम जैसी दिखाई देती, कभी पत्तागोभी के पत्ते जसी या फिर ऐसी ही कोई समझ मे न श्रानेवाली रगीन श्रौर श्रजीब-सी चीज लगती जो शोरबे से भरी तश्तरी मे नज़र श्रा सकती हो।

एक दो तीन इस शोरबे मे कलछुल जसा लग रहा था। ऐसा तो इसलिए श्रौर भी श्रधिक सही था कि वह लम्बा दुबला पतला श्रौर लचीला था।

श्राह, श्रगर सूश्रोक इन नृत्यो को देखती तो उसे बरबस हसी श्रा जाती। उसने जब मूक नाटक बुद्धू बादशाह' में पत्तागोभी की सुनहरी गाठ की भूमिका श्रदा की थी वह तब भी कही बढिया नाची थी। फिर उसे तो नाचना भी पत्तागोभी की गाठ की तरह था।

नाच की यह महफिल जब श्रपने रग पर श्राई हुई थी तो चमडे के खुरदरे दस्तानो से ढकी तीन बडी बडी मुट्ठियो ने नृत्य शिक्षक एक-दो तीन का दरवाजा ज़ोर से खटखटाया।

ये मुट्ठिया देखने मे मिट्टी के जगो जैसी प्रतीत होती थी।

'शोरब" का नाच बन्द हो गया।

पाच मिनट बाद नृत्य शिक्षक एक-दो-तीन को तीन मोटो के महल मे ले जाया गया।

तीन सैनिक उसे लेने श्राये थे। उनमे से एक ने उसे श्रपने घोड पर बिठा लिया—पूछ की श्रोर उसका मुह करके, यानी एक-दो-तीन उल्टी दिशा मे सवारी कर रहा था। दूसरे सनिक ने उसका गत्ते का बडा-सा बक्सा उठा लिया। उसमे बहुत-सी चीजें समा सकती थी।

श्राप समझते ही हैं कि मेरे लिए कुछ सूट, वाद्ययन्त्र श्रौर विग, स्वर लिपिया तथा मनपसद गीत श्रपने साथ ले जाना बिल्कुल ज़रूरी है " एक दो तीन ने जाने की तयारी करते हुए कहा। कौन जाने मुझे कितने दिनो तक महल मे रहना पडे। म तो नफासत श्रौर खूबसूरती का दीवाना हू श्रौर इसीलिए श्रक्सर कपडे बदलता रहता हू।'

नाचनेवाले जोडे घोडो के पीछे-पीछे दौडे, उन्होने रूमाल हिलाये श्रौर एक दो तीन के सम्मान मे नारे लगाये।

सूरज श्राकाश मे ऊचा उठ चुका था।

एक दो-तीन इस बात से खुश था कि उसे महल मे बुलाया गया था। उसे तीन मोटे इसलिए पसन्द थे कि सभी श्रन्य मोटो श्रौर धनियो के बट-बटियो को वे श्रच्छे लगते थे।

धनी आदमी जितना अधिक धनी होता था एक दो-तीन को वह उतना ही अधिक अच्छा लगता था।

"बात दर असल है भी ऐसी ही,' वह सोचता, 'ग़रीबो से मुझे भला लाभ ही क्या है? वे नाचना-बाचना तो सीखते नही। वे तो हमेशा काम-काज मे जुटे रहते ह और उनके पास पैसे भी कभी नही होते। जहा तक धनी व्यापारियो, धनी बांके-छैलों और महिलाओ का सम्बन्ध है, उनके पास हमेशा ढेरो पसा होता है और करने धरने को कुछ भी नही।"

ज़ाहिर है कि एक दो-तीन अपनी अक्ल के मुताबिक बहुत समझदार था मगर हमारी दृष्टि मे बुद्धू।

बडी बेवकूफ है वह सूश्रोक! नन्ही नतकी का स्मरण करते हुए वह हैरान होता। वह ग़रीबो, फौजियो, कारीगरो और फटेहाल बालको के लिए क्यो नाचा करती है? वे तो उसे बस च द कौडिया ही देते होगे।"

स्पष्ट है कि अगर इस बुद्धू एक दो-तीन को यह मालूम होता कि उस नन्ही-सी नतकी ने गरीबो, कारीगरो और फटेहाल बालको के नेता—हथियारसाज़ प्रोस्पेरो—को बचाने के लिए अपनी जान की भी बाज़ी लगा दी तो उसे और भी अधिक हैरानी होती।

घोडे सरपट दौडे जा रहे थे।

रास्ते मे बहुत-सी अजीब घटनाए घटी। दूरी पर लगातार गोलिया दग रही थी। घरो के दरवाज़ो पर उत्तेजित लोगो की भीड जमा थी। कभी-कभार हाथो मे पिस्तौले लिये हुए दो तीन कारीगर भागते हुए सडक पार करते ऐसा प्रतीत हो सकता है कि दूकानदारो के लिए आज हाथ रगने का सबसे बढ़िया दिन था। मगर उ होने तो खिडकिया ब द कर ली थी और झरोखो के साथ अपने चर्बीचढ़े चमकते हुए गाल सटाकर बाहर देख रहे थे। भि न भि न लोगो की ज़बानी एक के बाद एक मुहल्ले मे यह खबर पहुचती जा रही थी—

प्रोस्पेरो!

"प्रोस्पेरो!

वह हमारे साथ है!'

'हमा रे सा थ है!"

रह रहकर काबू से बाहर होते और झाग उगलते घोडे पर सवार कोई स ।नक तेजी से गुज़रता। जब-तब कोई मोटा हाफता हुआ किसी सडक पर से भागता हुआ जाता। उसके दायें-बायें लाल बालो वाले नौकर होते जो अपने मालिक की रक्षा करने के लिए हाथो मे लाठिया लिये रहते।

एक जगह नौकरो ने अपने मालिक की रक्षा करने के बजाय अप्रत्याशित ही उसकी पिटाई कर डाली। इससे सारे मुहल्ले मे खू़ब शोर मचा।

एक दो-तीन ने शुरू मे तो यही समझा कि वे लोग सोफे को झाडकर उसकी धूल मिट्टी निकाल रहे ह।

नौकरो ने अपने मोटे स्वामी को कोई तीन दजन सोटियां लगाईं। फिर बारी-बारी से उसपर थूका एक दूसरे के गले मे बाहे डाली और सोटिया हिलाते तथा यह चिल्लाते हुए कही भाग चले—

'तीन मोटे मुर्दाबाद! हम धनियो की नौकरी नही बजाना चाहते! जय जनता!"

इसी बीच लोग लगातार चिल्लाते रहे—

प्रोस्पेरो!

प्रो-स्पे रो !

थोड़े मे यह कि बहुत ही भयावह वातावरण था। हवा मे बारूद की गध फली हुई थी।

आखिर अन्तिम घटना घटी।

दस सनिको ने अपने उन तीन साथियो का रास्ता रोक लिया जो एक दो-तीन को लिये जा रहे थे। ये पदल सनिक थे।

रुक जाओ ! उन दस मे से एक ने कहा। उसकी नीली आखें गुस्से से जल रही थी। 'कौन हो तुम लोग ?

अधे हो क्या ?! उस सनिक ने भी ऐसे ही गुस्से से पूछा जिसके पीछे एक दो तीन बैठा था।

सनिको के घोड़े जो पूरी ताकत से दौड़े जा रहे थे अब काबू से बाहर हो रहे थे। उनके साज हिल रहे थे। नत्य शिक्षक एक दो-तीन की टागे भी डर से हिल रही थी। यह कहना मुश्किल है कि साज ज्यादा जोर से हिल रहे थे या नृत्य शिक्षक की टागें।

हम तीन मोटो के महल के सनिक ह।

हम महल मे पहुचने की जल्दी मे ह। फौरन हमारा रास्ता छोड दीजिये !

तब नीली आखो वाले सनिक ने अपनी पिस्तौल निकाल ली और कहा—

अगर यही बात है तो अपनी पिस्तौले और तलवारे हमारे हवाले कर दो। सनिको के शस्त्रो को केवल जनता की सेवा करनी चाहिए, तीन मोटो की नही !

इन दस के दस सनिको ने अपनी पिस्तौले निकाल ली और घुडसवारो को घेर लिया।

घुडसवारो ने भी अपने शस्त्र सम्भाल लिये। एक-दो-तीन बेहोश होकर घोडे से नीचे जा गिरा। कब उसे होश आया यह ठीक ठीक कहना मुमकिन नहीं। मगर इतना निश्चित है कि एसा तभी हुआ जब उसे लेकर जानेवाले और उहे रोकनेवाले सैनिको के बीच लडाई खत्म हो गई। शायद रोकनेवालो की ही विजय हुई थी। एक दो-तीन ने अपने निकट उसी सैनिक को पडे पाया जिसके पीछे वह बैठा था। यह सनिक मरा हुआ था।

खून," एक-दो-तीन आखें मूदते हुए बुदबुदाया।

घडी भर बाद उसने जो कुछ देखा, उससे तो उसके दिल को बहुत ही जोर का धक्का लगा।

उसका गत्ते का बक्सा टूटा पडा था। उसका सारा माल मता बाहर निकला हुआ था। उसके बढिया सूट गीत और विग सडक की धूल चाट रहे थे

"आह !"

लडाई की गर्मागर्मी मे उस सनिक ने वह बक्सा नीचे फेंक दिया था। वह पत्थरो पर गिरकर टूट गया था।

आह ! आह !"

एक दो-तीन अपने माल मते की ओर लपका। उसने पागलो की तरह अपनी वास्कटें, फ्रॉक कोट जुराबें और सस्ते मगर पहली नजर मे सुन्दर दिखाई देनेवाले बक्सुओ से सजे हुए जूते समेट और फिर से जमीन पर बठ गया। उसके दुख की तो कोई सीमा ही नही थी। सभी चीजें, उसकी सभी पोशाकें ज्यो की त्यो मिल गई थीं, मगर मुख्य चीज गायब थी। इसी बीच जबकि एक-दो-तीन अपनी पाव रोटी जसी मुट्ठिया नीले आकाश की ओर उठाये बैठा था तीन घुडसवार बहुत ही तेजी से घोडे दौडाते हुए तीन मोटो के महल की ओर बढे जा रहे थे।

इनके घोडे लडाई होने के पहले उन घुडसवारो के कब्जे मे थे जो नृत्य शिक्षक एक दो तीन को अपने साथ ले जा रहे थे। लडाई के बाद उन तीन सनिको मे से एक मारा गया था और बाकी दो ने आत्मसमपण कर दिया था। वे भी जनता के पक्ष मे हो गये थे। उसी समय विजताओ को एक दो-तीन के टूटे हुए बक्से मे मलमल के टुकडे मे लिपटी हुई कोई गुलाबी चीज मिली। तब उन दस मे से तीन फौरन छीने हुए घोडो पर उछलकर सवार हो गये और उनके घोडे हवा से बात करने लगे।

सबसे आगे आगे था नीली आखो वाला सनिक। वह मलमल के टुकडे मे लिपटी हुई कोई गुलाबी चीज अपनी छाती के साथ चिपकाये था।

रास्ते के लोग एक ओर को हट जाते थे। सैनिक के टोप पर लाल फीता बधा हुआ था। इसका अर्थ था कि वह जनता की ओर हो गया है। इसीलिए रास्ते मे मिलनेवाले लोग (अगर वे मोटे या पेटू नही थे) उसके पास से गुजरने पर तालिया बजाते । मगर गौर से सैनिक की ओर देखने पर वे हक्के बक्के रह जाते। कारण कि सैनिक जो बडल अपनी छाती से चिपकाये था उसमे से एक बालिका की टागें लटक रही थी। बालिका अपने पैरो मे सुनहरे गुलाबो के बक्सुओ वाले गुलाबी सैडल पहने थी

तेरहवा अध्याय

विजय हुई

अभी अभी हमने उन असाधारण बातों की चर्चा की है जो उस सुबह हुई थी। अब हम जरा पीछे लौटकर उस रात का उल्लेख करेंगे जो इस सुबह के पहले बीती। जसा कि आप जानते ही हं उस रात को भी कुछ कम अनहोनी बाते नही हुई थी।

इसी रात को हथियारसाज़ प्रोस्पेरो तीन मोटो के महल से भागा था और सूओक रगे हाथो गिरफ्तार कर ली गई थी।

इसके अलावा इसी रात को तीन आदमी ढकी हुई लालटेनें लिए हुए उत्तराधिकारी टूट्टी के सोने के कमरे मे आये थे।

यह घटना उस समय से लगभग एक घण्टे बाद घटी जब हथियारसाज प्रोस्पेरो ने महल के मिठाईघर मे तूफान मचाया और सनिको ने सूओक को सुरग के नजदीक गिरफ्तार किया।

उत्तराधिकारी के सोने के कमरे मे अधेरा था।

बडी-बडी खिडकियो मे से सितारे झाक रहे थे।

लडका गहरी नींद सो रहा था, धीरे धीरे और चैन की सास लेता हुआ।

कमरे मे आनेवाले तीनो व्यक्ति अपनी लालटेनो की रोशनी छिपाने की भरसक कोशिश कर रहे थे।

उन्होने क्या किया, यह हम नही जानते। सिर्फ उनकी कानाफूसी सुनाई देती रही। सोने के कमरे के दरवाज़े पर पहरा देनेवाला सन्तरी ऐसे खडा रहा मानो कुछ हुआ ही न हो।

सम्भवत उत्तराधिकारी के शयन-कक्ष मे आनेवाले इन तीनो व्यक्तियो को यहा आने का कुछ विशेष अधिकार प्राप्त था।

यह तो आप जानते ही ह कि उत्तराधिकारी टूट्टी के शिक्षक दिलेर लोग नही थे। गुडियावाली घटना तो आप भूले नही होग। बाग मे जब वह भयकर काण्ड हुआ था जब सैनिको ने गुडिया के तन मे तलवारे घुसेडी थी, तो शिक्षक का कसे दम निकल गया था। आपको याद होगा कि तीन मोटो के सामने इस काण्ड की चर्चा करते हुए शिक्षक की कसे घिग्घी बध गई थी।

इस बार जो शिक्षक ड्यूटी पर था वह भी एसा ही बुज़दिल साबित हुआ।

जब ये तीनो अपरिचित लोग लालटेनें लिये हुए शयन-कक्ष मे आये तो शिक्षक कमरे मे ही था। उत्तराधिकारी की नीद मे कोई खलल न पडे वह इसी बात की देखभाल करने के लिए खिडकी के पास बठा था। इसलिए कि कही आख न लग जाये वह सितारो को देखता हुआ खगोलशास्त्र की अपनी जानकारी को ताज़ा कर रहा था।

मगर इसी समय दरवाज़ा चरमराया रोशनी हुई और तीन रहस्यपूण आकृतिया कमरे मे नज़र आइ। शिक्षक आराम कुर्सी मे दुबक गया। उसे सबसे ज्यादा फिक्र तो इस बात की थी कि कही उसकी लम्बी नाक उसका भडाफोड न कर दे। बात दर असल थी भी कुछ ऐसी ही। सितारो से झिलमिलाती खिडकी की पृष्ठभूमि में यह अनूठी नाक एकदम स्याह नजर आने लगी थी और इसकी ओर फौरन ध्यान जा सकता था।

मगर इस कायर ने यह सोचकर अपने दिल को तसल्ली दी— शायद वे इसे आराम कुर्सी के हत्थे की सजावट या सामनेवाले घर की कानिस ही समझेंगे।

लालटेनो की हल्की पीली रोशनी मे कुछ-कुछ नजर आती हुई ये आकृतिया उत्तराधिकारी के पलग के करीब आइ।

'ठीक है कोई फुसफुसाया।

"सो रहा है दूसरे ने कहा।

शी!'

परेशानी की कोई बात नही। वह गहरी नीद सो रहा है।

तो काम शुरू कीजिये।

कोई चीज़ छनकी।

शिक्षक को ठण्डे पसीने आ गये। उसे लगा कि डर के मारे उसकी नाक लम्बी होती जा रही है।

'तयार है कोई फुसफुसाया।

तो शुरू कीजिये।'

फिर से कोई चीज़ छनछनाई किसी तरल पदाथ के बोतल मे डालने की आवाज़ हुई। अचानक फिर से खामोशी छा गई।

कहा डाला जाये इसे?

कान मे।

"वह करवट लेकर सो रहा है। यह स्थिति अधिक अनुकूल भी है। डालिये कान मे

मगर बहुत सावधानी से। एक एक बूद करके।'

ठीक दस बूदें। पहली बूद बहुत ठण्डी लगेगी मगर दूसरी बूद डालने पर कोई अनुभूति नही होगी क्योकि पहली बूद फौरन असर करती है। उसके बाद तो कुछ महसूस ही नही होता।'

इस तरल पदाथ को ऐसे डालने की कोशिश कीजिये कि पहली और दूसरी बूद के बीच वक्फा न पडने पाये।

वरना लडका ऐसा अनुभव करेगा मानो किसी ने बफ छुआ दी हो और जाग जायेगा।

शी! तो डालता हू एक दो!

और अब शिक्षक ने पोस्त के फूलो की तेज़ गध अनुभव की। यह गध सारे कमरे मे फल गई थी।

तीन चार पाच छ किसी ने धीमी आवाज़ मे जल्दी जल्दी गिनती की।
डाल दी दस बूंदे।

अब यह तीन दिन तक गहरी नीद सोया रहेगा।

और उसे यह मालूम ही नही हो सकेगा कि उसकी गुडिया का क्या हुआ

उसकी तभी आख खुलगी जब सब कुछ खत्म हो चुका होगा।

'वरना वह रोने और पर पटकने लगता। तब तीन मोटे मजबूर होकर लडकी को माफ कर देते और उसकी जिन्दगी बख्श देते

ये तीनो अजनबी चल गये। तब कापता हुआ शिक्षक उठा। उसने नारगी रग के फूल की तरह जलनेवाला छोटा सा रात्रि-दीप जलाया और पलग के करीब आया।

उत्तराधिकारी टूटी लेसवाली सुदर रेशमी चादर ओढे हुए सो रहा था, छोटा सा मगर रोबीला सा प्रतीत होता हुआ। अस्तव्यस्त सुनहरे बालो वाला उसका सिर बडे-बडे तकियो पर टिका हुआ था।

शिक्षक झुका और उसने लैम्प को लडके के पीले चेहरे के करीब किया। छोटे-से कान मे तरल पदाथ की बूद ऐसे चमक रही थी मानो सीप मे मोती।

बूद मे से सुनहरी और हरी आभा एकसाथ झलक दिखा रही थी।

शिक्षक ने कनिष्ठा से इस तरल पदाथ को छुआ। छोट से कान से बूद गायब हो गयी मगर शिक्षक की सारी बाह बफ की तरह सद हो गई।

लडका गहरी नीद सो रहा था।

कुछ घण्टो के बाद उस शानदार सुबह का आरम्भ हुआ जिसका हम पीछे वणन कर चुके है।

यह तो हमे मालूम ही है कि उस सुबह को नृत्य शिक्षक एक दो तीन के साथ क्या बीती थी। मगर हमारे लिए यह जानना कही अधिक दिलचस्प है कि इस सुबह को सूओक का क्या हुआ। हमने उसे तो बहुत ही भयानक स्थिति मे छोडा था!

शुरू मे तो यह तय किया गया कि उसे तहखाने मे डाल दिया जाये।

पर यह तो बहुत झझटवाली बात होगी सरकारी सलाहकार ने कहा। 'हम झटपट उस पर न्यायपूण मकदमा चलाकर उसे सजा दे देंगे।'

'हा, यह ठीक है। लडकी को लेकर ज्यादा झझट करने की जरूरत नही है,' तीन मोटो ने सहमति प्रकट की।

मगर आपको यह नही भूलना चाहिए कि तीन मोटो को चीते से बचने के लिये भागते समय बहुत परेशानी हुई थी। इसलिए यह जरूरी था कि वे कुछ देर आराम कर ले। उन्होने कहा—

'अब हम थोडी देर सोना चाहते हैं। सुबह मुकदमे की कार्रवाई होगी।"

इतना कहकर वे अपने अपने सोने के कमरे मे चले गये।

सरकारी सलाहकार को इस बात में तनिक भी सन्देह नही था कि अदालत गुडिया, यानी बालिका को मौत की सजा देगी। इसलिए उसने उत्तराधिकारी टूट्टी को गहरी नीद सुला देने का आदेश दिया ताकि वह अपने आसुओ से कठोर दण्ड को हल्का न करवा दे।

जसा कि आप जानते ही है लालटेनवाले तीन व्यक्तियो ने यह काम पूरा कर दिया था।

उत्तराधिकारी टूट्टी गहरी नीद सो रहा था।

सूओक सन्तरियो के कमरे मे बठी थी। उसके सभी ओर सन्तरी थे। अगर कोई अजनबी यहा आ जाता तो देर तक यही सोचकर आश्चयचकित होता रहता—यह प्यारी-सी उदास-से चेहरे और सुन्दर गुलाबी फ्राकवाली लडकी सन्तरियो के बीच क्या कर रही है? वह जीनो, बन्दूको और बीयर के गिलासो के अटपटे वातावरण मे बडी अजीब-सी लग रही थी।

सन्तरी ताश खेल रहे थे, उनकी पाइपो से नीला नीला कडुआ धुआ निकल रहा था। वे एक दूसरे पर चीखते चिल्लाते और हाथापाई भी करते। ये सन्तरी अभी तक तीन मोटा क प्रति वफादार थे। वे सूओक को अपने बडे बडे घूसे दिखाते, पर पटकते और तरह तरह की सूरते बनाते।

सूओक न उनकी इन हरकतो की ओर ध्यान न दिया। उनसे पिड छुडाने और उन्हें मजा चखाने के लिए वह अपनी जबान बाहर निकाल और उन सभी की ओर मुह करके बठ गई। वह घण्टा भर ऐसे ही बठी रही।

कठौते पर बैठे रहना उसे काफी आरामदेह प्रतीत हुआ। यह सही है कि इस तरह बठने से उसके फ्राक मे सिलवटें पड रही थी। मगर वह तो वसे भी अपनी पहलेवाली खूबसूरती खो बठा था। शाखाओ मे उलझकर वह जहा-तहा से फट गया था, मशालो ने उसे कई जगह से जला दिया था, सनिको ने उसमे ढेरो सिलवटें डाल दी थी और उस पर शरबत के धब्बे लग गये थे।

सूओक को अपनी कुछ चिन्ता नही थी। उसकी उम्र की लडकिया असली खतरे से नही डरती। अपने सामने पिस्तौल तनी देखकर उन्हे भय अनुभव नही होता, मगर अधेरे कमरे मे अकेले रहने हुए उनकी जान निकलती है।

सूओक सोच रही थी— हथियारसाज़ प्रोस्पेरो आज़ाद हो गया। अब वह और तिबुल ग़रीबो का साथ लेकर महल पर धावा बोलेगे। वे मुझे आज़ाद करा लेगे।"

इसी समय जब सूओक इस तरह की बाते सोच रही थी, तीन सैनिक सरपट घोडे दौडाते हुए महल की ओर बढ जा रहे थे। हम पिछले अध्याय मे उनकी चर्चा कर चुके हैं। जसा कि आपको मालूम है उनमे से एक यानी नीली आखो वाला सैनिक एक रहस्यपूण बडल उठाय हुए था। इसमे से सुनहरे गुलाबो वाले गुलाबी सडल पहने दो पैर बाहर लटक रहे थे।

ये तीना घुडसवार जब उस पुल के निकट पहुचे जहा तीन मोटो के प्रति वफादार सन्तरी खडे थे ता उन्होंने अपने टोपो से लाल रिबन उतार लिये।

ऐसा इसलिए करना जरूरी था कि सन्तरी उन्हें रोकें टोक नही।

अगर सन्तरियो को लाल रिबन दिखाई दे जाते, तो वे उन पर गोलिया चलाने लगते। लाल रिबन तो इस बात की निशानी थे कि इन्हे लगानेवाले सनिक जनता की ओर हो गये ह।

वे बहुत ही तेजी से सन्तरियो के पास से गुजर गये। सन्तरियो का सरदार तो गिरते गिरने बचा।

'ज़रूर कोई बहुत ही जरूरी सन्देश लेकर जा रहे होगे,' नीचे गिरा हुआ अपना टोप उठाते और वर्दी से मिट्टी झाडते हुए सरदार ने कहा।

इसी समय सूग्राक की ग्राखिरी घडा निकट ग्रा गई। सरकारी सलाहकार सन्तरियों के कमरे मे ग्राया।

सन्तरी उछलकर ग्रटेंशन खड हो गये।

लडकी कहा है ? ग्रपनी एनक ऊपर करत हुए सलाहकार ने पूछा।

इधर ग्राग्रो ! मुख्य सन्तरी ने सूग्रोक को ग्रावाज़ दी।

सूग्रोक कठौते से नीचे उतरी।

सन्तरी ने बडे भद्द ढग से सूग्रोक की पटी पकडकर उसे ऊपर उठा लिया।

तीन मोटे ग्रदालत भवन म इसका इतजार कर रहे ह ' ऐनक नीचे करते हुए सलाहकार ने कहा। ' लडकी को मेरे पीछे पीछे लाग्रो।

इतना कहकर सरकारी सलाहकार सन्तरिया के कमरे से बाहर चला गया। सूग्रोक को एक हाथ पर उठाये हुए सतरा सरकारी सलाहकार के पीछे-पीछ चल दिया।

ग्रोह सुनहरे गुलाब ! ग्रोह, गुलावी रशम ! निदयी हाथ की बदौलत इन सबका बुरा हाल हुग्रा जा रहा था।

सूग्रोक पेटी के सहारे सतरी के हाथ मे लटकी हुई थी। उसे दद महसूस हा रहा था, बडी तकलीफ हो रही थी। उसने सन्तरी की कोहनी के ऊपर चुटकी काट ली। उसने चुटकी इतने जोर से काटी कि सनिक की वर्दी की मोटी ग्रास्तीन के बावजूद वह दद स तडप उठा।

सत्यानाश हो ! " उसने गाली दी ग्रौर सूग्राक उसके हाथ से नीचे जा गिरी।

क्या कहा ? सलाहकार घूमा।

इसी समय सलाहकार के कान पर ग्रप्रत्याशित ही ऐसी ज़ोर की धौल पडी कि वह ज़मीन चाटने लगा।

उसके फौरन बाद वह सतरी भी ज़मीन पर पडा दिखाई दिया जो कुछ ही क्षण पहले सूग्रोक को पेटी से पकडकर लटकाये लिये जा रहा था।

सन्तरी के कान पर भी धौल जमायी गयी थी। सो भी कसी ! ज़रा कल्पना कीजिये कि कसी ज़ोर की होगी वह धौल जिसने ऐसे हट्टे-कट्टे तथा क्रोधी सन्तरी को ज़मीन पर गिरा दिया था !

इससे पहले कि सूग्रोक मुडकर कुछ देख पाती, किसी के हाथो ने उसे फिर से झपट लिया ग्रौर उठा ले चले।

हाथ तो ये भी कठोर ग्रौर मजबूत थे, मगर दयालु प्रतीत हुए। उस सतरी क हाथो की तुलना मे जो ग्रब चमकते हुए फश पर पडा था, सूग्रोक को इन हाथो म ग्रधिक ग्राराम ग्रनुभव हुग्रा।

'डरो नही ! ' किसी ने फुसफुसाकर कहा।

मोटे बहुत बेचनी से अदालत भवन मे इन्तज़ार कर रहे थे। वे चालाक गुडिया के मुकदमे की कारवाई का खुद सचालन करना चाहते थे। उनके इदगिद कमचारी सलाहकार न्यायाधीश और मुशी बठे थे। सूरज की किरणो में रग बिरगे—गुलाबी, जामुनी भडकीले हरे लाल सफेद और सुनहरे—विग चमक रहे थे। मगर दिल खुश करनेवाली सूरज की किरणें भी इन विगो के नीचे उनके गुस्से से फूले हुए ताबडो पर रौनक नही ला सकी थी।

तीन मोटो का पहले की भाति अब भी गर्मी के मारे बुरा हाल था। उनके माथे से मटर के दानो की भाति पसीने की बूदें टपटप नीचे गिरती थी। इससे उनके सामने पडे हुए कागज खराब हो जाते थे। मुशी लगातार इन कागजो को बदलते जाते थे।

हमारा सलाहकार बहुत इतज़ार करवाता है," पहले मोटे ने फासी पर लटके हुए व्यक्ति की भाति उगलिया हिलाते हुए कहा।

आखिर प्रतीक्षा का अन्त हुआ।

तीन सनिक भवन मे आये। उन मे से एक लडकी को हाथो मे उठाये था। ओह कैसा ददनाक था लडकी का चेहरा!

उस गुलाबी फ्राक की जो केवल एक दिन पहले अपनी चमक दमक और बढिया कलात्मक सजावट से आश्चयचकित करता था अब बहुत बुरी हालत हो गई थी। सुनहरे गुलाब मुरझा गये थे चमकता हुआ सलमा और सितारे गिर चुके थे और रेशमी कपडे मे सिलवटें पड गई थी। लडकी का सिर सनिक के कधे पर निर्जीव सा लटका हुआ था। लडकी का चेहरा एकदम ज़द था और उसकी शरारती भूरी आखो मे से चमक गायब हो चुकी थी।

रग बिरगे विगो वाली महफिल में बठे लोगो ने नज़रें ऊपर उठाइ।

तीन मोटो ने हाथ मले।

मुशियो ने अपने लम्बे लम्बे कानो से लम्बी लम्बी कलमे निकाली।

'हु,' पहले मोटे ने कहा। 'सरकारी सलाहकार कहा है?'

वह सनिक जो लडकी को उठाये हुए था, आगे आया और बोला—

"श्रीमान सरकारी सलाहकार जब इधर आ रहे थे तो रास्ते मे उनके पेट में ज़ोर का दद हो गया।"

सैनिक ने जब ऐसा कहा था, तो उसकी नीली आखें चमक रही थी।

इस उत्तर से सभी सन्तुष्ट हो गये।

मुकदमे की कारवाई शुरू हुई।

सनिक ने बेचारी लडकी को न्यायाधीशो की मेज़ के सामने खुरदरी-सी बेंच पर बिठा दिया। वह सिर लटकाये बठी थी। पहले मोटे ने पूछ ताछ शुरू की।

मगर अब उन्हें बहुत बडी मुश्किल का सामना करना पडा—सूओक एक भी सवाल का जवाब नही देना चाहती थी।

तो ऐसा ही सही! एक माटा खीझ उठा। 'तो एसा ही सही! जवाब नही देना चाहती, तो न दे। इसी को इसस हानि होगी हम इसे उतनी ही कडी सजा देगे!

सूम्रोक तो हिली डुली भी नही।

तीनो सनिक उसके म्रास पास बुत वन खडे थे।

'गवाहो को बुलाइये!' मोट ने हुक्म दिया।

गवाह सिफ एक ही था। उसे लाया गया। यह वहा प्रतिष्ठित प्राणिविज्ञ था चिडियाघर के जानवरा की देखभाल करनेवाला। उसने सारी रात तने पर ही बिताई थी। उसे म्रभी म्रभी नीचे उतारा गया था। वह उसी हालत मे यहा म्रा गया–फूलदार गाउन धारीदार पाजामा म्रौर रात की टोपी पहने हुए। उसकी टोपी का फुदना म्रात की भाति उसके पीछे-पीछे जमीन पर घसिटता चला म्रा रहा था।

सूम्रोक को बेंच पर बठी देखकर प्राणिविज्ञ डर से थरथर कापने लगा। उपस्थित लोगो ने उसे सहारा दिया।

'जो घटना घटी है, हमे कह सुनाइये।

प्राणिविज्ञ ने कहना शुरू किया। उमने बताया कि म वृक्ष पर चढा म्रौर वहा शाखाम्रो के बीच मुझे उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया दिखाई दी। पर चूकि मने कभी जीती जागती गुडिया नही देखी थी म्रौर इस बान की कल्पना तक नही की थी कि गुडिया रात के समय वक्ष पर चढ सकती है, इसलिये म बहुत डर गया म्रौर बेहोश हो गया।

"उसने हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को कसे म्राजाद कराया?'

"मुझ मालूम नही। मने न तो कुछ सुना म्रौर न देखा ही। मेरी बहोशी बहुत गहरी थी।"

म्ररी म्रो दुष्ट लडकी, तू हमे बतायेगी या नही कि तू ने हथियारसाज प्रोस्पेरो को कैसे म्राज़ाद किया?'

सूम्रोक ने कोई उत्तर न दिया।

इसे हिलाइये डुलाइये।'

'खूब म्रच्छी तरह से!' तीन मोटा ने म्रादेश दिया।

नीली म्राखो वाले सैनिक ने लडकी के कध पकडकर उसे झकझोरा। इतना ही नही, उसने उसके माथे पर जोर की चपत भी लगाई।

सूम्रोक म्रब भी मौन साधे रही।

मोटे तो गुस्से से फू फा करने लग। भत्सना करते हुए लोगा के रग बिरगे विगो वाले सिर हिलने लगे।

ऐसा लगता है कि हमे कुछ भी तफसीले मालूम नही हो सकेंगी, पहले मोटे ने कहा।

यह श द सुनकर प्राणिविज्ञ ने माथा ठाकते हुए कहा—
मैं जानता हू कि हमे क्या करना चाहिये!
हर किसी के कान खडे हो गये।
चिडियाघर मे तोतो का भी एक पिजरा है। वहा बहुत ही दुलभ और बढिया नसल के तोते ह। आप यह तो जानते ही ह कि तोते व्यक्ति के श दो को याद रख सकते ह, उन्हे दोहरा सकते ह। बहुत से तोता के कान बहुत तेज होते ह और याददाश्त बहुत गजब की म यह समझता हू कि उस रात को इस लडकी और हथियारसाज़ प्रोस्पेरो के बीच चिडियाघर मे जो बातचीत हुई तोता को वह सब याद है इसलिये म यह सुझाव देता हू कि मेरे अद्भुत तोतो मे से एक को यहा गवाह के रूप मे लाया जाये।
उपस्थित लोगो के अनुमोदन की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी।
प्राणिविज्ञ चिडियाघर की ओर गया और जल्द ही लौट आया। उसकी तजनी पर बडा सा और लम्बी लाल दाढीवाला बूढा सा तोता बठा था।
आपको उस समय का तो स्मरण होगा जब सूओक रात्रि को चिडियाघर मे घूमती रही थी। याद है न? उसे एक तोते पर स देह हुआ था। यह भी याद है न आपको कि कसे उस तोते ने सूओक की ओर देखा था और फिर मानो सोने का बहाना करते हुए वह कसे अपनी लम्बी लाल दाढी मे मुस्कराया था।
अब यही लाल दाढीवाला तोता प्राणिविज्ञ की उगली पर उसी तरह आराम से बठा था जसे कि तब पिजरे के रुपहले छड पर।
इस समय वह खुले तौर पर मुस्करा रहा था, इस बात से खुश होता हुआ कि बचारी सूओक का भडाफोड कर देगा।
प्राणिविज्ञ ने जमन भाषा मे तोते से बातचीत शुरू की। तोते को लडकी दिखाई गई।
तब उसने पख फडफडाये और वह चिल्ला उठा—
सूओक! सूओक!
उसकी आवाज़ उस पुराने फाटक की चरमराहट जसी थी जो हवा के कारण अपने जग लगे कब्जे पर हिलता डुलता है।
सभी लोग खमोश थे।
प्राणिविज्ञ खुशी से फूला नही समा रहा था।
तोते ने अपनी मुखबिरी जारी रखी। उसने सचमुच ही वह सब कह सुनाया जो उस रात सुना था। इसलिये अगर आप हथियारसाज प्रोस्पेरो के आज़ाद होने की कहानी जानना चाहते ह तो वह सब ध्यान से सुनियेगा जो तोता कहेगा।
ओह! यह सचमुच ही बहुत बढिया नसल का तोता था! सुन्दर लाल दाढी की तो

बात ही एक तरफ रही जो किसी भी जनरल की प्रतिष्ठा बढा सकती थी, उस तोते की असली खूबी यह थी कि वह इसान की कही हुई बातो को दोहराने की अद्भुत क्षमता रखता था।

तुम कौन हो?' उसने मर्दाना आवाज मे कहा।

इसके फौरन बाद लडकी की आवाज की नकल करते हुए उसने बारीक आवाज मे उत्तर दिया–

म सूओक हू।

'सूओक!"

मुझे तिबुल ने भेजा है। मै गुडिया नही जीती जागती लडकी हू। म तुम्हे आजाद कराने आई हू। तुमने मुझे चिडियाघर मे आते नही देखा?'

'नही। म शायद सो रहा था। आज वह पहली रात है जब मेरी आख लगी है।"

'मैं तुम्हे चिडियाघर मे ढूढती रही हू। मने यहा एक भयानक जन्तु देखा जो इसान की तरह बातचीत करता था। मैं समझी कि वह तुम ही हो। वह जन्तु मर गया।

'यह तूब था। तो क्या वह मर गया?"

'हा मर गया। म डरकर चीख उठी। तब सन्तरी भाग आये। म वक्ष पर जा चढी। मैं बेहद खुश हू कि तुम जिदा हो! म तुम्हे आजाद कराने आई हू।'

मगर मेरे पिजरे मे तो बहुत बडा ताला लगा हुआ है।'

"मेरे पास ताले की चाबी है।"

तोते ने जब यह अन्तिम वाक्य कहा तो सभी उपस्थित लोग आग बबूला हो उठे।

'ओह, दुष्ट लडकी!" मोटे चिल्ला उठे। "अब सारी बात समझ में आ गयी। उत्तराधिकारी टूट्टी के पास पिजरे की जो चाबी थी उसने वह चुरा ली और हथियारसाज को आजाद कर दिया। हथियारसाज ने अपनी जजीर तोड डाली चीते का पिजरा तोडकर उसे जजीर से बाध लिया ताकि अहाते मे से बिना रोक टोक जा सके।"

'ऐसा ही है!"

"ऐसा ही है!"

"एसा ही है!"

मगर सूओक चुप रही।

तोते ने मानो समथन करते हुए सिर हिलाया और तीन बार पख फडफडाये।

मुक़दमे की कारवाई खत्म हो गई। यह फसला सुनाया गया–

> 'बनावटी गुडिया ने उत्तराधिकारी टूट्टी को धोखा दिया। उसने सबसे बडे विद्रोही और तीन मोटो के सबसे बडे दुश्मन–हथियारसाज प्रोस्पेरो–को आजाद

किया। इसी के कारण बहुत बढिया चीता मारा गया। इसलिय इस धोखबाज लडकी का मौत की सजा दी जाती है। दरिंदा से इसके टुकडे करवाये जायें।

पाठकगण तनिक कल्पना करे मत्यु दण्ड की घोपणा होने पर भी सूम्रोक न हिली न डुली।

हाल म उपस्थित सभी लोग चिडियाघर की ओर चल दिये। पक्षियो की ची-ची और चहक तथा जानवरो की चीख चिंघाड ने इन लोगा का स्वागत किया। सबसे अधिक परेशान तो था प्राणिविज्ञ। ऐसा स्वाभाविक भी था—वह चिडियाघर की देखभाल जो करता था।

तीन मोटे सलाहकार कमचारी और अन्य दरबारी मच पर जा चढ। मच के चारो ओर लोहे का जगला लगा हुआ था।

वडी प्यारी-प्यारी धूप खिली हुई थी। आह, आकाश कैसा नीला नीला था। तोतो के पख कसे चमक रहे थे, बन्दर कसे कलाबाजिया लगा रहे थे और हरी हरी झलक देनेवाला हाथी कसे नाच रहा था।

बेचारी सूम्रोक। इन चीजो की ओर तो उसने आख तक उठाकर न देखा। वह तो सम्भवत सहमी-सहमी आखो से उस गन्दे से पिंजरे की ओर देख रही थी जहा कुछ-कुछ झुके हुए शेर इधर उधर दौड रहे थे। वे बर्रों से मिलते-जुलते थे कम से कम उनका रग तो ऐसा ही था—पीला-पीला और बादामी धारिया।

वे गुस्स से लोगो को देख रहे थे। जब तब उनमे से कोई अपना खून जसा लाल मुह खोलता जिसम से कच्चे मास की गध आती थी।

वेचारी सूम्रोक।

अलविदा सरकस, चौक, अगस्त, पिंजरे मे बन्द लोमडी प्यारे, हृष्ट-पुष्ट और साहसी तिबुल।

नीली आखो वाला सनिक लडकी को चिडियाघर के मध्य मे ले गया और उसे तपते तथा चमकत हुए सीसे पर लिटा दिया।

'मैं निवेदन करना चाहता हू, अचानक एक सलाहकार ने कहा। "आपने उत्तराधिकारी टूट्टी के बारे मे भी कुछ सोचा? अगर उसे यह मालूम हो गया कि उसकी गुडिया के शेरा से टुकडे करवाये गये ह तो वह रो रोकर जान दे देगा।'

"शी!" साथ बैठे हुए व्यक्ति ने उसे चुप रहने का सकेत करते हुए कहा। शी! उत्तराधिकारी टूट्टी को सुला दिया गया है वह तीन दिना तक या इससे भी ज्यादा वक्त तक गहरी नीद सोया रहेगा "

अब सभी लोगो की नजरे उस ददनाक गुलाबी चीज पर टिकी हुई था जा पिजरा के ोच पडी थी।

इसी समय जानवरो को सधानेवाला व्यक्ति अपना हटर सटकारता और पिस्तौल ामकाला हुआ आया। बडवालो ने एक धुन बजानी शुरू की। इस तरह सूओक आखिरी बार र्शको के सामने आई।

हुश! सधानेवाले ने कहा।

पिजरे का लोहे का दरवाजा चरमरा उठा। शेर बिना शोर किये और भारी कदम रखते हुए पिजरे से बाहर निकले।

मोटो ने ठहाका लगाया। सलाहकार खिलखिलाकर हसे और उन्होने अपने विग हिलाये। टर की आवाज सुनाई दी। तीना शर सूओक की ओर लपके।

सूओक निश्चल पडी थी और उसकी भूरी गतिहीन आखें आकाश को एकटक ताक रही थी। सभी लोग उठकर खडे हो गये। जनता की इस छोटी सी मित्र के शरा द्वारा टुकडे होते देखकर सभी लोग खशी से चिल्लाने को तयार थे

और शेर निकट आये। उन मे से एक ने अपना चौड माथेवाला सिर झुकाकर सूओक को सूघा दूसरे ने अपने बिल्ली जसे पजे से लडकी को छुआ। तीसरे न ता उसकी

ग्रोर ध्यान भी नही दिया पास से गुजर गया ग्रौर मच के सामने खडा होकर मोटो पर गरजने लगा।

तब सभी को यह बात स्पष्ट हो गई कि यह जीती जागती लडकी नही गुडिया थी फटे से फ्राक मे पुरानी गुडिया न किसी काम की न काज की।

सभी लोगो के दिल बठ गये। प्राणिविज्ञ ने तो परेशानी मे ग्रपनी ग्राधी जबान ही काट ली। जानवरो को सधानेवाले ने शरो को पिजरे मे वापिस भज दिया ग्रौर घृणा से बेजान गुडिया को ठोकर मारकर नीली ग्रौर सुनहरी डोरियो वाली ग्रपनी समारोही वर्दी उतारने चला गया।

सभी लोग पाच मिनट तक खामोश रहे।

यह खामोशी बहुत ही ग्रप्रत्याशित ढग से भग हुई। चिडियाघर के ऊपर नीले ग्राकाश मे तोप का एक गोला फटा।

मच पर खडे सभी दशक लकडी के फश पर झटपट लेट गये। सभी जानवर ग्रपनी पिछली टागो के बल खडे हो गये। फौरन बाद दूसरा गोला फटा। ग्राकाश मे सफद धुए का गोल गोल बादल छा गया।

'यह क्या माजरा है? यह क्या किस्सा है? यह क्या है? सभी लोग चीख उठे।

'जनता धावा बोल रही है!

"जनता के पास तोपें ह!

सनिक जनता के साथ मिल गये ह!!'

ग्रोह! ग्राह!! ग्रोह!!!'

पाक मे सभी ग्रोर शोर चीख पुकार ग्रौर गोलियो की ठाय-ठाय सुनाई देने लगी। जाहिर था कि विद्रोही पाक मे घुस ग्राये थे।

सभी लोग चिडियाघर के फाटको की ग्रोर भाग चले। मन्त्रियो ने मियानो से तलवारे निकाल ली। मोटे गला फाडकर चिल्ला रहे थे।

पाक मे उन्हे यह दृश्य दिखाई दिया।

सभी ग्रोर से लोग बढे ग्रा रहे थे। बहुत बडी सख्या थी उनकी। वे नगे सिर थे, कुछ के माथो से रक्त बह रहा था कुछ की जाकेटें तार-तार थी फिर भी उनके चेहरा पर खुशी नाच रही थी ये थे जनसाधारण जिनकी ग्राज विजय हुई थी। सनिक उनके साथ मिल गये थे। उनके टोपो पर लाल रिबन लगे हुए थे। मजदूर भी सशस्त्र थे। बादामी रग की पोशाके ग्रौर लकडी के जूते पहने हुए गरीबो की पूरी की पूरी सेना बढी ग्रा रही थी। उनके दबाव से वृक्ष झुके जा रहे थे, झाडिया टूट रही थी।

'हमारी जीत हुई है!' लोग चिल्ला रहे थे।

तीन मोटो ने समझ लिया कि ग्रब बचकर निकलना मुमकिन नही।

"नहा ! ऐसा नही हो सकता !' उनमे से एक चिल्लाया। 'सनिको इन्हें गोलियो से भून डालो !'

मगर सनिक तो गरीबा क ही साथी थे। तब सारी भीड के शोरशराबे को शान्त करती हुई एक आवाज़ गूज उठी। यह आवाज़ थी हथियारसाज़ प्रोस्पेरो की—

'अपन को हमारे हवाले कर दीजिये! जनता जीत गई है! धनियो और पेटुओ की सत्ता का अत हो गया! सारा नगर जनता के कब्जे में है। सभी मोटो को गिरफ्तार कर लिया गया है।

रग विरग कपडे पहने उत्तजित जनता की मजबूत दीवार ने तीन मोटो को अपने घेरे में ले लिया।

लोग लाल झडे, लाठिया और तलवारे हिला रहे थे, घूसे दिखा रहे थे। इसी समय एक गीत गूज उठा।

तिबुल अपना हरा लबादा पहने प्रोस्पेरो की बगल मे खडा था। उसके सिर पर चिथडा बधा हुआ था जिसपर खून के धब्बे नजर आ रहे थे।

'यह तो महज़ सपना है!" हाथो से आखें बन्द करते हुए एक मोटा चिल्लाया।

तिबुल और प्रोस्पेरो ने गाना शुरू किया। हजारो लोगो ने इस गीत मे अपना स्वर मिलाया। यह गीत छा गया विराट पाक के ऊपर, नहरो और पुलो पर। नगर के फाटको से महल की ओर बढे आते लोगो ने यह गीत सुना तो वे भी इसे गाने लगे। यह गीत समुद्री लहर की तरह बढा चला जा रहा था सडको पर लाघता जा रहा था फाटको को, लहरा रहा था नगर मे सभी राहो और रास्तो पर जहा मजदूर और गरीब बढ रहे थे महल की ओर। अब सारा नगर ही इसे गा रहा था। यह गीत था जनता का उस जनता का जिसने अपने उत्पीडका पर विजय पाई थी।

इस गीत को सुनकर केवल तीन मोट ही अपने मन्त्रियो समेत भेडो के रेवड की भाति सिमटते सिकुडते और एक दूसरे के साथ सटे जा रहे थे, ऐसी बात नही थी। इसे सुनकर नगर के सभी बाके छले, मोटे दूकानदार पेटू, ्यापारी, कुलीन महिलाए और गजी चादवाले जनरल डर और घबराहट से थर थर काप रहे थे। ऐसे लगता था मानो वे गीत के बोल नही तोप के गोले हा।

ये लोग अपने लिये छिपने की जगह ढूढते थे कानो मे उगलिया ठूसते थे और बढिया, कढे हुए सिरहानो मे अपने सिर छिपाते थे ताकि गीत के शब्द उन्हें सुनाई न दें।

आखिर हुआ यह कि धनिया की भारी भीड बन्दरगाह की ओर भाग चली। इन लोगो ने जहाजो में बैठकर उस देश से भाग जाना चाहा जहा वे अपना सभी कुछ खो बठे थे— अपनी सत्ता, धन दौलत और हरामखोरी की मजे की ज़िन्दगी। मगर बन्दरगाह पर उन्हें

जहाजिया ने घेर लिया। धनियो को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होने माफी मागी और कहा—

हमे मारिये-पीटिये नही! हम अब आप लोगो से अपने लिये काम नही करवायेंगे

मगर जनता ने उनपर एतबार नही किया। कारण कि धनी लोग गरीबो और मजदूरो को कई बार धोखा दे चुके थे।

सूरज शहर के ऊपर काफी ऊचा चमक रहा था। आकाश नीला-नीला था। ऐसे लगता था मानो लोग बहुत बडा और अभूतपूर्व पर्व मना रहे हो।

अब सभी कुछ जनता के हाथो मे था—शस्त्र भडार, बारेक महल अन्न भडार और दूकानें। सभी जगह सनिको का पहरा था जो अपने टोपो पर लाल रिबन लगाये थे।

चौकों मे लाल झण्डे लहरा रहे थे जिनपर ये शब्द अकित थे—

जो कुछ गरीबो के हाथो का बना हुआ है,
उसपर गरीबो का ही अधिकार है!

जय जनता!

कामचोर और पेटू मुर्दाबाद!

मगर तीन मोटो का क्या हुआ?

उन्हे महल के बडे हाल में लोगो को दिखाने के लिये लाया गया। हरे कफो वाली सलेटी रग की जाकेटें पहने मजदूर बन्दूकें लिये हुए पहरा दे रहे थे। हाल सूरज की किरणों से जगमगा रहा था। ओह, कितनी बडी भीड थी यहा लोगो की! मगर बहुत ही भिन्न थे ये लोग उन से जिनके सामने नन्ही सूओक ने उस दिन गाना गाया था जब उत्तराधिकारी टूट्टी से उसका परिचय हुआ था।

यहा वही दशक जमा थे, जो चौकों और बाजारो में सूओक का कायक्रम देखकर तालिया बजाते थे। अब उनके चेहरे खिले हुए थे उनपर खुशी झलक रही थी। लोग एक दूसरे के साथ सटे हुए थे रेल-पेल और हसी मजाक कर रहे थे। कुछेक की आखो मे तो खुशी के आसू भी थे।

महल के समारोही हालो मे ऐसे मेहमान कभी नहीं आये थे। इनके ऊपर सूरज भी कभी ऐसे तेजी से नही चमका था।

"शी!'

'चुप हो जाइये!'

चुप हो जाइये!"

ज़ीने के ऊपर कैदियो का जुलूस दिखाई दिया। तीन मोटो की नजरे झुकी हुई थी। सबसे आगे आगे था प्रोस्पेरो और उसके साथ साथ था तिबुल।

खुशी भरे शोर से हाल क स्तम्भ हिल रहे थे और तीन मोटो क कान फटे जा रहे थे। उन्हे ज़ीने म नीचे लाया गया ताकि लोग उन्हें निकट से देखकर इस बात की तसल्ली कर ले कि ये भयानक मोटे बन्दी बनाये जा चुके ह।

हा तो " स्तम्भ के पास खडे होकर प्रोस्पेरो ने कहा। उसका कद विराट स्तम्भ की आधी ऊचाई के बराबर था। उसका लाल बालो वाला सिर सूरज की रोशनी मे अगारो की भाति दहक रहा था। हा तो उसने कहा तो ये रहे तीन मोटे। ये जनता को लूटते-खसोटते थे। ये हमे खून पसीना एक करने के लिये मजबूर करते थे और हमसे सभी कुछ छीन लेते थे। आप देख रहे ह न कि कैसे उनपर चर्बी चढी हुई है! हमने इनपर विजय प्राप्त कर ली है। अब हम खुद अपने लिये काम करेंगे। हम सब समान होगे। हमारे बीच न धनी होगे न कामचोर और न ही पेटू। अब हमारी जिन्दगी खूब मजे मे गुजरेगी हम सभी के पास पेट भरकर खाने पीने को होगा और हम सभी धनी होगे। अगर हमे बुरे दिन भी देखने पडेंगे तो भी इस बात का सन्तोष होगा कि ऐसा कोई नही है जो मोटा होता जा रहा है जबकि हम भूखो मर रहे ह '

हुर्रा! हुर्रा! सभी लोग चिल्ला उठे।

तीन मोटो ने नाके सुडकी।

आज हमारी जीत का दिन है। देखिये तो, सूरज कसे चमक रहा है! सुनिये तो परिन्दे कसे चहचहा रहे ह! फूल वसे महक रहे है! इस दिन, इस घडी को सदा याद रखियेगा!

प्रोस्पेरो ने जब घडी ' कहा तो सभी लोगो का ध्यान उस तरफ गया जहा घडी लगी हुई थी।

दो स्तम्भो के बीचवाली जगह पर घडी लटकी हुई थी। यह बलूत की लकडी का बहुत बडा बक्सा था सुन्दर मीनाकारी और नक्काशी वाला। मध्य मे आकडो वाला काला-सा चक्र था।

क्या बजा है इस वक्त?" हाल में उपस्थित हर व्यक्ति ने सोचा।

और अचानक (हमारी इस पुस्तक मे यह अन्तिम अचानक" है) अचानक बलूत के बक्से का दरवाजा पूरी तरह खुल गया। वहा घडी के कल-पुर्जे नजर नही आये उन्हे निकाल दिया गया था। ताबे के स्प्रिगो और चक्रो की जगह इस छोटी-सी अलमारी मे गुलाबी-गुलाबी और चमकती-दमकती सूग्रोक बैठी थी।

सूग्रोक!" सभी लोग आश्चयचकित रह गये।

सूग्रोक!" बच्चे चिल्लाये।

' सूग्रोक! सूग्रोक! सूग्रोक!"

तालियो की गडगडाहट गूज उठी।

नीली आखो वाले सनिक ने बालिका को बक्से से बाहर निकाला। यह वही नीली आखो वाला सनिक था जो नृत्य शिक्षक एक दो-तीन के गत्ते के बक्से मे से उत्तराधिकारी टूट्टी की गुडिया उठा ले गया था। वही उसे महल मे लाया था, उसी ने धौल जमाकर सरकारी सलाहकार और उस सनिक को औंधे मुह जमीन पर गिरा दिया था जो जीती-जागती बेचारी सूग्रोक को पेटी से पकडकर उठाये लिये जा रहा था। उसी ने सूग्रोक को घडी के बक्से मे बन्द कर उसकी जगह बेजान और खस्ताहाल गुडिया रख दी थी। याद है न आपको कि मुकदमे की कार्रवाई के समय उसने कैसे इस गुडिया के कधे झकझोरे थे और फिर उसे दहाडते हुए शेरो के सामने फेंक दिया था?

लोग सूग्रोक को बारी-बारी से अपने हाथो में लेने लगे। ये वही लोग थे जो उसे ससार की सवश्रेष्ठ नतकी मानते थे जो अपनी जेब का आखिरी सिक्का तक उसकी दरी पर फेंक देते थे। वे अब उसे गोद मे उठाते थे सूग्रोक! —धीरे से उसका नाम लेते थे, उसे चूमते और गले से लगाते थे। इन लोगो की खुरदरी, फटी और कालिख तथा तारकोल पुती जाकेटो के नीचे धडक रहे थे उनके यातनाए सहनेवाले दिल, उदारता और कोमलता से ओत प्रोत हृदय।

सूग्रोक हसती, उनके अस्तव्यस्त बालो का थपथपाती और अपने नन्हे-नन्हे हाथो से उनके चेहरो का ताजा लहू पोछती बच्चो को गुदगुदाती तरह-तरह के मुह बनाती खुशी के आसू बहाती और अस्पष्ट-से शब्द बुदबुदाती।

इसे इधर बढा दीजिये, हथियारसाज़ ने कांपती हुई आवाज़ मे कहा। बहुत से लोगो को उसकी आखो मे आसू चमकते प्रतीत हुए। इसी ने मेरी जान बचायी थी।

'इधर बढ़ाइये इसे। इधर।' एक बडे पत्ते की भाति अपना हरा लबादा हिलाते हुए तिबुल चिल्लाया। यह मेरी नन्ही-सी सहेली है। इधर आओ, सूओक।

दूरी पर भीड को चीरते और मुस्कराते हुए जल्दी जल्दी बढे आ रहे थे नाटे कद के डाक्टर गास्पर

तीन मोटो को उसी पिजरे मे बन्द कर दिया गया जिसमे हथियारसाज़ प्रोस्पेरो को बन्द किया गया था।

उपसहार

एक वष बाद नगर मे हसी खुशी का राज था जशन मनाया जा रहा था। लोग तीन मोटो के जुए से मुक्ति पाने की पहली वषगाठ मना रहे थे।

सितारे के चौक मे बालको के लिये तमाशे की व्यवस्था की गयी।

सूश्रोक का नाम इश्तिहारो की शोभा बढा रहा था—

सूश्रोक!

सूश्रोक!

सूश्रोक!

हजारो बालक अपनी प्यारी अभिनेत्री के मच पर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पव के इस दिन वह मच पर आई, मगर अकेली ही नही। उसके साथ एक छोटा-सा लडका भी था बहुत कुछ उसी से मिलता-जुलता। फक सिफ इतना, कि उसके बाल सुनहरे थे।

यह उसका भाई और कुछ समय पहले तक उत्तराधिकारी टूट्टी था।

नगर ठहाको और गीतो से गूज रहा था, झडे फडफडा रहे थे, मालिनें अपनी झोलियो मे से पुष्प वर्षा कर रही थी, रग बिरगे परो के फुदनो से सजाये गये घोडे उछल कूद रहे थे, हिडोले घूम रहे थे और सितारे के चौक मे नन्हे मुन्ने दशक दम साधे तमाशा देख रहे थे।

तमाशा खत्म होने पर सूश्रोक और टूट्टी को फूलो से लाद दिया गया। बालको ने उन्हे घेर लिया।

सूश्रोक ने अपने नये फ्राक की जेब मे से एक तख्ती निकाली और उसपर लिखे कुछ शब्द बालको को पढकर सुनाये।

हमारे पाठको को इस तख्ती का ध्यान होगा। यह तख्ती एक भयानक रात को चिडियाघर के एक पिजरे में बन्द दम तोडते हुए उस रहस्यपूर्ण व्यक्ति ने सूश्रोक को दी थी जो भेडिये जैसा लगता था। उसपर यह लिखा हुआ था—

"तुम दो थे, बहन और भाई—सूश्रोक और टूट्टी।

जब तुम दोनो चार चार वष के हुए तो तीन मोटो के सनिक तुम्हे मा-बाप के घर से उठा लाये।

म हू तूब, एक वज्ञानिक। मुझे महल मे बुलाया गया। नन्ही सूश्रोक और टूट्टी को मेरे सामने लाया गया।

'तीन मोटो ने मुझसे कहा— इस बालिका को देख रहे हो न? हू-ब-हू ऐसी ही एक गुडिया बना दो।' म नही जानता था कि किसलिये उन्हें ऐसी गुडिया की जरूरत थी।

मने ऐसी ही गुडिया बना दी। म बहुत बडा वज्ञानिक था। मुझे ऐसी गुडिया बनाने का आदेश दिया गया था कि वह जीवित लडकी की भाति बढती जाये। सूओक की उम्र पाच वष की हो तो गुडिया की भी। सूओक बडी हो, प्यारी और उदास-सी लडकी बने और गुडिया भी। मैंने एसी ही गुडिया बना दी। तब तुम दोनो को अलग कर दिया गया। गुडिया के साथ टूट्टी महल मे ही रह गया और सूओक को बहुत बढिया नसल के लम्बी लाल दाढीवाले तोते के बदले एक चलते फिरते सरकस को सौंप दिया गया। तीन मोटो ने मुझे आदेश दिया – लडके का दिल निकालकर उसकी जगह लोहे का दिल लगा दा।' मंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। मंने कहा कि इसान को उसके इसानी दिल से वचित करना ठीक नही। किसी भी तरह का, लोहे बफ या सोने का दिल, इसान के साधारण और असली इसानी दिल की जगह नही ले सकता। मुझे पिजरे मे बद कर दिया गया और लडके से झूठमूठ यह कहा जाने लगा कि उसका दिल लोहे का है। वे चाहते थे कि लडका इस बात पर विश्वास करे और ज़ालिम तथा सगदिल बन जाये। म आठ वर्षों से जानवरो के बीच रह रहा हू। मेरे शरीर पर लम्बे लम्बे बाल उग आये ह और दात लम्बे लम्बे और पीले-पीले हो गये है। मगर म तुम लोगो को नही भूला। म तुमसे माफी चाहता हू। हम सभी तीन मोटो के कारण बदनसीब बने धनियो और पेटुओ के उत्पीडन के शिकार हुए। मुझे क्षमा कर देना टूट्टी जिसका गरीबो की भाषा मे अथ है – जुदाई'। मुझे क्षमा कर देना सूओक जिसका अर्थ है – जीवन भर के लिए

' 5)